Vol.25, Issue 12 | Annual Subscription ₹ 600

अक्टूबर 2026

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

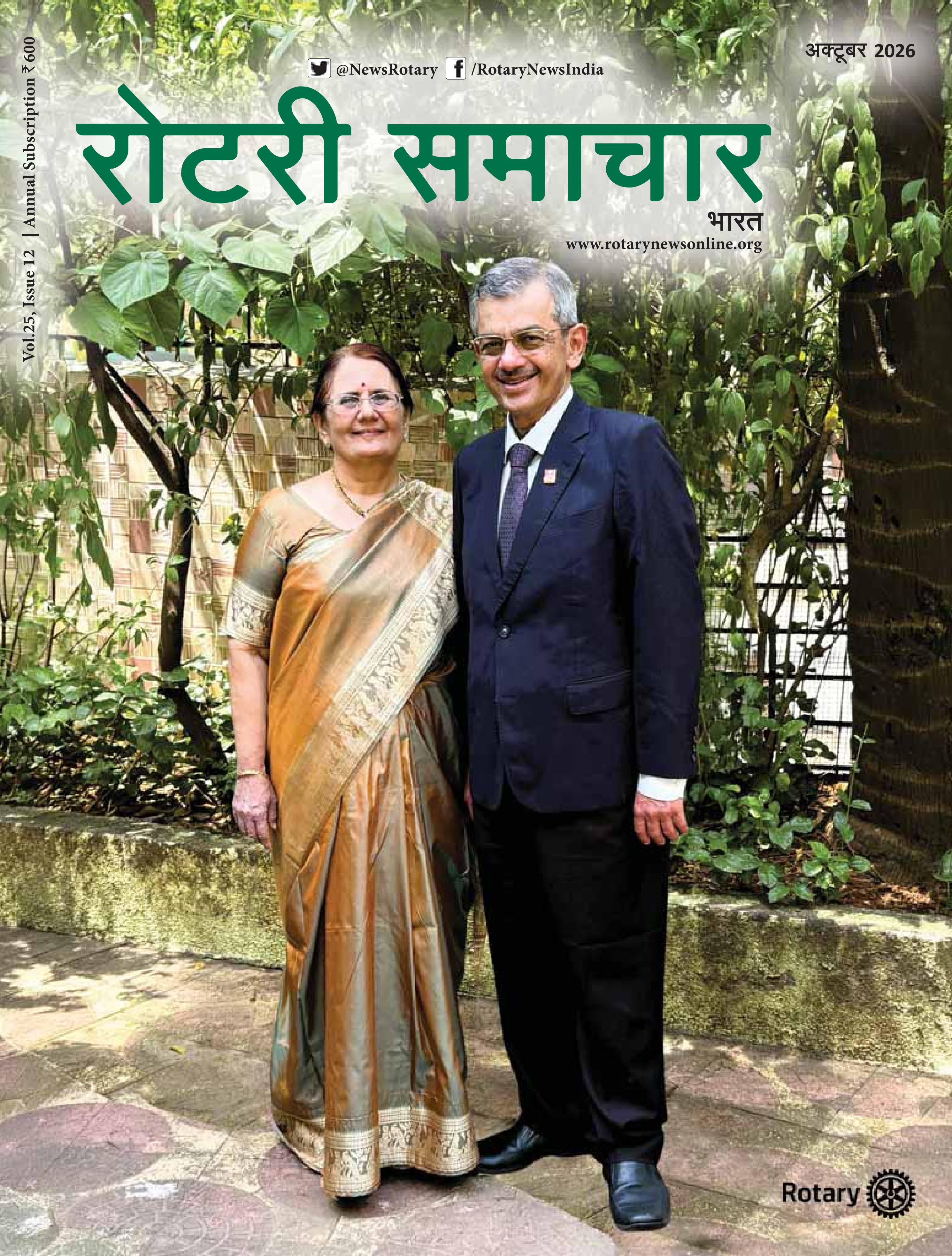

Rotary

ADVT.

Rotary District 3212
CREATE LASTING IMPACT
அறம்
Olayinka Hakeem Babalola
RI President 2026 - 2027
Rtn. AKS Er. Muruganandam M
Rotary International Director
2025 - 2027
ROTARY DISTRICT 3212
DISTRICT CONFERENCE
SANGAMITHRAM
2.0
January 29, 30 & 31, 2027
Hotel Kodai International, Kodaikanal
REGISTRATIONS OPEN!
Reserve Your Spot Today! Register online:
www.sangamithram2.com
Rtn. T.N. Arunachalam @ Nandhu
DISTRICT CONFERENCE CHAIRMAN
Rtn. Gandhi Krishnan
DISTRICT GOVERNOR
Rtn. P.A. Sivakumar Raja
SECRETARY
Rtn. U.S. Ashwin
CO - CHAIRMAN
For Registration Enquiries: Rtn. P.A. Ramasubramania Raja 94420 56999
A Sangamam of Friendship | Leadership | Entertainment

विषयसूची

36

नेपाल के रोटरेक्टर राहत कार्य में जुटे

12

रो ई अध्यक्ष पद एक रोमांचक अवसर

46

बाढ़ प्रभावित परिवारों तक पहुंची रोटरी

24

टीआरएफ के लिए मजेदार नीलामी

56

विशेष बच्चों के लिए रोटरी ओलंपियाड

30

इनके दिल बच्चों के लिए धड़कते हैं

महत्वपूर्ण सूचना

सदस्यता शुल्क में संशोधन

प्रिय पाठकों,

भारत सरकार द्वारा पत्रिकाओं के लिए डाक रियायत समाप्त किए जाने से प्रति डाक शुल्क ₹0.70 पैसे से बढ़कर ₹16 हो गया है। इसी कारण हमें वार्षिक सदस्यता शुल्क में संशोधन करने का निर्णय लेना पड़ा है।

नई वार्षिक सदस्यता दरें इस प्रकार हैं:

- प्रिंट संस्करण: ₹600 • ई-वर्ज़न: ₹360

संशोधित सदस्यता शुल्क 1 जुलाई 2026 से प्रभावी होगा। इसके अनुसार आपको चालान (इनवॉइस) भेजा जाएगा।

हम रोटेरियनों से ई-वर्ज़न अपनाने का भी आग्रह करते हैं। यह पर्यावरण-अनुकूल है तथा डाक विलंब के बिना समय पर उपलब्ध हो जाता है।

संपादक

Magazine

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

वास्तव में निःस्वार्थ सेवा!

सितंबर अंक में प्रकाशित आपकी चार पन्नों की स्टोरी *Mending Little Hearts* में बच्चों की हृदय सर्जरी के बारे में दिलचस्प जानकारी दी गई है। इसमें लाभार्थी बच्चों की कई तस्वीरें भी हैं।

यह एक शानदार और अनोखी पहल है। लेकिन मुझे यह बात खास तौर पर उल्लेखनीय लगी कि इस पूरे काम को अंजाम देने वाले बॉम्बे एयरपोर्ट क्लब के रोटेरियनों की एक भी तस्वीर इसमें नहीं है। क्लब को सलाम और आपको भी बधाई!

पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी

हमारे विचारार्थ भेजी गई परियोजना की रिपोर्ट और तस्वीरों में क्लब के किसी भी सदस्य की एक भी तस्वीर नहीं थी। वाकई, यह असामान्य था! हालांकि, पीआरआईपी बेनर्जी का यह पत्र मिलने के बाद मैंने क्लब से संपर्क किया और परियोजना के पीछे मुख्य प्रेरक शक्ति रहे क्लब के पूर्व अध्यक्ष नितिन मेहता से लाभार्थी के साथ उनकी एक तस्वीर मांगी। उन्होंने तस्वीर साझा की, जिसे अब यहां प्रकाशित किया जा रहा है!

संपादक

प्रेरणादायक फेलोशिप पर लेख

Rotary fellowship for healing पर प्रकाशित लेख के लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद। शिमला में आयोजित एक रोटरी कार्यक्रम में मेरी मुलाकात इस युवा दंपती से हुई थी, जहां उन्होंने अवचेतन मन की शक्ति का प्रदर्शन किया था। कार्यक्रम के बाद मैंने उन्हें अपनी मेज पर आमंत्रित किया और रोटरी फेलोशिप के बारे में विस्तार से बताया।

प्रगति सबलोक, हरसिमरन चौधरी, हरलीन कौर और मैंने मिलकर इस नई फेलोशिप को शुरू करने के लिए काम किया। यह लेख देखकर मुझे खुशी और गर्व हो रहा है। इसने हमारा उत्साह बढ़ाया है और निश्चित रूप से दुनिया भर में हिप्नोसिस और हीलिंग में रुचि रखने वाले रोटेरियनों को भी प्रेरित करेगा।

डॉ सुरेश कुमार सबलोक, रोटरी क्लब नाहन सिरमौर हिल्स - रो ई मंडल 3080

A Rotary fellowship for healing लेख काफी विचारोत्तेजक है। मन को स्वस्थ कर जीवन बदलने का अर्थ है पुराने भावनात्मक घावों से मुक्त होकर सोच में बदलाव लाना, जिससे रोजमर्रा की जिंदगी, फैसलों और खुशियों पर सकारात्मक असर पड़ता है।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद
रो ई मंडल 3150

A rush of adrenalin शीर्षक वाले संपादकीय पर प्रतिक्रिया देते हुए कहना चाहूंगा कि अच्छे भाव और निष्ठा से किया गया काम ही वांछित परिणाम दिलाता है। खिलाड़ियों और एथलीटों को पदक और ट्रॉफियां मिलती हैं, लेकिन रोटेरियन के लिए सेवा परियोजनाओं से मिलने वाली संतुष्टि ही सबसे बड़ा सम्मान और उपलब्धि है।

जैसा कि रो ई अध्यक्ष ने कहा है, हमें पिछले 5-7 वर्षों में अपने "सबसे अच्छे वर्ष" को पहचानना चाहिए और अपने प्रदर्शन से उसे बेहतर बनाने का प्रयास करना चाहिए। यही संतुष्टि हमारे लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है।

निरंजन कार
रोटरी क्लब भुवनेश्वर - रो ई मंडल 3262

सितंबर अंक में रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम का रोटरी के मूल मूल्यों पर संदेश सरल और प्रभावशाली है: फेलोशिप, विविधता और सत्यनिष्ठा सदस्यों की हैं। सेवा सदस्यों द्वारा है। नेतृत्व सदस्यों के लिए है। वे कहते हैं, मजबूत सदस्य मजबूत क्लब बनाते हैं। मजबूत क्लब मजबूत मंडल बनाते हैं। मजबूत मंडल एक मजबूत रोटरी का निर्माण करते हैं।

आर मुरली कृष्ण
रोटरी क्लब बरहामपुर - रो ई मंडल 3262

RIDs 3141, 3000 put India on top लेख पढ़कर खुशी हुई। इसमें दोनों मंडलों की उपलब्धियों, नेतृत्व, विकास और सेवा पहलों के जरिए रोटरी के प्रभाव को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। ये उपलब्धियां आईपीडीजी मनीष मोटवानी (रो ई मंडल 3141) और जे कार्तिक (रो ई मंडल 3000) के दूरदर्शी नेतृत्व, समर्पित रोटेरियनों और बदलाव लाने के साझा संकल्प का परिणाम हैं।

यू खलीफ अहमद, रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट रो ई मंडल 3000

अगस्त अंक में टीआरएफ ट्रस्टी चेयर जेनिफर जोन्स का संदेश पढ़ा। अपने पिता के साथ हुई दुखद लेकिन वास्तविक घटना के जरिए उन्होंने हमें स्वास्थ्य सेवाओं की जमीनी हकीकत का एहसास कराया है।

जैसा कि उन्होंने सही कहा है, विभिन्न देशों और समुदायों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता आज भी असमान है। आइए, समुदाय आधारित सहयोग के जरिए इस खाई को पाटने और वंचितों व सुविधासंपन्न लोगों के बीच की असमानता कम करने में अपना योगदान दें।

डी हरिश्चंद्र रामा
रोटरी क्लब अनंतपुरमु - रो ई मंडल 3160

मैं रो ई मंडल 3233 के टी. डी. वासु के विचारों से सहमत हूं कि आजकल क्लबों के भव्य इंस्टॉलेशन कार्यक्रम रोटरी के मूल सिद्धांतों को कमजोर कर रहे हैं। प्रोटोकॉल का पालन न होने से संगठन की गरिमा प्रभावित होती है। ऐसे भव्य आयोजनों पर क्लब का काफी धन खर्च होता है। समय आ गया है कि रो ई इसमें हस्तक्षेप करे और ऐसे खर्चीले आयोजनों पर रोक लगाने के साथ रोटरी के प्रोटोकॉल, सिद्धांतों और गरिमा को बनाए रखने के लिए कदम उठाए।

PELS/SELS में नए नेताओं को भी उचित प्रशिक्षण नहीं मिल रहा है। प्रशिक्षण की विषयवस्तु उन उम्मीदवारों के प्रचार-प्रसार में पीछे छूट जाती है, जो डीजी बनने की तैयारी कर रहे होते हैं। कई बार रो ई की प्रशिक्षण सामग्री का पूरी तरह उपयोग नहीं होता या मुश्किल से 10 प्रतिशत ही इस्तेमाल किया जाता है। प्रशिक्षण मंच का इस्तेमाल मुख्य रूप से मंडल नेताओं के प्रचार के लिए किया जाता है। उम्मीद है कि रो ई इसमें हस्तक्षेप कर व्यवस्था में सुधार के लिए कदम उठाएगा।

के नागेंद्र बाबू
रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ वेस्ट
रो ई मंडल 3233

रो ई निदेशक के पी नागेश ने अगस्त अंक के अपने संदेश में सही कहा है, यह सब क्लब से शुरू होता है। उन्होंने बिल्कुल सही कहा है, लोग हमेशा याद रखेंगे कि रोटरी ने उन्हें कैसा महसूस कराया।

हमें क्लबों और मंडलों में सतर्क रहना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि नकारात्मक व्यवहार या रवैये को शुरुआत में ही रोका जाए। रोटरी लर्निंग सेंटर ऐसे व्यवहार से निपटने के लिए जरूरी संसाधन उपलब्ध कराता है। जागरूकता के साथ इनका इस्तेमाल किया जाए तो रोटरी के इस सुंदर आंदोलन और संस्कृति को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।

रणवीर कुमार अग्रवाल
रोटरी क्लब मुरादाबाद मिड-टाउन
रो ई मंडल 3100

रोटरी से प्रेरित AC ड्रेस

1990 में GSE टीम के सदस्य के रूप में मुझे शिकागो के एक रोटेरियन से मिलने का अवसर मिला। उनकी मेहमाननवाजी से भी ज्यादा मुझे उनकी रचनात्मकता और कुछ नया करने की ललक ने प्रभावित किया। 80 साल की उम्र में वे अपने घर के पिछवाड़े में अकेले एक हेलिकॉप्टर बना रहे थे।

वह दृश्य मेरे मन में बस गया। करीब 40 साल बाद, *रोटरी न्यूज़* में कुछ लेख पढ़ते हुए, जिसकी संपादक रशीदा भगत हैं, वह पुरानी याद अचानक ताजा हो गई। मेरे मन में सवाल उठा, अगर 80 साल का एक रोटेरियन हेलिकॉप्टर बना सकता है, तो मैं 74 साल की उम्र में 40 साल से संजोए अपने एक सपने को क्यों नहीं साकार कर सकता?

मेरा सपना था एक ऐसी ड्रएसी ड्रेसफ तैयार करना, जो तेज गर्मी में बाहर काम करने वाले लोगों को राहत दे सके-किसानों, खेतिहर मजदूरों, औद्योगिक कामगारों, पुलिस और सेना के जवानों तथा उन तमाम लोगों को, जिन्हें भीषण गर्मी में काम करना पड़ता है।

कई प्रयोगों के बाद मैं कम लागत वाली एसी ड्रेस का एक प्रोटोटाइप तैयार करने में सफल रहा हूं। यह अभी शुरुआत भर है, लेकिन मेरे लिए इसका महत्व इससे कहीं बड़ा है। यह रोटरी से मिलने वाली उस प्रेरणा का उदाहरण है, जो हमें सपने देखने, नए प्रयोग करने और अपने विचारों को हकीकत में बदलने के लिए प्रेरित करती है-और अंततः समाज के लिए कुछ उपयोगी करने का अवसर देती है।

अशोक जिंदल, रोटरी क्लब नाभा ग्रेटर
रो ई मंडल 3090

कवर पर

रो ई अध्यक्ष-नामित भरत पंड्या और उनकी पत्नी माधवी।

चित्रः रशीदा भगत

बढ़ती रोटरी

क्या आपने पिछले दो वर्षों में अपने क्लब की सदस्य संख्या दोगुनी कर दी है? अगर हां, तो अपनी सफलता की कहानी हमारे साथ साझा करें। ईमेल करें: rushbhagat@gmail.com या rotarynewsmagazine@gmail.com

क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है? या यह आपके जंक फोल्डर में जा रही है?

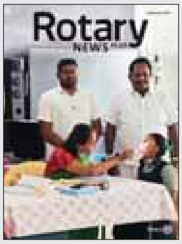

हम हर महीने आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन **ROTARY NEWS PLUS** निकालते हैं। यह प्रत्येक सदस्य को महीने के मध्य तक ई-मेल द्वारा भेजा जाता है।

रोटरी न्यूज़ प्लस हमारी वेबसाइट *www.rotarynewsonline.org* पर पढ़ें।

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp **पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।**

99.9 प्रतिशत 100 प्रतिशत नहीं है

चित्र: एंड्रयू एसीबो

अमिनु अहमद तुदुन-वाडा जानते हैं कि पोलियो किसी बच्चे से क्या छीन सकता है। बचपन में नाइजीरिया के कानो में उन्हें पोलियो हो गया था और उनके पैर लकवाग्रस्त हो गए। दशकों बाद, जब नाइजीरिया पोलियो उन्मूलन के लिए संघर्ष कर रहा था, अमिनु ने फैसला किया कि वह अपने अनुभव का इस्तेमाल दूसरे बच्चों को इस बीमारी से बचाने के लिए करेंगे।

उन्होंने पोलियो से उबर चुके लोगों को एकजुट किया और घर-घर जाकर माता-पिता से टीकाकरण के बारे में बात करना शुरू किया। ये लोग अपनी कहानियां सुनाते, परिवारों को पोलियो के दुष्प्रभाव दिखाते और माता-पिता से आग्रह करते कि वे अपने बच्चों को इस बीमारी से बचाने के लिए उनका टीकाकरण जरूर कराएं। 2021 तक अमिनु द्वारा स्थापित पोलियो सर्वाइवर्स ग्रुप के सदस्यों की संख्या 400 से अधिक हो गई थी। उनके प्रयासों ने नाइजीरिया को एक ऐसी उपलब्धि हासिल करने में मदद की, जो कभी असंभव लगती थी। 2020 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नाइजीरिया और पूरे अफ्रीकी क्षेत्र को वाइल्ड पोलियोवायरस से मुक्त घोषित किया।

जब भी हम पोलियो को खत्म करने की बात करते हैं, मैं अमिनु जैसे लोगों के बारे में सोचता हूं। पोलियो उन्मूलन का मतलब उन बच्चों से है जिन्हें कभी यह नहीं जानना पड़ेगा कि चलने की क्षमता खोना क्या होता है। इसका मतलब उन माता-पिता से है जिन्हें कभी अपने स्वस्थ बच्चे को ऐसी बीमारी से लकवाग्रस्त होते नहीं देखना पड़ेगा, जिसे टीकाकरण से रोका जा सकता है।

और इसका मतलब यह सुनिश्चित करना भी है कि जो लोग पोलियो को याद करते हैं, वे इस बीमारी को याद करने वाली आखिरी पीढ़ी हों। रोटरी चार दशक से भी अधिक समय से इस लड़ाई का हिस्सा है। अपने साझेदारों के साथ मिलकर हमने 3 बिलियन से अधिक बच्चों का टीकाकरण कराने में मदद की है, वैश्विक पोलियो उन्मूलन प्रयासों में 3 अरब डॉलर से अधिक का योगदान दिया है और वाइल्ड पोलियोवायरस के मामलों में 99.9 प्रतिशत की कमी लाने में मदद की है।

लेकिन 99.9 प्रतिशत, 100 प्रतिशत नहीं है।अफगानिस्तान और पाकिस्तान में वाइल्ड पोलियोवायरस अभी भी मौजूद है। जब तक यह कहीं भी फैल रहा है, तब तक हर जगह के बच्चे इसके खतरे में हैं। और किसी देश से वाइल्ड पोलियोवायरस खत्म होने के बाद भी हमें मजबूत टीकाकरण और निगरानी व्यवस्था बनाए रखनी होगी, ताकि वायरस दोबारा लौटने का रास्ता न खोज सके।

अमिनु अपने अनुभव को देखकर यह पूछ सकते थे, "मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ?" लेकिन उन्होंने एक अलग सवाल पूछा, मैं यह कैसे सुनिश्चित कर सकता हूं कि किसी और बच्चे के साथ ऐसा न हो? आज हमें इसी भावना की जरूरत है। किसी भी यात्रा का आखिरी पड़ाव सबसे कठिन हो सकता है। लेकिन हम यहां तक पहुंचने के लिए बहुत लंबा सफर तय कर चुके हैं, बहुत मेहनत कर चुके हैं और बहुत से बच्चों को सुरक्षित कर चुके हैं। इसलिए अब रुकना नहीं है।

आइए याद रखें कि हमने यह यात्रा क्यों शुरू की थी। पोलियो का अनुभव कर चुके लोगों की बातें सुनें। हम वह पीढ़ी बनें जो स्थायी प्रभाव पैदा करे और यह सुनिश्चित करे कि फिर कभी किसी को पोलियो का सामना न करना पड़े।

यिंका बाबालोला
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

ईमानदारी... और भ्रष्टाचार

रोई अध्यक्ष-निर्वाचित भारत पंड्या की प्रोफाइल लिखते समय मैंने उनके नेतृत्व के गुणों पर दो ऐसे वरिष्ठ रोटेरियन से संक्षिप्त टिप्पणी मांगी, जो उन्हें अच्छी तरह जानते हैं - पूर्व रो ई अध्यक्ष के आर रवींद्रन और पूर्व रो ई निदेशक राजू सुब्रमणियन। दोनों की टिप्पणियों में एक बात समान थी - उनकी ईमानदारी।

पीआरआईडी सुब्रमणियन ने कहा कि पंड्या में अपने नेतृत्व की ईमानदारी से दूसरों को प्रेरित करने की क्षमता है, जबकि पीआरआईपी रवींद्रन ने उन्हें अपने सिद्धांतों पर अडिग बताया और कहा, ''उन्होंने कभी पद पर बने रहने और काम करने के बीच भ्रम नहीं किया।''

यह बात वाकई ध्यान खींचती है। दो अलग-अलग लोगों की चार-चार पंक्तियों की टिप्पणियों में ईमानदारी रो ई के भावी शीर्ष नेता के प्रमुख गुण के रूप में उभरकर सामने आई! इससे पता चलता है कि किसी व्यक्ति, नेता, संस्था और यहां तक कि किसी देश की पहचान तय करने में ईमानदारी कितनी महत्वपूर्ण है। लेकिन अक्सर इन सभी क्षेत्रों में, जब लोग नैतिकता और ईमानदारी की खूब बातें करते हैं, तो वे बातें सिर्फ कहने भर की रह जाती हैं।

सैद्धांतिक रूप से और सार्वजनिक व निजी बहसों में दुनिया भर के लोग ईमानदारी को काफी महत्व देते हैं। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की ओर से हर साल जारी किया जाने वाला करप्शन परसेप्शंस इंडेक्स (CPI) दुनिया भर में काफी ध्यान आकर्षित करता है। यह सूचकांक बताता है कि किन देशों में सार्वजनिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार की धारणा कम है और किन देशों को भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए और प्रयास करने की जरूरत है।

दुख की बात है कि भारत इस सूची में अब भी निचले हिस्से में है, जबकि डेनमार्क, फिनलैंड और सिंगापुर जैसे देश शीर्ष पर हैं। 2025 के CPI में 182 देशों और क्षेत्रों को शामिल किया गया था और भारत 91वें स्थान पर था। डेनमार्क 89 के स्कोर के साथ पहले स्थान पर था, उसके बाद फिनलैंड और सिंगापुर।

किसी देश की ईमानदारी के सूचकांक को बेहतर बनाने के लिए लंबे समय तक बड़े और कठिन प्रयास की जरूरत होती है। लेकिन हमेशा की तरह, बदलाव की शुरुआत घर से ही होती है। ईमानदार और सच्चे लोग, जो भ्रष्ट आचरण से खुद को दूर रखते हैं, शायद बहुत बड़े कारोबारी साम्राज्य खड़े न कर पाएं, लेकिन रात को चैन से सो जरूर सकते हैं।

लेकिन सिर्फ खुद ईमानदार और सिद्धांतवादी होना और अपने आसपास हो रही धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार से आंखें मूंद लेना काफी नहीं है। सौभाग्य से भारत में ऐसी सरकारों को सत्ता से बाहर करने की परंपरा रही है, जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हों।

लेकिन हर पांच साल में डाला जाने वाला हमारा एक वोट, भले ही बेहद महत्वपूर्ण हो, पर्याप्त नहीं है। हमें अपने आसपास हो रहे अन्याय, बेईमानी और भ्रष्ट आचरण को लगातार पहचानना और उसके खिलाफ आवाज उठाना होगा।

अगर हमारी Gen Z अपनी शिक्षा व्यवस्था में सख्त सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए सड़कों पर उतर सकती है - जो उनके भविष्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण है - तो निश्चित रूप से पुरानी पीढ़ी भी अपनी आंखों पर बंधी पट्टी हटा सकती है, आंखें खोल सकती है और न्याय व सचाई के लिए आवाज उठा सकती है।

सिर्फ फोर-वे टेस्ट के शब्द दोहराना काफी नहीं है... उन शब्दों को समझना, अपने भीतर उतारना और अपने व्यवहार में लागू करना जरूरी है। ताकि भविष्य में जब हम *जय हिंद* कहें, तो ये शब्द सिर्फ एक खोखला नारा न रह जाएं, बल्कि उनका असली अर्थ और भावना हमारी सीमाओं से कहीं आगे तक गूंजे।

रशीदा भगत

ADVT.

SHIKHAR
TRAVELS
ROTARIAN
Your Trusted Travel Partner
Shikhar Travels (India) Pvt Ltd
Our Service:
1
AIR TICKETING
2
LEISURE HOLIDAYS
3
CONFERENCE & EVENT
4
Across Worldwide
ADVENTURE TOURS
5
Char Dham to Kailash
PILGRIMAGE TOURS
6
CORPORATE TRAVEL
Capt. Swadesh Kumar
Past Assistant Governor, RI District 3011
Rotary Club of Delhi South Metropolitan.
+91 98100 24642
swadesh@shikhar.com
SCAN HERE
+91 9717891151
Call us for personel assistance
tours@shikhar.com
Email us for your travel needs

निदेशक का संदेश

आगे बढ़ें, बड़ा बदलाव लाएं

अक्टूबर के साथ रोटरी वर्ष की दूसरी तिमाही की शुरुआत हो रही है। पहले तीन महीनों में देशभर के रोटरी क्लबों ने योजनाओं को जमीन पर उतारा, लोगों को जोड़ा और ऐसे प्रोजेक्ट शुरू किए जो बदलाव ला रहे हैं। अब अगले चरण में प्रवेश करते हुए कुछ पल रुककर यह देखने का समय है कि हमने क्या शुरू किया है और खुद से पूछने का भी-हम और क्या कर सकते हैं?

अक्टूबर रोटरी का आर्थिक और सामुदायिक विकास माह है। मेरे लिए यह क्षेत्र हमारे काम के एक बुनियादी पहलू को सामने लाता है। जब हम किसी व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनने में मदद करते हैं, किसी युवा के लिए अवसर पैदा करते हैं, किसी समुदाय को मजबूत करते हैं या किसी परिवार को बेहतर भविष्य की ओर बढ़ने में सक्षम बनाते हैं, तो उसका असर अक्सर उस प्रोजेक्ट से कहीं आगे तक जाता है।

रोटरी के सबसे सार्थक प्रोजेक्ट वे हैं, जो उद्घाटन समारोह खत्म होने के बाद भी लंबे समय तक लोगों के जीवन में बदलाव लाते रहते हैं। उनके पूरे प्रभाव को शायद कभी मापा भी न जा सके। कोई प्रोजेक्ट उसे शुरू करने वालों से कहीं आगे तक जीवित रह सकता है और वर्षों तक लोगों के जीवन को छू सकता है। हमें इसी स्थायी प्रभाव के लिए प्रयास करना चाहिए।

भारत में रोटरी मजबूत है। हमारे क्लबों ने दिखाया है कि जब रोटेरियन एक उद्देश्य के साथ साथ आते हैं, तो कितना कुछ हासिल किया जा सकता है। लेकिन हमारा लक्ष्य सिर्फ अपने समुदाय या देश तक सीमित नहीं होना चाहिए। आइए, भारत में रोटरी के योगदान को पूरी रोटरी दुनिया में अधिक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण बनाएं।

इसके लिए हमें मजबूत और सक्रिय क्लबों की जरूरत है। और यहीं से बात आती है-सदस्यता की।

सदस्यता बढ़ाने का मतलब सिर्फ नए सदस्यों को जोड़ना नहीं है। इसकी शुरुआत उन सदस्यों को जोड़े रखने से होती है जो हमारे साथ पहले से हैं। जब क्लब सक्रिय और समावेशी हों, अपने समुदाय की जरूरतों से जुड़े हों, सदस्यों को सार्थक सेवा के अवसर दें और अच्छी कार्यप्रणाली को क्लब संस्कृति का हिस्सा बनाएं, तो लोगों के पास रोटरी से जुड़े रहने के और भी कारण होते हैं। मजबूत क्लब स्वाभाविक रूप से सदस्यता बढ़ाने का माहौल तैयार करते हैं।

आगे बढ़ते हुए हमें अपने युवाओं को भी केंद्र में रखना होगा। देश का भविष्य युवा है और रोटरी का भविष्य भी युवा होना चाहिए। इंटरेक्ट और रोटरेक्ट हमें युवाओं को रोटरी के मूल्यों और सेवा की भावना से जोड़ने का अवसर देते हैं। आइए, इस रिश्ते को और मजबूत बनाएं और अगली पीढ़ी के लिए ऐसा स्वाभाविक रास्ता तैयार करें, जो उन्हें आगे चलकर रोटेरियन बनने के लिए प्रेरित करे।

पहली तिमाही अब पीछे छूट चुकी है। आगे का रास्ता अवसरों से भरा है। आइए, जो शुरू किया है उसे और आगे बढ़ाएं। अपनी सेवा में नई ऊर्जा, अपने क्लबों में नया उद्देश्य और रोटरी में अपने सामूहिक योगदान के लिए बड़ी महत्वाकांक्षा लेकर आगे बढ़ें।

बहुत कुछ करना बाकी है।

आइए, साथ मिलकर आगे बढ़ें।

के पी नागेश
रो ई निदेशक, 2025-27

2026
कन्वेंशन

युवा नेता मंच पर

रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में अगली पीढ़ी के वैश्विक और सामुदायिक नेताओं से जुड़ें। रोटरी यूथ एक्सचेंज प्रीकांफ्रेंस से लेकर रोटरेक्टरों और युवा रोटेरियनों द्वारा आयोजित ब्रेकआउट सत्रों तक, यह कांफ्रेंस विभिन्न पीढ़ियों के बीच विचारों के आदान-प्रदान का एक मंच है। 26-30 जून को बार्सिलोना में हमारे साथ जुड़ें।

अभी पंजीकरण करें: convention.rotary.org

पंजीकरण 17 सितंबर से खुले हैं।

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981 वैद्यनाथन के
RID 2982 सेंथिलकुमार सी
RID 3000 आर बी एस मणि
RID 3011 अजीत जालान
RID 3012 अमित गुप्ता
RID 3020 श्रीराम गुट्टिकोंडा
RID 3030 राजेश वी पाटिल
RID 3040 संस्कार कोठारी
RID 3053 बृज मोहन अग्रवाल
RID 3055 नैमिष एन रवानी
RID 3056 अरुण बगड़िया
RID 3060 निलेश आर शाह
RID 3070 अनिल कुमार सिंघल
RID 3080 रीता कालरा
RID 3090 अमित कुमार
RID 3100 पायल गौर
RID 3110 जसबीर सिंह भाटिया
RID 3120 पूनम गुलाटी
RID 3131 नितिन एस धमाले
RID 3132 जयेश आर पटेल
RID 3141 राजन दुआ
RID 3142 निलेश वी जावंत
RID 3150 उदय सुधीर पिलानी
RID 3160 केशव रेड्डी पी
RID 3170 लेनी डा कोस्टा
RID 3181 सतीश बोलार
RID 3182 बी एम भट्ट
RID 3191 अनिल गुप्ता
RID 3192 रविशंकर डाकोजू
RID 3203 के भूपति
RID 3204 एम वी मोहनदास मेनन
RID 3205 जोशी चाको
RID 3206 आर एस मारुति
RID 3211 के जी नायर
RID 3212 गांधी कृष्णन
RID 3231 टी एस रविकुमार
RID 3233 श्रीराम दुव्वुरी
RID 3234 सुरेश डी जैन
RID 3240 असीम कांती ए
RID 3250 अनु नारंग
RID 3261 आलम एस रूपरा
RID 3262 अनिल कुमार सामल
RID 3291 तपस भट्टाचार्य

यह पत्रिका **पी टी प्रभाकर** द्वारा दुगर टावर्स, तीसरी मंझिल, 34, मार्शल्स रोड, एग्मोर, चेन्नई 600 008 से **रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट** की ओर से प्रकाशित की जाती है, इसका संपादन **रशीदा भगत** करती हैं और इसे **रासी ग्राफिक्स** द्वारा 40 पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014, भारत में प्रिंट किया जाता है।

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

के पी नागेश RID 3191
रो ई निदेशक और अध्यक्ष
रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट

एम मुरुगानंदम RID 3000
रो ई उपाध्यक्ष और निदेशक

डॉ भरत पंड्या RID 3141
रो ई अध्यक्ष-नामित

ए एस वेंकटेश RID 3234
TRF ट्रस्टी

राजेंद्र के साबू RID 3080
कल्याण बेनर्जी RID 3060
शेखर मेहता RID 3291
अशोक महाजन RID 3141
पी टी प्रभाकर RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई RID 3060
सी भास्कर RID 3000
कमल संघवी RID 3250
डॉ महेश कोटबागी RID 3131
राजु सुब्रमण्यन RID 3141
अनिरुद्धा रॉयचौधरी RID 3291
गुरजीत सिंह सेखों RID 3070
गुलाम ए वाहनवती RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2026-27)

पायल गौर RID 3100
गवर्नर्स काउंसिल की अध्यक्ष

डॉ लेनी डा कोस्टा RID 3170
गवर्नर्स काउंसिल के उपाध्यक्ष

आर सुब्रमणि RID 3000
गवर्नर्स काउंसिल के सचिव

अजीत जालान RID 3011
गवर्नर्स काउंसिल के कोषाध्यक्ष

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

चट्टान की तरह

चट्टान की तरह अडिग रहना रोटरी की एक ऐसी ताकत है, जो खामोशी से अपना काम करती है। इस वर्ष दुनिया में बनी अस्थिर परिस्थितियों ने हमें फिर याद दिलाया है कि यह ताकत कितनी महत्वपूर्ण है।

परिवारों को विस्थापन का सामना करना पड़ रहा है, समुदाय जलवायु से जुड़ी आपदाओं से जूझ रहे हैं और मानवीय सहायता की जरूरतें हमारे आसपास और दुनिया के उन हिस्सों में भी पैदा हो रही हैं, जहां हम सेवा करते हैं। ये परिस्थितियां हमें भी प्रभावित करती हैं। फिर भी, दुनिया में बदलाव के बीच रोटरी की प्रतिक्रिया स्थिर, संवेदनशील और प्रभावी बनी हुई है। हम अनिश्चितता से मुंह नहीं मोड़ते, बल्कि उद्देश्य और संकल्प के साथ उसका सामना करते हैं।

द रोटरी फाउंडेशन अच्छे समय के लिए नहीं बना है। पिछले एक दशक में हमने अपने काम करने के तरीके को और मजबूत किया है-हर परियोजना में टिकाऊपन को शामिल किया, साझेदारियों का विस्तार किया और प्रमाण-आधारित समाधानों को अपनाया। इस बदलाव ने हमें अधिक मजबूत और समुदाय-केंद्रित बनाया है।

इसीलिए हमारा व्यापक लक्ष्य-एनुअल फंड, एंडोमेंट फंड और पोलियोप्लस फंड के जरिए 500 मिलियन डॉलर जुटाना-न सिर्फ महत्वाकांक्षी है, बल्कि हासिल किया जा सकने वाला भी है। हम पहले भी यह लक्ष्य हासिल कर चुके हैं और अब फिर से गति बन रही है।

जब दुनिया का ध्यान एक संकट से दूसरे संकट की ओर जाता रहता है, रोटरी अपनी जगह कायम रहती है। हम ऐसे साझेदारों को एक साथ लाते हैं, जो शायद कभी एक-दूसरे के साथ काम न करते। दशकों से बनाए गए भरोसे के रिश्तों और मजबूत नेटवर्क के कारण हम जरूरत पड़ने पर तेजी से संसाधन जुटा सकते हैं। और हम समुदायों को केवल एक बार की मदद से नहीं, बल्कि निरंतर मौजूदगी और साझा प्रतिबद्धता के जरिए मजबूत करते हैं।

पोलियो उन्मूलन के हमारे प्रयासों में यह प्रतिबद्धता सबसे स्पष्ट दिखाई देती है। पिछले महीने मैंने आपसे इस ऐतिहासिक अभियान में अपने क्लब की भूमिका पर विचार करने को कहा था और आपमें से कई लोगों ने नए उत्साह और उदारता के साथ इसका जवाब दिया।

रोटरी के इस अभियान की शुरुआत के बाद से पोलियो के मामलों में 99 प्रतिशत से अधिक की कमी आई है। यह उन स्वास्थ्यकर्मियों, स्वयंसेवकों और सदस्यों के समर्पण का प्रमाण है, जिन्होंने युद्धों, सीमा बंदियों और हर तरह की मुश्किलों के बीच बच्चों का टीकाकरण जारी रखा। उन्हें नहीं पता था कि इस कहानी का अंत क्या होगा। उन्हें सिर्फ यह पता था कि वे कौन हैं-और वे आगे बढ़ते रहे।

आज हमारे लिए यही प्रेरणा है। जब परिस्थितियां अस्थिर लगती हैं, तब रोटरी एक मजबूत आधार बनती है। जब योजनाएं बदलती हैं, हम वह साझेदार बनते हैं जो जरूरत के मुताबिक सामने आता है। जब आगे का रास्ता स्पष्ट नहीं होता, तो हमारी आत्मशक्ति ही हमारी दिशा तय करती है। जब तक आप यह पढ़ रहे होंगे, मैं ऐसी जगह पर रहूंगा, जिसने मेरी अपनी दृढ़ता की परीक्षा ली है। मैं इसकी पूरी कहानी ऑनलाइन साझा करूंगा-और यह ऐसी कहानी है, जिसे आप जरूर पढ़ना चाहेंगे।

आइए, हम ऐसी संस्था बने रहें, जिस पर दुनिया भरोसा कर सके। हो सकता है कि हमें हमेशा यह पता न हो कि हर चुनौती का समाधान कैसे निकलेगा। लेकिन हमें यह पता है कि हम कौन हैं। और किसी भी शुरुआत के लिए हमारे लिए हमेशा यही काफी रहा है।

जेनिफर जोन्स
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

मैं रो ई अध्यक्ष पद को एक रोमांचक अवसर मानता हूँ: भरत पंड्या

रशीदा भगत

रो ई अध्यक्ष-नामित डॉ भरत पंड्या

1989 में, महज 30 वर्ष की उम्र में, युवा सर्जन भारत पंड्या रोटरी से जुड़े – वह भी, जैसा कि वे खुद कहते हैं, "संयोग से।" दरअसल, उनके पिता के मरीज जे पी सक्सेना बोरीवली में एक नया रोटरी क्लब शुरू कर रहे थे। उन्होंने पंड्या को क्लब से जुड़ने का न्योता दिया। उस समय पंड्या ने अभी-अभी सर्जरी की अपनी प्रैक्टिस शुरू की थी और रोटरी की जिम्मेदारी लेने को लेकर वे कुछ हिचकिचा रहे थे। लेकिन सक्सेना ने उन्हें मना लिया। इस तरह भारत पंड्या रोटरी क्लब बोरीवली के चार्टर सदस्य बने। जल्द ही उन्हें क्लब अध्यक्ष की जिम्मेदारी भी सौंप दी गई। एक बार जिम्मेदारी स्वीकार कर ली, तो उन्होंने पूरी लगन से काम किया। उनके कार्यकाल में कई उल्लेखनीय प्रोजेक्ट हुए, 19 नए सदस्य क्लब से जुड़े और 12 सदस्य पॉल हैरिस फेलो बने – जो उस दौर में रोटरी के लिए बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी।

अध्यक्ष के रूप में अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद पंड्या को महसूस हुआ कि "रोटरी मेरे लिए अपने सीमित दायरे से बाहर निकलकर दुनिया को और व्यापक नजरिए से देखने का माध्यम बन रही है।" मैं मजाक में कहती हूँ कि 2028 में, जब वे रो ई अध्यक्ष का पद संभालेंगे, तो उनके ये क्षितिज पूरी दुनिया तक फैल जाएंगे। हमारी बातचीत मुंबई स्थित उनके अपार्टमेंट में हो रही है। इसी इमारत में पंड्या सर्जिकल एंड मैटरनिटी हॉस्पिटल भी है, जहां उनकी पत्नी माधवी स्त्रीरोग विशेषज्ञ हैं। शांत और सौम्य स्वभाव के पंड्या मुस्कुराते हैं और कहते हैं "37 साल पहले जब मैं रोटरी से जुड़ा था, तब मैंने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन मुझे पूरी दुनिया को अपना क्षितिज बनाने का अवसर मिलेगा।"

तो क्या वे इसे एक अवसर मानते हैं या चुनौती – और क्या यह चुनौती कुछ हद तक भारी-भरकम भी लगती है? वे कहते हैं, "मैं इसे एक रोमांचक अवसर मानता हूँ। संयुक्त राष्ट्र में शामिल देशों से भी अधिक देशों में रोटरी की पहुंच, मौजूदगी और व्यापकता को देखते हुए, इस जिम्मेदारी का भार महसूस होता है। लेकिन मैं इसे चुनौतीपूर्ण या डराने वाला नहीं कहूंगा। मेरे लिए सही शब्द है – रोमांचक।"

वे इस जिम्मेदारी को लेकर उत्साहित हैं, क्योंकि यह उन्हें जमीनी स्तर पर काम कर रहे अधिक से अधिक रोटेरियन से मिलने-बातचीत करने और यह समझने का अवसर देगी कि "दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में रोटरी किस तरह काम करती है। मैं उन लोगों से मिलने, उनके अलग-अलग नजरिए सुनने और यह देखने को लेकर उत्साहित हूं कि हम मिलकर क्या हासिल कर सकते हैं। और मुझे लगता है कि मेरी भूमिका हर सवाल का जवाब

रो ई अध्यक्ष-नामित पंड्या अपनी पत्नी माधवी, बेटियों डॉ निधि और डॉ शाश्मी, दामाद पार्थ भरत और पोती धृति के साथ।

जानने की नहीं है। मेरी भूमिका है - सुनना, सीखना, लोगों को साथ लाना और रोटरी को एक स्पष्ट दिशा देना। उम्मीद है कि हम सब मिलकर रोटरी को थोड़ा और आगे ले जा सकेंगे।"

जब उनसे पूछा गया कि रोटरी में सबसे ज्यादा अहमियत किसकी है - सदस्यता की, प्रोजेक्ट्स की या किसी और चीज की - तो उनका जवाब स्पष्ट था, "हर चीज के केंद्र में सदस्यता है। हमारे पास सदस्य हैं, तो कुछ भी संभव है। सदस्य नहीं हैं, तो बहुत कुछ मुश्किल हो जाता है। मैं दो चीजों पर खास ध्यान देना चाहूंगा - रोटरी को अधिक सदस्य-केंद्रित बनाना और उसे सदस्यों के लिए अधिक सुलभ, प्रासंगिक, सहभागितापूर्ण और सबसे बढ़कर, आनंददायक बनाना। अगर हम अपने सदस्यों का अच्छी तरह ख्याल रखें, उन्हें क्लब का अच्छा अनुभव दें और सार्थक काम करने के अवसर दें, तो सदस्य खुद रोटरी की वृद्धि का ख्याल रखेंगे। सबसे ज्यादा सदस्य पहले तीन वर्षों में रोटरी छोड़ते हैं। और इनमें भी शुरुआती तीन महीने बेहद अहम होते हैं, क्योंकि पहली छाप अक्सर आखिरी छाप भी बन जाती है।"

पंड्या का सुझाव है कि क्लबों को नए सदस्यों का ठीक से परिचय और स्वागत करना चाहिए, पहले तीन महीनों में ही उनकी रुचि के अनुसार उन्हें क्लब में कोई सार्थक जिम्मेदारी देनी चाहिए, रोटरी के बारे में पर्याप्त जानकारी देनी चाहिए और उनमें क्लब का हिस्सा होने का भाव पैदा करना चाहिए। अक्सर हम नए सदस्यों को रोटरी से जोड़ तो लेते हैं, लेकिन फिर उन्हें अपने हाल पर छोड़ देते हैं। हमें नए सदस्यों पर काम करना होगा उन्हें समय देना होगा, उन्हें आगे बढ़ाना होगा।

अगर रोटरी को अगले 30-50 वर्षों तक जीवंत, प्रासंगिक और प्रभावी बनाए रखना है, तो युवाओं को जोड़ना होगा। आज की युवा पीढ़ी किसी मकसद और सार्थक काम की तलाश में है।

उनकी कुछ पसंदीदा चीजें

संगीत: मुझे पुराने हिंदी गाने पसंद हैं - बहुत पुराने नहीं, बल्कि कुछ पुराने और समकालीन गानों का मेल। पश्चिमी संगीत भी सुनता हूं और ABBA आज भी मेरा पसंदीदा है!

पढ़ना: पहले खूब पढ़ता था और अब भी पढ़ता हूं, लेकिन जितना पढ़ना चाहता हूं, उतना समय नहीं निकाल पाता। उम्मीद है, अध्यक्ष पद का कार्यकाल पूरा होने के बाद पढ़ने के लिए थोड़ा ज्यादा वक्त मिलेगा। मेरे पसंदीदा लेखकों में पी जी वुडहाउस शामिल हैं। मनोरंजन के लिए जेफ्री आर्चर के उपन्यास भी खूब पढ़े हैं। हाल में मैंने माइकल शेल्ड्रिक की From Ideas to Impact पढ़ी।

सोशल मीडिया: व्हाट्सऐप और लिंक्डइन पर हूं, लेकिन सोशल मीडिया पर थोड़ा और सक्रिय होने की जरूरत है।

खाना: मैं खाने-पीने का बहुत शौकीन नहीं हूं, लेकिन भारतीय शाकाहारी खाना पसंद है। इतालवी और चीनी व्यंजन भी अच्छे लगते हैं।

खाना बनाना: मेरी पाक-कला बस सैंडविच बनाने और चाय-कॉफी तक सीमित है। लेकिन इवान्स्टन में जब माधवी साथ नहीं होंगी, तब काम चलाने लायक कुछ और चीजें बनाना वह मुझे सिखा देंगी!

पसंदीदा छुट्टियों की जगह: न्यूज़ीलैंड। वहां की प्राकृतिक खूबसूरती और साफ हवा मुझे बहुत पसंद है। वहां की हवा इतनी साफ और ताजी लगती है कि जैसे उसे महसूस ही नहीं, चखा भी जा सकता है!

फिटनेस: पहले ट्रेडमिल पर खूब चलता था, लेकिन कोविड के बाद से ट्रेडमिल छोड़कर पैदल चलना ज्यादा पसंद है। अब रोजाना कम-से-कम 12,000 कदम चलने की कोशिश करता हूं।

सुकून: संगीत सुनना मेरे लिए सबसे अच्छा आराम है। कभी-कभार पढ़ता भी हूं और पुरानी किताबों को फिर से पढ़ना मुझे खासा पसंद है।

आस्था: ईश्वर में विश्वास है, लेकिन मैं कर्मकांडों में ज्यादा नहीं पड़ता। पूजा-पाठ और बाकी धार्मिक जिम्मेदारियां माधवी संभाल लेती हैं।

वे नए सदस्य की तुलना परिवार में आई नई दुल्हन से करते हैं – शुरुआत में उसे अपनापन देने, सहज महसूस कराने और परिवार का हिस्सा बनाने के लिए जिस तरह खास ध्यान दिया जाता है, नए सदस्य को भी रोटरी में उसी तरह अपनाने की जरूरत है।

सदस्य के शुरुआती 1,000 दिनों में उसे लगातार रोटरी सीखने के अवसर मिलने चाहिए, नेतृत्व की जिम्मेदारी दी जानी चाहिए और क्लब के फैसलों में उसकी आवाज को जगह मिलनी चाहिए। इससे वह रोटरी से अधिक जुड़ा, सक्रिय और खुद को महत्वपूर्ण महसूस करेगा। उसे लगेगा कि उसकी बात मायने रखती है और वह क्लब का हिस्सा है। इसके बाद उसे किसी ऐसे सेवा प्रोजेक्ट से जोड़ना चाहिए, जिसका वास्तव में लोगों पर असर पड़ रहा हो। अगले वर्ष उस सदस्य को किसी नए सदस्य का मेंटर बनाया जाना चाहिए। उनकी वजह? सीखने का सबसे अच्छा तरीका है दूसरों को सिखाना।

पंड्या यह भी मानते हैं कि हर सदस्य के लिए रोटरी का अनुभव एक जैसा नहीं हो सकता। इसे अलग-अलग सदस्यों की रुचियों और अपेक्षाओं के अनुरूप ढालना होगा। हर व्यक्ति रोटरी से एक ही चीज नहीं चाहता। मेरे लिए मेलजोल और दोस्ती महत्वपूर्ण हो सकती है, आपके लिए सेवा; किसी और के लिए रोटरी की प्रतिष्ठा, रोटरी पिन पहनने का गौरव या रोटरी की अंतरराष्ट्रीय पहचान – जो आपको दूसरे देशों में भी नए अवसरों और नए लोगों तक पहुंच के दरवाजे खोलती है – महत्वपूर्ण हो सकती है। ये कोई नई बातें नहीं हैं। जरूरत बस इतनी है कि रोटरी में मौजूद इन अलग-अलग पहलुओं को इस तरह सामने लाया जाए कि हर सदस्य को उसमें अपने लिए कुछ खास नजर आए।

पंड्या का मानना है कि रोटेरियन जो काम करते हैं, उसकी असली कसौटी उस पर खर्च हुई रकम नहीं, बल्कि उससे समुदायों में आया बदलाव होना चाहिए। उनके अनुसार, इस काम से लोगों के व्यवहार में आ रहे बदलाव पर भी ध्यान देने की जरूरत है। हमारी नेतृत्व की जिम्मेदारियां तो एक साल में खत्म हो जाएंगी, लेकिन हम जो काम कर रहे हैं, उसका असर वर्षों और दशकों तक बना रहना चाहिए। इसलिए मेरा ध्यान सदस्यता और हमारे काम के स्थायी असर – इन दो बातों पर रहेगा।

मेरा ध्यान ऐसी रोटरी बनाने पर होगा जो सदस्यों को केंद्र में रखे – उनके लिए अधिक सुलभ, प्रासंगिक, सक्रिय और, सबसे जरूरी, अधिक आनंददायक हो।

भारत के अलावा अफ्रीका में भी रोटरी के विस्तार की काफी संभावनाएं हैं और पंड्या को लगता है कि कम-से-कम अगले पांच से सात वर्षों तक

2018 में चेन्नई ज़ोन इंस्टीट्यूट में रो ई अध्यक्ष-नामित पंड्या।

रो ई अध्यक्ष-नामित पंड्या और माधवी।

उनके सपने

सबसे पहले मैं पोलियो को पूरी तरह खत्म होते देखना चाहता हूं। इसके बाद रोटरी के नोबेल शांति पुरस्कार पाने की संभावना बन सकती है – और वह हमारे लिए एक ऐतिहासिक क्षण होगा। लंबे समय का मेरा सपना है कि जब भी किसी समुदाय को जरूरत हो, लोग – कम-से-कम हमारे कार्यक्षेत्रों में – रोटरी को अपना पहला और स्वाभाविक साझेदार मानें। यही बात उन दूसरी संस्थाओं पर भी लागू होनी चाहिए, जिन्हें किसी भरोसेमंद साझेदार की तलाश होती है।

मैं TRF को लेकर भी बहुत उत्साहित हूं। मेरा मानना है कि यह एक बेहद अच्छी Foundation है। लेकिन अपनी Foundation के जरिए किए जा रहे काम का लाभ उठाकर हमें TRF के लिए रोटरी से बाहर के लोगों और संस्थाओं से कहीं अधिक धन जुटाने में सक्षम होना चाहिए।

जिस तेजी से ख कंपनियां आगे बढ़ रही हैं, उनकी कीमत पहले ही अरबों डॉलर में पहुंच चुकी है। मुझे पूरा विश्वास है कि आज से दो, पांच या दस साल बाद इनमें से कई कंपनियों के संस्थापक बिल गेट्स की तरह बड़े परोपकारी बनेंगे। जब ऐसा होगा, तो रोटरी को उस धन तक पहुंच बनाने में सक्षम होना चाहिए, क्योंकि अधिक संसाधनों के साथ हम कहीं ज्यादा बड़ा काम कर सकते हैं।

बेशक, इसके लिए हमें अपने प्रोजेक्ट्स और गतिविधियों को उनकी जरूरतों के अनुरूप ढालना होगा, जो शायद बिल गेट्स की प्राथमिकताओं से अलग हों। आखिर जो धन देता है, वह यह भी तय करता है कि उस धन से किस तरह का काम किया जाए।

और अपने लिए? मेरा निकट भविष्य का सपना है कि मेरे सामने आई इस नई जिम्मेदारी को मैं पूरी ईमानदारी और क्षमता के साथ निभाऊं। इसके बाद मैं घर लौटना चाहता हूं, परिवार के साथ थोड़ा सुकून से समय बिताना चाहता हूं और उन्हें – और अपने क्लब के सदस्यों को भी – अपना समय देना चाहता हूं।

बाएं: 2019 में इंदौर ज़ोन इंस्टीट्यूट में पीआरआईपी के आर रवींद्रन, पीआरआईडी राजू सुब्रमणियन और विद्या के साथ पंड्या।

अफ्रीका रोटरी के लिए विकास का बड़ा क्षेत्र बना रहेगा। प्रेसिडेंट यिंका इस दिशा में पहले से काम कर रहे हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि प्रेसिडेंट-इलेक्ट लैरी भी इसे आगे बढ़ाएंगे। मैं भी इस पर ध्यान दूंगा। फिलहाल पूरे अफ्रीका में करीब 50,000 रोटेरियन हैं। अगर सही दिशा और पर्याप्त ध्यान दिया जाए, तो अगले पांच वर्षों में पूरे महाद्वीप में रोटरी की सदस्य संख्या बढ़कर 1,50,000 तक पहुंच सकती है।

पंड्या इस बात से भी संतुष्ट हैं कि जर्मनी, इटली और स्कैंडिनेविया में रोटरी की सदस्यता धीरे-धीरे ही सही, लेकिन लगातार बढ़ रही है। हालांकि, रोटरी की दुनिया के कुछ हिस्सों में विकास ठहर गया है। उनके मुताबिक, अगर रोटरी को आगे बढ़ना है तो पहले उन जगहों पर हो रहे सदस्यों के नुकसान को रोकना होगा और गिरावट के इस रुझान को पलटना होगा। साथ ही, जो क्लब बदलाव को लेकर हिचकिचाते हैं, उन्हें थोड़ा अधिक लचीला और नए तरीके अपनाने के लिए तैयार होना होगा।

सदस्यता बढ़ाने की उनकी रणनीति में महिलाओं और युवाओं को अधिक संख्या में रोटरी से जोड़ना भी शामिल है। उनका मानना है कि रोटरी को आने वाले दशकों तक जीवंत, प्रासंगिक और प्रभावी बनाए रखने के लिए नई पीढ़ी को इससे जोड़ना जरूरी है।

अगर हम चाहते हैं कि अगले 30-50 वर्षों तक रोटरी जीवंत, प्रासंगिक, सक्रिय और प्रभावी बनी रहे, तो हमें युवाओं को रोटरी से जोड़ना ही होगा।

आज की युवा पीढ़ी किसी सार्थक मकसद से जुड़कर काम करना चाहती है। भारत में हाल में जेनरेशन ज़ी के बीच दिखी प्रवृत्ति इसका उदाहरण है। वे किसी ऐसे मकसद और उद्देश्य से जुड़ना चाहते हैं, जिसके लिए वे काम कर सकें। वे लोगों से ज्यादा जुड़ना चाहते हैं और तकनीक का अधिक इस्तेमाल करना चाहते हैं। साथ ही, वे अपने नेतृत्व कौशल को विकसित करने में भी रुचि रखते हैं। अगर रोटरी युवाओं को ये अवसर दे सके, तो नई पीढ़ी को अपनी ओर आकर्षित करने की उसकी स्थिति काफी मजबूत होगी।

महिला सदस्यों के बारे में पंड्या का कहना है कि अगर समाज में महिलाओं की हिस्सेदारी 50 प्रतिशत है, तो रोटरी में भी उन्हें बराबर प्रतिनिधित्व मिलना

नेतृत्व लोगों के आगे खड़े होकर उन्हें दिशा देना नहीं, उनके साथ खड़े होकर आगे बढ़ना है। अच्छा नेता अधिक अनुयायी नहीं, अधिक नेता तैयार करता है।

चाहिए। हालांकि रोटरी में महिला सदस्यों की संख्या बढ़ रही है, रो ई अध्यक्ष-नामित का मानना है कि हर स्तर पर - क्लब से लेकर डिस्ट्रिक्ट और उससे आगे तक - महिलाओं को नेतृत्व के अधिक अवसर मिलने चाहिए। वे कहते हैं, कोई महिला सीधे रो ई अध्यक्ष, रो ई निदेशक या डिस्ट्रिक्ट गवर्नर नहीं बन सकती। इसके लिए उन्हें क्लब स्तर से नेतृत्व की जिम्मेदारी संभालने के लिए प्रोत्साहित करना होगा और फिर धीरे-धीरे डिस्ट्रिक्ट, ज़ोन और रो ई स्तर तक आगे बढ़ने का अवसर देना होगा।

यह बदलाव हो तो रहा है, लेकिन उतनी तेजी से नहीं जितनी जरूरत है। इसकी एक वजह पंड्या पदों की होड़ को मानते हैं, जिन पर रोटरी में उनसे पहले आ चुके पुरुष अक्सर अपना दबदबा बनाए रखते हैं। वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि रोटरी में महिलाओं को अधिक नेतृत्व के अवसर सिर्फ इसलिए नहीं मिलने चाहिए कि वे महिलाएं हैं, बल्कि इसलिए कि वे सक्षम, कुशल और प्रतिभाशाली हैं। उम्मीद है कि आज से 10 साल बाद हमें महिलाओं के नेतृत्व की बात अलग से नहीं करनी पड़ेगी। तब यह सिर्फ नेतृत्व होगा! लेकिन तब तक, अधिक महिलाओं को नेतृत्व में लाने के लिए उन्हें आगे बढ़ने के रास्ते और अवसर देने होंगे। पंड्या कहते हैं, यह महिलाओं के प्रति पक्षपात करने की बात नहीं है, बल्कि उनके लिए रास्ते खोलने, उन्हें सहज महसूस कराने और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने की बात है।

इसके बाद मैं पंड्या से पूछती हूँ कि रो ई अध्यक्ष के रूप में उनसे अपेक्षाएं भी अधिक होंगी। रोटरी में उन्हें व्यापक अध्ययन रखने वाले, विचारशील और संवेदनशील नेता के रूप में देखा जाता है। ऐसे में वे बदलाव की मेज पर कौन-से नए विचार लेकर आएंगे?

एक अच्छे नेता के गुण

एक अच्छे नेता के गुणों पर रो ई अध्यक्ष-नामित भारत पंड्या कहते हैं, जैसा कि मैंने कहा, यह मेरे लिए रोमांचक समय और एक बड़ा अवसर है। मेरे लिए नेतृत्व का मतलब लोगों के आगे खड़े होकर उनका नेतृत्व करना नहीं है, बल्कि लोगों के साथ खड़े होकर सबको साथ लेकर चलना है। मैं यही करने की कोशिश करूंगा। एक अच्छा नेता वह भी नहीं है जो ज्यादा अनुयायी तैयार करे, बल्कि वह है जो ज्यादा नेता तैयार करे। अगर मैं सिर्फ अनुयायी तैयार करूंगा, तो मेरी नेतृत्व की जिम्मेदारी खत्म होने के बाद उस जगह को कौन भरेगा?

उनके अनुसार, एक अच्छे नेता के पास दूरदृष्टि, चीजों को पहले से देख पाने की क्षमता और सहयोग की भावना होनी चाहिए, ताकि टीम के साथ मिलकर काम किया जा सके। क्योंकि आप सब कुछ अकेले नहीं कर सकते। आपको खुद पर भरोसा और आत्मविश्वास भी चाहिए, तभी आप दूसरों को सशक्त बना पाएंगे। अगर मुझे खुद पर भरोसा नहीं होगा, तो मैं दूसरों को कैसे सशक्त करूंगा? लेकिन केवल दृष्टि होना या दूसरों को अधिकार देना पर्याप्त नहीं है। नेता में काम को अंजाम देने की क्षमता भी होनी चाहिए। आखिरकार, अमल जरूरी है। पंड्या कहते हैं, मैं हमेशा कहता हूं - अच्छी तरह किया गया काम, अच्छी तरह कही गई बात से बेहतर होता है। और इन सबके केंद्र में है ईमानदारी और नैतिक दृढ़ता।

वे अपने नेतृत्व के नजरिए को समझाने के लिए सर्जरी का उदाहरण देते हैं। एक सर्जन के रूप में काम करने ने मेरे जीने के तरीके को गहराई से प्रभावित किया है। सर्जरी में हर फैसला महत्वपूर्ण होता है और वह ज्ञान, कौशल, विवेक, प्रमाण और टीमवर्क पर आधारित होता है। किसी उपचार के सफल होने के प्रमाण हैं, इसलिए हम उसे अपनाते हैं। फिर टीमवर्क आता है। मैं अकेले सर्जरी नहीं कर सकता - एनेस्थेटिस्ट, थिएटर नर्स, यहां तक कि सफाईकर्मी के बिना भी नहीं। क्योंकि फर्श साफ न हो, तो संक्रमण हो सकता है।

इसके साथ करुणा भी जरूरी है। सर्जरी में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है - बीमारी का नहीं, मरीज का इलाज करना। मरीज का इलाज करने के लिए करुणा जरूरी है। रोटरी के काम में भी यही बात लागू होती है। कोई प्रोजेक्ट शुरू करने से पहले हमें समुदाय की जरूरतों को समझना चाहिए और करुणा के साथ काम करना चाहिए। उन लोगों की मदद करनी चाहिए जिन्हें वास्तव में हमारी मदद की जरूरत है, लेकिन इस तरह नहीं कि उन्हें लगे कि हमारी मदद के बदले वे हमारे एहसानमंद हैं। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि दूसरों की मदद करने की स्थिति में होना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। यही करुणा है।

हालांकि, उनका मानना है कि किसी समुदाय के लिए सब कुछ बिल्कुल मुफ्त भी नहीं कर देना चाहिए। समुदाय के लोगों की भागीदारी - उनके कौशल और श्रम के रूप में - होनी चाहिए। एक डॉक्टर के रूप में मैं जानता हूं कि जो चीज पूरी तरह मुफ्त मिलती है, उसकी कीमत अक्सर कम आंकी जाती है। स्थानीय लोगों के पास अपनी समझ और अनुभव होता है और वे सबसे अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हें किस चीज की जरूरत है। अपने नेतृत्व के तरीके को पंड्या इउ श्रीी ख के रूप में संक्षेप में बताते हैं:

A- परिस्थिति का विश्लेषण करें।

B - फैसले लेने में साहस दिखाएं।

C - दबाव में भी शांत और संयमित रहें।

I - हर कदम पर Integrity यानी ईमानदारी और नैतिकता को सबसे ऊपर रखें।

पंड्या को करीब से जानने वाले लोग उनके व्यक्तित्व में ईमानदारी और सिद्धांतों के प्रति दृढ़ता को सबसे ज्यादा सराहते हैं। पूर्व रो ई निदेशक राजू सुब्रमणियन कहते हैं, "कुछ लोग आगे रहकर नेतृत्व करते हैं, तो कुछ अपने नेतृत्व की ईमानदारी से दूसरों को प्रेरित करते हैं। भारत पंड्या में दोनों खूबियां हैं। व्यवहार में शांत और विचारों में गहरे, वे रोटरी नेतृत्व की बेहतरीन परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं।"

पूर्व रो ई अध्यक्ष के आर रवींद्रन भावी रो ई अध्यक्ष के बारे में कहते हैं: "मैंने भारत पंड्या को 15 वर्षों तक बहुत करीब से देखा है, कुछ बेहद कठिन परिस्थितियों में भी। कद में वे भले ही छोटे हैं, लेकिन उनके व्यक्तित्व और प्रभाव का कद बहुत बड़ा है। उनका व्यवहार सौम्य है, लेकिन अपने सिद्धांतों पर वे अडिग हैं। उन्होंने कभी पद को काम से ऊपर नहीं रखा। रोटरी ने सही व्यक्ति को चुना है।"

वे विनम्रता से कहते हैं, मैं खुद को इतना विद्वान नहीं मानता, लेकिन विचारशील और संवेदनशील जरूर मानता हूं। और मेरे विचार से एक अच्छे नेता के लिए ये दोनों बहुत महत्वपूर्ण गुण हैं। मैं मानता हूं कि रोटरी में जिस तरह मैं आगे बढ़ा हूं, उसे देखते हुए मुझसे अपेक्षाएं अधिक होंगी। लेकिन रोटरी में मेरा अनुभव ही इन अपेक्षाओं पर खरा उतरने में मेरी मदद करेगा।

वे याद करते हैं कि रो ई निदेशक के रूप में उनका मुख्य फोकस स्वास्थ्य पर था। अब वे इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए स्वस्थ समुदायों पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं।

उनके लिए स्वस्थ समुदाय का मतलब सिर्फ इलाज या स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित नहीं है। इसमें स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच, बीमारियों की रोकथाम, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, स्वच्छता, साफ पानी और स्वच्छ पर्यावरण भी शामिल हैं। क्योंकि साफ पानी, उचित स्वच्छता और स्वस्थ पर्यावरण के बिना स्वस्थ समुदाय बनाए ही नहीं जा सकते।

पंड्या चाहते हैं कि रोटरी स्वस्थ समुदायों की अवधारणा को आगे बढ़ाए और क्लब अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार इसके अलग-अलग पहलुओं पर काम करें - जैसे पानी और स्वच्छता, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य या पर्यावरण। आखिरकार, ये सभी एक स्वस्थ समुदाय की बुनियाद हैं। हालांकि, वे स्पष्ट करते हैं, पोलियो उन्मूलन हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता बनी रहेगी।

युवा भारत के लिए रोटरी क्या कर सकती है, इस पर पंड्या कहते हैं कि रोटरी पहले से ही काफी काम कर रही है। शिक्षा का सबसे ज्यादा असर युवाओं पर पड़ता है और हम शिक्षा के क्षेत्र में काफी काम कर रहे हैं, लेकिन अपने प्रयासों को और तेज करने की जरूरत है। स्वास्थ्य जागरूकता भी उनके लिए चिंता का विषय है। उनका कहना है कि 15 वर्ष से कम उम्र की हमारी आबादी में करीब 20 प्रतिशत बच्चे मोटापे की समस्या से जूझ रहे हैं। आज इस पर ध्यान नहीं दिया गया, तो 35-45 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते

मतभेद और असहमति होंगे ही। लेकिन उन्हें हम एक-दूसरे के खिलाफ हुए बिना सुलझा सकते हैं।

भारत में रोटरी की कई ताकतें

भारत में रोटरी की कई बड़ी ताकतें हैं, भारत पंड्या कहते हैं। हमारे सदस्य हमारी ताकत हैं और हमारी उदारता भी। TRF में भारत के योगदान को देखें। 2022 में जब मैंने ट्रस्टी का पद संभाला, तब TRF में हमारा योगदान 26 मिलियन था। जून 2026 में मेरा कार्यकाल पूरा हुआ, तब यह बढ़कर 45.3 मिलियन डॉलर हो गया था। यानी 74 प्रतिशत की बढ़ोतरी - जो काफी महत्वपूर्ण है। भारत में हम जिस पैमाने पर काम करते हैं, वह बहुत बड़ा है। मुझे लगता है कि सबसे ज्यादा ग्लोबल ग्रांट्स भी यहीं हो रहे हैं। CSR ग्रांट्स का जिस तरह हम लाभ उठा रहे हैं, वह मिसाल है और इनसे समुदायों को कई तरह से मदद मिल रही है।

क्या उन्हें CSR के आंकड़े भी याद हैं, मैं पूछती हूं। बिल्कुल - "एकदम याद हैं!" CSR की शुरुआत 2021-22 में हुई थी और उस साल यह आंकड़ा 2.8 मिलियन डॉलर था। अगले साल यह बढ़कर 6.7 मिलियन डॉलर हुआ, फिर 8.2 मिलियन डॉलर, उसके बाद 11 मिलियन डॉलर और पिछले रोटरी वर्ष में 15 मिलियन डॉलर तक पहुंच गया।

और अभी इससे कहीं ज्यादा की गुंजाइश है। यह बहुत बड़ा क्षेत्र है एक पूरा महासागर है, वे कहते हैं। इसकी एक बड़ी वजह है कंपनियों का रोटेरियन पर भरोसा। फिलहाल 65 प्रतिशत ग्रांट्स उन कॉरपोरेट्स से आते हैं, जिनका स्वामित्व रोटेरियन के पास है या जिन्हें रोटेरियन चलाते हैं। रोटरी और गैर-रोटरी, दोनों तरह के कॉरपोरेट्स से बार-बार ग्रांट्स मिलना भी इस भरोसे को दिखाता है।

भारत में रोटरी की एक और बड़ी ताकत है "हमारे साझेदारों के साथ मजबूत जुड़ाव - सरकारों, विभिन्न NGOs, अर्ध-सरकारी संस्थाओं और स्थानीय नगर निगमों के साथ। और पूरे भारत में हमारी व्यापक मौजूदगी।"

भारत में क्या बेहतर किया जा सकता है? पंड्या कहते हैं कि दुनिया के बाकी हिस्सों की तुलना में भारत में रोटरी अपेक्षाकृत युवा है और तेजी से बढ़ रही है। अधिक लोग नेतृत्व की जिम्मेदारियां संभालना चाहते हैं।

महत्वाकांक्षा बुरी चीज नहीं है। लेकिन उसे संभालने का तरीका महत्वपूर्ण है। हमें उसे सही दिशा देनी होगी और समझना होगा कि मतभेद और असहमति होंगे ही। लेकिन हम उन्हें एक-दूसरे से मनमुटाव किए बिना सुलझा सकते हैं। कभी-कभी लोगों को थोड़ा पीछे हटकर आगे बढ़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। मौका फिर आएगा। भारत में हम इस पहलू में बेहतर कर सकते हैं।

रोटरी क्लब बोरीवली के अध्यक्ष के रूप में पदभार ग्रहण करते डॉ भरत पंड्या।

उन्हें स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। रोटरी के RYLA कार्यक्रम युवाओं को पेशेवर कौशल विकसित करने के अवसर दे रहे हैं। पंड्या चाहते हैं कि इन अवसरों का विस्तार किया जाए और साथ ही नई पीढ़ी के मार्गदर्शन और मेंटरिंग पर भी अधिक ध्यान दिया जाए।

राष्ट्रपति वर्ष के दौरान और उससे पहले लंबे समय तक इवान्स्टन में रहना होगा, ऐसे में उनके अस्पताल और सर्जिकल प्रैक्टिस का कामकाज कैसे चलेगा? पंड्या बताते हैं कि उन्होंने इसके लिए एक संक्रमण योजना तैयार कर रखी है। वे हल्के अंदाज में कहते हैं, बेशक, मुझे अपने ऑपरेशन थिएटर की कमी खलेगी और मेरे ऑपरेशन थिएटर को भी मेरी कमी खलेगी। तो यह सब जानते हुए रो ई अध्यक्ष पद के लिए अपना नाम आगे बढ़ाने का फैसला करना कितना मुश्किल था? फैसला मुश्किल नहीं था, लेकिन इस पर बहुत सोच-विचार करना पड़ा - और सिर्फ मुझे ही नहीं, मेरे परिवार को भी। लेकिन उनकी पत्नी माधवी की सहमति मिलते ही रास्ता साफ हो गया। उनकी बेटी शश्मी भी स्त्रीरोग विशेषज्ञ हैं और

जब माधवी उनके साथ होंगी, तब अस्पताल और प्रैक्टिस की जिम्मेदारी संभालेंगी।

यह पूछने पर कि रोटरी ने उन्हें किस तरह बदला है, पंड्या अपनी नेतृत्व क्षमता के विकास का बड़ा श्रेय रोटरी को देते हैं। रोटरी ने मुझे अलग-अलग पेशों और पृष्ठभूमियों से आए तरह-तरह के लोगों के बीच काम करने और उनसे सीखने का मौका दिया। इससे मुझे एक नेता के रूप में परिपक्व होने और खुद को विकसित करने का अवसर मिला। साथ ही, मेरे सार्वजनिक रूप से बोलने के कौशल को भी निखारा। पहले 10 लोगों के सामने खड़े होकर मैं मुश्किल से चार-पांच वाक्य बोल पाता था।

लेकिन आज वे अपने प्रभावशाली और सार्थक भाषणों के लिए जाने जाते हैं। क्या इसके लिए उन्हें तैयारी करनी पड़ती है? महत्वपूर्ण बैठकों के लिए, हां। मैं कम-से-कम कुछ मुख्य बिंदु जरूर लिख लेता हूं। अगर आप विंस्टन चर्चिल नहीं हैं, तो थोड़ी तैयारी तो करनी ही पड़ेगी, वरना आपका भाषण बुरी तरह विफल हो सकता है!

तो रोटरी का नेतृत्व करने की बात में उन्हें सबसे ज्यादा उत्साहित क्या करती है? अलग-अलग संस्कृतियों, देशों, भाषाओं और पृष्ठभूमियों से आए लोगों से मिलना और यह देखना कि वे किस तरह का काम कर रहे हैं। हमें लगता है कि भारत में हम बहुत काम करते हैं - और सचमुच करते हैं। लेकिन फिलीपींस, ताइवान, ब्राजील, नेपाल, ऑस्ट्रेलिया और दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी रोटेरियन शानदार काम कर रहे हैं। मैं इस अवसर को लेकर उत्साहित हूं कि दुनिया भर में रोटेरियन किस तरह काम कर रहे हैं, यह करीब से देख सकूं और यह जान सकूं कि वे अपने समुदायों की जरूरतों के मुताबिक सेवा प्रोजेक्ट्स में किस तरह के नए और रचनात्मक प्रयोग कर रहे हैं।

रोटरी का शांति के लिए किया जा रहा काम भी उनके लिए उतना ही महत्वपूर्ण है। इसी तरह Programs of Scale के तहत भारत में चल रहा PWABHI (Partners for Water Access and Better Harvests in India) भी उल्लेखनीय है। इसमें रोटेरियन, मयंक गांधी और ग्लोबल विकास ट्रस्ट के साथ मिलकर मराठवाड़ा के कुछ सबसे पिछड़े इलाकों में किसानों के साथ काम कर रहे हैं। इस पहल का असर खासा उल्लेखनीय रहा है। कुछ किसानों की सालाना आय पांच, सात और यहां तक कि दस गुना तक बढ़ गई है - जो पहले ₹40,000-50,000 प्रति एकड़ थी, वह बढ़कर ₹3-5 लाख रुपये प्रति एकड़ तक पहुंच गई है।

हमें याद रखना चाहिए कि हमारे पद अस्थायी हैं, लेकिन हम जो बदलाव ला सकते हैं, उसका असर पीढ़ियों तक रह सकता है।

सिम्बायोसिस स्थित हमारे Rotary Peace Center और दुनिया भर के अन्य Rotary Peace Centres के माध्यम से रोटरी निश्चित रूप से बदलाव ला सकती है। हम लोगों में शांति की सोच विकसित कर सकते हैं और अलगाव या टकराव के बजाय उन्हें संवाद, सौहार्द और शांति के साथ साथ लाने पर ध्यान दे सकते हैं। इस तरह संघर्षों को पैदा होने से पहले ही रोकने की दिशा में काम किया जा सकता है।

रोटरी को दिए गए अपने लंबे समय और इसकी वजह से परिवार को चुकानी पड़ी कीमत के बारे में पूछने पर पंड्या मानते हैं कि परिवार के साथ बिताए जाने वाले समय में सभी को कुछ न कुछ समझौता करना पड़ा है। लेकिन मैंने हमेशा चीजों के बीच संतुलन बनाने की पूरी कोशिश की है। जब भी मैं रोटरी के किसी कार्यक्रम या जिम्मेदारी के सिलसिले में बाहर जाता हूं, उस दौरान मेरा पूरा ध्यान उसी पर रहता है। कोई और चीज मुझे भटकाती या विचलित नहीं करती। मैं वह जिम्मेदारी पूरी करता हूं और फिर सीधे घर लौट आता हूं - अपने परिवार और अपने पेशे के लिए।

वे आगे कहते हैं, हां, कभी-कभी माधवी नाराज भी हो जाती हैं, लेकिन वह और मेरी दोनों बेटियां हमेशा मेरे साथ खड़ी रही हैं। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में, जब मेरी बेटियां मुंबई से बाहर पढ़ाई कर रही हैं और रोटरी की मेरी जिम्मेदारियां भी बढ़ गई हैं, परिवार के साथ थोड़ा समय मिलकर बिताना बेहद मुश्किल हो गया है।

एक सर्जन के रूप में मैंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा लोगों को स्वस्थ करने में बिताया है और रोटरी के माध्यम से समुदायों की सेवा करते हुए भी कई वर्ष गुजारे हैं। इन दोनों अनुभवों ने मुझे यह समझाया है कि शायद हम पूरी दुनिया को न बदल पाएं, लेकिन किसी एक व्यक्ति की दुनिया जरूर बदल सकते हैं।

अगर हम हर रोटेरियन को ऐसा थोड़ा और ज्यादा करने के लिए प्रेरित कर सकें, तो रोटरी का भविष्य और बेहतर, अधिक प्रभावशाली और अधिक सार्थक होगा। यही है - 'स्वयं से पहले सेवा।'

चित्र: रशीदा भगत

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

ADVT.

PROUD BNI MEMBER

Pankaj Shah

COL Representative District 3131 2026-28
RI Convention Promotion Chair : Taipei, 2025-26
DRFC RID 3131 RY 2025-26
ARRFC ZONE 7 RY 2023-25
District Membership Chair 2022-25
District Learning Facilitator 2024-25
District Governor 2021-22
Charter Member : Rotary Club of Pune Sarasbaug

+91 98220 57299
rotary.pankajshah@gmail.com

Personal Secretary : 81490 57299 | Email : secretary.pankajshah@gmail.com

GDM RRFM

Shree Ganesh Dal & Besan Mills - Shirwal
Ramtilak Roller Flour Mills (p) Ltd. - Chakan
Mandar Health And Hygiene Pvt. Ltd. - Phaltan
M/s. Arun Narayandas Shah - Lonand
Shree Ganesh Shelters - Pune
M/s Deepchand Venichand Shah, Pune.

Head Office
Tel : +91 20 24404900 (30 lines)
Call Center : 7888039303.
admin@ramtilak.com

www.ramtilak.com | www.ganeshdal.com
• ISO 9000:2015 • ISO 22000:2015

SCAN for the Location

Corporate Office:
Shop No. 243,
Chatrapati Shivaji Market Yard,
Gultekadi, Pune,
Maharashtra-411037

CRESCO HEALTHCARE

Multibrand Pathology

www.crescohealthcare.com

PATHOLOGY HOME COLLECTION
MEDICAL STORE - CHEMIST AND DRUGGIST

To avail the services
89564 66801/2/3/4/5

Download Cresco app

PATHOLOGY PARTNERS

Grant Medical Foundation Ruby Hall Clinic | DMH | Bharati Vidyapeeth's Bharati Hospital and Research Centre Pune | Sahyadri Speciality Labs | Trutest Laboratories | Metropolis The Pathology Specialist

रो ई अध्यक्ष यिंका बाबालोला सुनाली सलूजा के सिर पर अपनी टोपी रखते हुए। साथ में (दाएं से) रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम, टीआरएफ ट्रस्टी ए एस वेंकटेश, सुधीर रेड्डी, रो ई मंडल 3150 के डीजी उदय पिलानी और रो ई निदेशक के पी नागेश।

टीआरएफ के लिए मजेदार नीलामी

रशीदा भगत

हैदराबाद में रो ई अध्यक्ष यिंका बाबालोला की हालिया यात्रा के दौरान आयोजित टीआरएफ कार्यक्रम में एक बेहद दिलचस्प पल तब आया, जब अध्यक्ष ने अपनी खूबसूरती से कढ़ाई की हुई लाल टोपी की ओर इशारा करते हुए कहा, यह एक साधारण कपड़े की टोपी है, लेकिन इसे हाथ से बनाया और कढ़ाई की गई है। टोपी पर पीले रंग में रोटरी का लोगो और इस वर्ष की अध्यक्षीय थीम "Create Lasting Impact" इंडिगो रंग में कढ़ी हुई थी।

उन्होंने कहा कि हॉल में मौजूद किसी भी रोटेरियन को वह टोपी उचित कीमत पर देने के लिए तैयार हैं। नीलामी से मिलने वाली पूरी राशि द रोटरी फाउंडेशन को दी जानी थी।

रो ई मंडल 3150 के डीजी उदय पिलानी ने तुरंत बोली शुरू करते हुए टोपी के लिए 5,000 डॉलर की पेशकश की। इसके बाद बोली 500 से 1,000 डॉलर तक की बढ़ोतरी के साथ आगे बढ़ती गई। पिलानी के असिस्टेंट गवर्नर और AKS सदस्य (लेवल 3) चिरंजीव सलूजा और उनकी पत्नी सुनाली मुख्य बोलीदाताओं में थे। इसी बीच हॉल में मौजूद रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम भी बोली में शामिल हो गए।

इसके बाद तो बोली ने जोर पकड़ लिया। मुरुगानंदम के शामिल होते ही रकम तेजी से 10,000, 15,000 और 25,000 डॉलर तक पहुंच गई और फिर उससे भी आगे बढ़ी। आखिर में उपाध्यक्ष ने कहा, 30,000 डॉलर... और यह मेरी अंतिम बोली है।

पिलानी ने मंडल के रोटेरियनों से अपील की कि वे यह सुनिश्चित करें कि रो ई अध्यक्ष की टोपी मंडल में ही रहे, और हो सके तो हैदराबाद में। आखिरकार सलूजा ने 31,000 डॉलर की बोली लगाकर नीलामी अपने नाम कर ली। जोरदार तालियों और जयकारों के बीच बाबालोला ने टोपी सुनाली के सिर पर रख दी।

बाएं से: रो ई निदेशक के पी नागेश, डीजी उदय पिलानी, सुनाली सलूजा, चिरंजीव सलूजा, रो ई अध्यक्ष यिंका बाबालोला, टीआरएफ ट्रस्टी ए एस वेंकटेश और रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम।

बाद में डीजी पिलानी ने *रोटरी न्यूज़* को बताया, कार्यक्रम के लिए हॉल की ओर जाते समय मैंने अध्यक्ष बाबालोला को यह विचार दिया था। मुझे बहुत खुशी है कि मैंने ऐसा किया, क्योंकि इस नीलामी से टीआरएफ के लिए ₹30 लाख जुटे!

उन्होंने हैम्बर्ग कन्वेंशन का एक किस्सा भी सुनाया, जहां चार चित्रों की नीलामी हुई थी। मैंने अपनी पत्नी से कहा था कि हमें एक चित्र खरीदना चाहिए। मैंने एक चित्र के लिए बोली लगाई। लेकिन जब मैं उसकी रकम चुकाने गया, तो मेरी पत्नी ने, यह समझते हुए कि मैंने कहा है कि हमें सभी चित्र खरीदने चाहिए, बाकी तीनों चित्रों के लिए भी बोली लगा दी और उन्हें खरीद लिया। मुझे आज भी याद है कि उन चित्रों के लिए मैंने कुल 35,000 यूरो चुकाए थे।

आखिरकार, मकसद तो नेक था! *विव ला टीआरएफ!* ■

रोटरी की संक्षिप्त जानकारी

पुस्तक का नाम	:	**रोटरी इन अ नटशेल**
लेखक	:	**पीडीजी जॉर्ज सुंदरराज रो ई मंडल 3203**
कीमत	:	**₹100**
ईमेल	:	**geopris12@gmail.com**

रोटरी इन अ नटशेल रोटरी के बारे में बुनियादी जानकारी का एक संक्षिप्त और उपयोगी संकलन है। यह नए रोटेरियनों के लिए एक उपयोगी संदर्भ पुस्तक है और अनुभवी सदस्यों के लिए संगठन तथा उसके विभिन्न पहलुओं की जानकारी दोहराने का आसान माध्यम भी है।

पुस्तक को पहले ही अच्छी प्रतिक्रिया मिल चुकी है। जुलाई में अंग्रेजी संस्करण के जारी होने के कुछ ही समय बाद इसकी करीब 5,500 प्रतियां बिक गईं। वहीं अगस्त में जारी तमिल संस्करण *Ullangayil Ungal Rotary* (रोटरी आपकी हथेली में) की 2,000 प्रतियां रिलीज के 10 दिनों के भीतर बिक गईं। अब इसके हिंदी संस्करण का अनुवाद किया जा रहा है।

पुस्तक के लेखक पीडीजी जॉर्ज सुंदरराज, रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूट (RLI) के इंटरनेशनल वाइस-चेयर हैं। उन्होंने पुस्तक से आने वाली आय टीआरएफ को देने का संकल्प लिया है। उन्होंने अपनी पत्नी रोटेरियन प्रिसिला की स्मृति में एक नेम्ड एंडोमेंट फंड भी शुरू किया है, जिनकी तीन वर्ष पहले एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। 25,000 डॉलर के इस फंड में पुस्तक की बिक्री से 1,000 डॉलर और जोड़े गए हैं।

रो ई पोलियोप्लस चेयर और RLI के पूर्व इंटरनेशनल चेयर माइकल मैकगवर्न ने लिखा, ''मुझे लगता है कि फ्रैंक डेव्लिन की Frank Talk किताबों के बाद रोटरी की दुनिया में यह सबसे सफल पुस्तक लॉन्च है। आपने जो हासिल किया है, उस पर आपको गर्व होना चाहिए।''

रोटरी क्लब कैलीकट कल्चरल सिटी की अध्यक्ष सुभीषा मधु ने लिखा, आपकी यह ''कैप्सूल बुक'' बहुत जानकारीपूर्ण है और पढ़ने व समझने में बेहद आसान है। अब यह हमेशा मेरे बैग में रहती है। जब भी थोड़ा समय मिलता है, मैं इसे निकालकर कुछ पन्ने पढ़ लेती हूं। इतनी उपयोगी और व्यावहारिक पुस्तक तैयार करने के लिए धन्यवाद! ■

नतीजों से आगे, स्थायी प्रभाव पर ध्यान दें: बाबालोला

जयश्री

अगस्त में अपनी भारत यात्रा के दौरान रो ई अध्यक्ष यिंका बाबालोला के गोवा दौरे में रो ई मंडल 3170 में 35 नए रोटरेक्ट क्लबों का चार्टर हुआ। रोटरेक्टरों के लिए रोटरी क्लब पोरवोरिम द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने नए क्लबों को बधाई दी और रोटेरियन को याद दिलाया कि चार्टर होना सिर्फ शुरुआत है।

सशक्त सदस्य, जीवनभर का सदस्य होता है, बाबालोला ने कहा। उन्होंने प्रायोजक रोटरी क्लबों से अपने रोटरेक्टरों को रोटरी से परिचित कराने, उनका मार्गदर्शन करने और उन्हें नेतृत्व के लिए तैयार करने का आग्रह किया।

अपने रोटरेक्टर के दिनों को याद करते हुए उन्होंने कहा, रोटरी ने मुझे खोजा और मुझमें निवेश किया। उसी निवेश ने उन्हें आज इस मुकाम तक पहुंचाया है।

हम सभी को इस संगठन से बहुत कुछ मिला है और अब समय है कि हम रोटरी को वापस कुछ दें। आइए, अगली पीढ़ी को जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार करें, ताकि रोटरी की यात्रा जारी रहे।

रोटरेक्टरों से रो ई अध्यक्ष ने कहा, अनुमति का इंतजार मत कीजिए। आगे बढ़िए, अपनी बात रखिए और पहल कीजिए। नेतृत्व का मतलब कार्रवाई है।

बाद में TRF के आभार कार्यक्रम में बाबालोला ने हमारी रोटरी फाउंडेशन के लिए रोटेरियन की उदारता को धन्यवाद दिया और जोर देकर कहा कि यह रोटेरियन की अपनी फाउंडेशन है।

उन्होंने कहा, अगर आप इसे 'द रोटरी फाउंडेशन' कहते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे यह किसी और की है और हमसे सिर्फ मदद करने को कहा जा रहा है। लेकिन यह *हमारी* रोटरी फाउंडेशन है।

उन्होंने रोटेरियन से तत्काल नतीजों से आगे बढ़कर स्थायी प्रभाव पर ध्यान देने का आग्रह किया। बदलाव सिर्फ शुरुआत है। प्रभाव वह है जो लंबे समय तक बना रहता है।

उन्होंने 2022 में शुरू हुए TRF के *Programs of Scale* कार्यक्रम *Together for Healthy Families in Nigeria* का उदाहरण दिया। उत्तरी नाइजीरिया में कैमरून सीमा के पास शुरू किए गए इस पायलट प्रोजेक्ट का लक्ष्य मातृ एवं शिशु मृत्यु

बाएं से: डीजी लेनी डा कोस्टा, रो ई अध्यक्ष यिंका बाबालोला, गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत और रो ई निदेशक के पी नागेश।

बाएं से: रो ई निदेशक नागेश, रो ई मंडल 3011 के डीजी अजीत जालान, रो ई अध्यक्ष बाबालोला, रो ई मंडल 3012 के डीजी अमित गुप्ता, उनकी पत्नी स्वाति और रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम, दिल्ली में।

दर को 25 प्रतिशत कम करना था। दो साल बाद मातृ मृत्यु दर करीब 35 प्रतिशत और शिशु मृत्यु दर करीब 50 प्रतिशत कम हुई।

एक स्वास्थ्य केंद्र के दौरे के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने उन्हें बताया कि रोटरी ने वहां करीब 17 महीने पहले काम शुरू किया था और पिछले 12 महीनों में उस केंद्र में किसी मां या बच्चे की मृत्यु नहीं हुई। बाबालोला ने कहा, यही प्रभाव है।

उन्होंने अपने क्लब का एक अनुभव भी साझा किया। शुरुआत में सदस्यों ने मच्छरदानियां, प्रसव किट और एनीमिया की गोलियां बांटीं। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि इनमें से कई चीजों की जरूरत ही नहीं थी।

क्लब ने अपना तरीका बदला और ऐसी महिलाओं की पहचान की जो प्रसवपूर्व जांच के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क तक नहीं दे सकती थीं। क्लब ने उनकी फीस भरी, उन्हें मच्छरदानियां दीं और नवजात किट देने का वादा किया।

अगले टीकाकरण कार्यक्रम में जब रोटेरियन पहुंचे तो स्वास्थ्यकर्मियों ने बच्चों की ओर इशारा करते हुए कहा, रोटरी, वह आपका बच्चा है। वे अब "रोटरी बेबी" बन चुके थे। इसमें हमारा अतिरिक्त पैसा नहीं लगा, लेकिन हमने थोड़ा और सोचकर प्रभाव पैदा किया।

रो ई मंडल 3170 के आगामी विभाजन पर बधाई देते हुए बाबालोला ने कहा कि इसकी वृद्धि एक स्वस्थ संगठन का संकेत है। उन्होंने चेताया कि जो क्लब नए सदस्यों को शामिल नहीं करते, उनका अंत की ओर बढ़ना तय है और जो मंडल नए क्लब नहीं बनाते, उन्हें विलय की ओर बढ़ना तय है।

हल्के अंदाज में उन्होंने कहा कि अगर विलय का सिलसिला जारी रहा, तो भविष्य में मंडल सम्मेलन पड़ोसी पाकिस्तान या बांग्लादेश में आयोजित करने पड़ सकते हैं।

रो ई निदेशक के पी नागेश ने भी युवा सदस्यों से बेहतर जुड़ाव की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि रोटेरियन को खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों, RYLA, पिकनिक और औद्योगिक दौरों के जरिए रोटेरेक्टरों का साथ देना चाहिए, ताकि रोटरी में उनकी रुचि बनी रहे।

रोटरेक्ट की सदस्यता फीस को लेकर चिंता पर उन्होंने कहा कि सालाना 5 डॉलर का योगदान रोटरी द्वारा दिए जाने वाले अवसरों और जीवनभर की सीख की तुलना में बहुत कम है।

नागेश ने भारत में 30 सितंबर तक 1,000 नए रोटरेक्ट क्लब और एक लाख रोटरेक्टर बनाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य भी बताया। यह प्रतिबद्धता उन्होंने सह-निदेशक एम मुरुगानंदम के साथ जताई। उन्होंने अफ्रीका में कम से कम 10 मेडिकल मिशन शुरू करने की योजना भी बताई।

हमने प्रधानमंत्री से भारतीय मेडिकल टीमों को नियमित रूप से अफ्रीकी देशों में भेजने में मदद का अनुरोध किया है। हर महीने एक या दो टीमें भेजने की संभावना है, उन्होंने कहा।

TRF ट्रस्टी ए एस वेंकटेश ने बताया कि छह-सात साल पहले भारत का फाउंडेशन में योगदान 20 मिलियन डॉलर से भी कम था, जो पिछले साल बढ़कर 45 मिलिलयन डॉलर से अधिक हो गया। इसके साथ भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा योगदान देने वाला देश बन गया है। उन्होंने रोटेरियन से 100 मिलियन डॉलर के योगदान का लक्ष्य रखने का आह्वान किया।

नाइजीरिया के कानो में एक अस्पताल में NICU स्थापित करने और वहां डॉक्टरों को आपात स्थिति से निपटने का प्रशिक्षण देने के लिए रोटरी

हम सभी को इस संगठन से बहुत कुछ मिला है और अब समय है कि हम रोटरी को कुछ वापस दें। आइए, अगली पीढ़ी को जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार करें, ताकि रोटरी की यात्रा निरंतर जारी रहे।

रो ई अध्यक्ष बाबालोला, उनकी पत्नी प्रेसी, रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम, पीआरआईपी शेखर मेहता (प्रेसी के पास), पीआरआईडी अनिरुद्धा रॉयचौधरी और डीजी तपस भट्टाचार्य, कोलकाता में। पीडीजी श्यामाश्री सेन, अजय अग्रवाल, मुकुल सिन्हा और उत्पल मजूमदार भी नजर आ रहे हैं।

क्लब ऑफ पनाजी रिवेरा के अंतरराष्ट्रीय सेवा प्रोजेक्ट की सराहना करते हुए उन्होंने कहा, मुझे खुशी है कि भारत एक सहायता पाने वाले देश से सहायता देने वाले देश के रूप में आगे बढ़ रहा है। मुझे वे दिन याद हैं जब हम इंटरनेशनल असेंबली में अपने प्रस्तावित प्रोजेक्ट्स की पुस्तिकाएं लेकर जाते थे और विकसित देशों से फंड मांगते थे।

रो ई मंडल 3192 के गवर्नर रविशंकर डाकोजू ने रोटरेक्टरों के सामने *धन्यवाद* - भारतव्यापी पर्यावरण और शिक्षा पहल - की जानकारी दी। इसमें 10 लाख पौधे लगाना, जानवरों और पक्षियों के लिए एक लाख पानी के बर्तन रखना और आदिवासी क्षेत्रों के 5,000 स्कूलों की मदद करना शामिल है।

उन्होंने रोटरेक्टरों से कहा, ''आपकी पीढ़ी को सादगी अपनानी चाहिए। उन्होंने बताया कि उन्होंने और उनकी पत्नी पाउला ने अपनी 85 प्रतिशत संपत्ति TRF को देने का संकल्प लिया है।''

डीजी लेनी दा कोस्टा ने रो ई मंडल 3170 में 100 नए रोटरेक्ट क्लब, 52 नए रोटरी क्लब और 300 से अधिक इंट्रेक्ट क्लब बनाने का संकल्प लिया।

बाएं से: *RIDE बसु देव गोल्यान, रो ई मंडल 3120 की डीजी पूनम गुलाटी, रो ई अध्यक्ष बाबालोला, प्रेसी, रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम और उनकी पत्नी सुमथी, वाराणसी में।*

रोटरी नेताओं ने गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत के निमंत्रण पर स्वतंत्रता दिवस समारोह में भी भाग लिया।

कोलकाता (रो ई मंडल 3291) में बाबालोला ने रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम के साथ रोटरी सदन, चिल्ड्रन्स लाइब्रेरी, कल्चरल एक्टिविटी सेंटर और पीस पोल का दौरा किया। इसके बाद उन्होंने 150 दिव्यांग लोगों को व्हीलचेयर वितरित कीं। डीजी तपस भट्टाचार्य ने रोटरी नेताओं का स्वागत किया।

दिल्ली में बाबालोला, रो ई उपाध्यक्ष मुरुगानंदम और निदेशक नागेश की मौजूदगी में डकोजू तथा रो ई मंडल 3011 और 3012 के बीच MOU पर हस्ताक्षर किए गए। दोनों मंडलों का नेतृत्व उनके संबंधित डीजी अजीत जालान और अमित गुप्ता ने किया।

MOU के तहत दोनों मंडलों में *प्रोजेक्ट धन्यवाद* को TRF की नीतियों के अनुरूप लंबे समय तक चलाने का ढांचा तैयार किया गया है। इसमें संयुक्त मंडल स्तर पर प्रोजेक्ट लागू करना, एक समन्वय समिति बनाना और आने वाले मंडल नेतृत्व को इसमें शामिल करना शामिल है, ताकि प्रोजेक्ट्स का उचित चयन, निगरानी और संचालन सुनिश्चित हो सके।

वाराणसी में रो ई अध्यक्ष बाबालोला ने रो ई उपाध्यक्ष मुरुगानंदम और रो ई निदेशक बसु देव गोल्यान के साथ रो ई मंडल 3100, 3110, 3120, 3250 और 3261 के रोटेरियन के मल्टी-डिस्ट्रिक्ट सदस्यता सम्मेलन को संबोधित किया और TRF में उनके योगदान की सराहना की। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक मकसद के लिए ग्रैफिटी

जयश्री

बेंगलुरु के बैयप्पनहल्ली पुलिस स्टेशन की बाहरी दीवारें अब रंग-बिरंगी ग्रैफिटी से सजी हैं, जिसका सीधा संदेश है-*बेड़ा ब्रो,* यानी "मत करो भाई।" कन्नड़ और अंग्रेजी के मेल से बने इस संदेश ने राहगीरों, खासकर युवाओं का ध्यान खींचा है। कई लोग इस रंगीन दीवार के सामने सेल्फी लेते नजर आते हैं।

यह पहल रोटरी ई-क्लब बेंगलुरु, रो ई मंडल 3191 की है। क्लब का यह दूसरा ऐसा प्रोजेक्ट है। पहला ग्रैफिटी प्रोजेक्ट 2024 में अडुगोडी पुलिस स्टेशन की दीवारों पर बनाया गया था, जिसमें महिला सुरक्षा, नशे की लत और साइबर अपराध जैसे तीन सामाजिक मुद्दों को उठाया गया था। इसके लिए कोलकाता, मुंबई और बेंगलुरु के पेशेवर कलाकारों की मदद ली गई।

ग्रैफिटी हमेशा से विद्रोही की कलात्मक भाषा रही है और इसलिए युवाओं का ध्यान आसानी से खींचती है।

क्लब की निदेशक निवेदिता दत्त बताती हैं कि 2024 में कर्नाटक पुलिस के साथ बैठक के बाद पहला प्रोजेक्ट शुरू हुआ था। पुलिस शहर में महिला सुरक्षा को लेकर जागरूकता बढ़ाना चाहती थी। हमने सोचा कि ऐसी प्रभावशाली पेंटिंग्स के जरिए कहानियां कही जाएं, जो लोगों के वहां से गुजर जाने के बाद भी उनकी याद में बनी रहें।

ग्रैफिटी में उनकी रुचि कुछ साल पहले बेल्जियम के घेंट शहर की यात्रा के दौरान जगी, जहां उन्होंने एक गली को खूबसूरत ग्रैफिटी से सजा देखा था। वह बेहद शानदार था। तभी लगा कि भारत में भी इसे किसी महत्वपूर्ण संदेश के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

हाल में निवेदिता ने बैयप्पनहल्ली पुलिस स्टेशन की दीवारों पर एक और सामाजिक संदेश उकेरने की अनुमति मांगी। पुलिस ने नशे के खिलाफ अभियान को विषय बनाने का सुझाव दिया। उनका लक्ष्य 2028 तक शहर को नशामुक्त बनाने की दिशा में काम करना है और उनका संदेश है-*बेड़ा ब्रो।*

पहले प्रोजेक्ट पर काम कर चुके कोलकाता के ग्रैफिटी कलाकार सायम पोरे को फिर बुलाया गया। नई कलाकृति में नशे के दुष्परिणामों को दिखाने वाली तस्वीरों का प्रभावशाली कोलाज बनाया गया है। निवेदिता के अनुसार, हर तस्वीर अपनी अलग पीड़ा की कहानी कहती है।

ग्रैफिटी को अक्सर विद्रोह और विरोध की कला माना जाता है। निवेदिता कहती हैं, ''ग्रैफिटी हमेशा से विद्रोही की कलात्मक भाषा रही है और इसलिए युवाओं का ध्यान आसानी से खींचती है। हम इसी दृश्य प्रभाव का इस्तेमाल महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों की ओर ध्यान दिलाने के लिए कर रहे हैं।''

क्लब की योजना बेंगलुरु में ऐसी और दीवारों को सामाजिक संदेशों से सजाने की है। निवेदिता के अनुसार, डीजीई हरिनी रविंद्रनाथ अगले साल इस पहल को 60-100 दीवारों तक ले जाना चाहती हैं। ■

इनके दिल बच्चों के लिए धड़कते हैं

रशीदा भगत

अगर मुझसे पूछा जाए कि रोटरी क्या है, वह किन मूल्यों में विश्वास करती है और दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में लोगों की जिंदगी बदलने के लिए किस तरह काम करती है - वह भी हजारों मील दूर बैठे लोगों की मदद से - तो मैं रोटरी क्लब ऑफ ठाणे प्रीमियम, रो ई मंडल 3142 के *Save Little Hearts* प्रोजेक्ट का नाम लूंगा।

इस प्रोजेक्ट में क्लब को रोटरी क्लब ऑफ मेपल ग्रोव, रो ई मंडल 5950, मिनियापोलिस, अमेरिका से लगातार मदद मिल रही है। दोनों क्लब दो साल पहले साथ आए और ग्लोबल ग्रांट के लिए आवेदन किया। इसका उद्देश्य महाराष्ट्र में नवजात और अन्य बच्चों की हृदय सर्जरी के लिए फंड जुटाना था।

महाराष्ट्र देश के समृद्ध राज्यों में गिना जाता है, फिर भी यहां हजारों बच्चों को गंभीर हृदय रोग के इलाज के लिए जरूरी सर्जरी नहीं मिल पाती। महंगी पीडियाट्रिक हार्ट सर्जरी का खर्च उठाने में असमर्थ माता-पिता के कारण कई बच्चे या तो सामान्य जीवन नहीं जी पाते या कम उम्र में ही दम तोड़ देते हैं।

इसी समय, लगभग संयोग से, उत्तर महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले में एक किसान दंपती के घर बच्ची का जन्म हुआ। वह बच्ची उनके लिए बेहद खास थी, क्योंकि 15 साल के लंबे इंतजार के बाद वह उनकी जिंदगी में आई थी।

मां को गर्भवती होने के लिए IVF के कई दौर से गुजरना पड़ा था, जिससे उनके शरीर को काफी तकलीफ हुई और परिवार की आर्थिक स्थिति भी कमजोर हो गई।

लेकिन बच्ची के जन्म की खुशी ज्यादा दिन नहीं रही। वह जन्मजात हृदय दोष के साथ पैदा हुई थी और उसके दिल में छेद था। सर्जरी जरूरी

सर्जरी के बाद स्वस्थ हो रहा एक बच्चा।

थी, लेकिन माता-पिता के पास अब इसके लिए पैसे नहीं थे।

उन्हें पता भी नहीं था कि उसी समय रोटरी क्लब ऑफ ठाणे प्रीमियम के पूर्व अध्यक्ष राम भटनागर ऐसे ही बच्चों के लिए एक बड़े पीडियाट्रिक हार्ट सर्जरी प्रोजेक्ट की शुरुआत कर रहे थे।

Save Little Hearts का उद्देश्य जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित वंचित बच्चों की सर्जरी कराना था।

भटनागर बताते हैं, अगर इस बच्ची जैसे जन्म जात हृदय रोग से पीड़ित बच्चों की जल्द से जल्द सर्जरी न हो, तो उनमें से ज्यादातर अपना पहला जन्मदिन भी नहीं देख पाते। इस बच्ची के माता-पिता उस बेटी को खोने की पीड़ा झेल रहे थे, जिसके लिए उन्होंने 15 साल इंतजार किया था। जब यह मामला हमारे पास आया, तब वह दो साल की हो चुकी थी।

सकारात्मक बात यह थी कि दिल में छेद के कारण फेफड़ों पर लगातार दबाव पड़ने और सांस

बाएं सेः डॉ श्रीनिवास एल, डॉ राज खनकारी, राम भटनागर और रोटरी क्लब ठाणे प्रीमियम की अध्यक्ष सोनाली गांद्रे, सर्जरी के बाद स्वस्थ हो रहे एक बच्चे के साथ।

लेने में परेशानी के बावजूद बच्ची बची हुई थी। हालांकि उसे बार-बार सर्दी-जुकाम होता था।

खाना उसके लिए थकाने वाला काम था। खेलना लगभग असंभव था। छेद को बंद करने के लिए सर्जरी नहीं होती, तो उसका जीवन छोटा और तकलीफ भरा होता। माता-पिता लगातार इस डर में जी रहे थे कि उनकी बेटी उनसे छिन जाएगी।

तब तक 1,46,000 डॉलर का ग्लोबल ग्रांट मंजूर हो चुका था। अप्रैल 2026 में बच्ची की ठाणे स्थित KIMS (Krishna Institute of Medical Sciences) में जीवनरक्षक सर्जरी हुई।

सुबह की एक बेहद नाजुक प्रक्रिया में KIMS के चीफ पीडियाट्रिक कार्डियोलॉजिस्ट डॉ एल श्रीनिवास ने बच्ची की नस के जरिए एक बेहद छोटा उपकरण डालकर उसके दिल का छेद बंद किया। छेद कुछ मिलीमीटर का ही था, लेकिन जानलेवा था, भटनागर बताते हैं।

141 बच्चों के लिए मिले इस ग्लोबल ग्रांट के तहत KIMS और ज्यूपिटर अस्पताल, ठाणे में 420 हृदय सर्जरी की गईं। दोनों अस्पतालों ने वंचित परिवारों के लिए सर्जरी की लागत का बड़ा हिस्सा माफ किया, जिससे रोटेरियन उपलब्ध फंड से और अधिक बच्चों की मदद कर सके।

उन्होंने 15 साल तक अपनी बेटी का इंतजार किया। लेकिन खतरके अनगिनत दौर के बाद जब वह पैदा हुई, तो उसके दिल में एक छोटा-सा छेद था। माता-पिता के पास सर्जरी के लिए पैसे नहीं बचे थे।

अब तक इस प्रोजेक्ट के तहत **1,200 बच्चों** की हृदय सर्जरी हो चुकी है। भटनागर के अनुसार, इसमें ठाणे प्रीमियम और मेपल ग्रोव के अलावा उनके मंडलों के अन्य रोटरी क्लबों और कॉरपोरेट CSR से मिले फंड का भी योगदान रहा।

रोटरी क्लब ऑफ ठाणे प्रीमियम ने बच्चों की हृदय सर्जरी को इतना महत्व क्यों दिया, इसके पीछे भी एक कहानी है। भटनागर बताते हैं कि 2014 में क्लब की स्थापना के समय कई चार्टर सदस्य डॉक्टर थे। बच्चों की हृदय सर्जरी के लिए फंड जुटाना क्लब की प्राथमिकताओं में शामिल करना उनके लिए स्वाभाविक था।

डॉ खनकारी ने 2019 में अपने क्लब के अध्यक्ष-नामित रहते हुए ग्लोबल ग्रांट्स के जरिए भारत में काम करने की संभावनाएं तलाशनी शुरू की थीं। उनका उद्देश्य भारत को कुछ वापस देना था; उन्हें बस अपने देश में सही साझेदार की तलाश थी।

भारत की एक यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात भटनागर से हुई। अब तक डॉ खनकारी ठाणे के रोटरी क्लबों के साथ 12 प्रोजेक्ट्स में सहयोग कर चुके हैं और करीब 1 मिलियन डॉलर के ग्लोबल ग्रांट्स जुटा चुके हैं।

वे हर साल भारत आते हैं और अपने फंड से हो रहे काम के प्रभाव को खुद देखने की कोशिश करते हैं।

एक ऐसी ही यात्रा के दौरान भटनागर, जो ठाणे में रेमंड की सामाजिक पहल JK Trust के CEO हैं, उन्हें ज्यूपिटर अस्पताल ले गए। वहां उनकी मुलाकात डॉ एल श्रीनिवास से हुई, जो जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित बच्चों की जान बचाने के लिए बेहद समर्पित हैं।

जब डॉ श्रीनिवास ने तत्काल मदद की जरूरत वाले बच्चों की दिल दहला देने वाली कहानियां सुनाईं, तो डॉ खनकारी भावुक हो गए और हमारी मुहिम में मदद करने की इच्छा जताई, भटनागर याद करते हैं।

इसके बाद भटनागर ने रोटरी क्लब मेपल ग्रोव के सामने अपने क्लब के हृदय सर्जरी प्रोजेक्ट की विस्तृत प्रस्तुति दी। अस्पताल के बिस्तरों पर पड़े छोटे, कुपोषित और समय से पहले जन्मे बच्चों की तस्वीरों ने अमेरिकी रोटेरियन को झकझोर दिया। उन्होंने तुरंत प्रोजेक्ट से जुड़ने और फंड जुटाने की पेशकश की।

खाना उसके लिए थकाने वाला काम था। खेलना लगभग असंभव था। छेद को बंद करने के लिए सर्जरी नहीं होती, तो उसका जीवन छोटा और तकलीफ भरा होता।

डॉ खनकारी, जो एक बड़ी फार्मा कंपनी में वरिष्ठ अधिकारी हैं, नियमित रूप से भारत आते हैं। मेरे क्लब में इस प्रोजेक्ट की अपडेट का बेसब्री से इंतजार होता है। हर महीने जब मैं बताता हूं कि 30 या 40 बच्चों की सर्जरी पूरी हो गई, तो बहुत सराहना होती है, वे कहते हैं।

रो ई मंडल 3142 के उस समय के डीजी दिनेश मेहता बताते हैं कि प्रोजेक्ट का एक

क्लब ने अब तक 1,200 बच्चों की सर्जरी में मदद की है और सफलता दर 100 प्रतिशत रही है। करीब **₹21 करोड़** खर्च कर बच्चों को स्वस्थ दिल और बेहतर भविष्य दिया गया है।

इसमें भटनागर के पूर्व कार्यस्थल रेमंड से मिला CSR फंड, PRID अशोक महाजन की मदद से आदित्य बिड़ला समूह का सहयोग और जापानी कंपनी टोशो का योगदान शामिल है। कई रोटरी क्लबों के सदस्यों ने भी ₹2,000 से ₹50,000 तक का योगदान दिया।

भटनागर बताते हैं कि शुरुआत में उनके पास पर्याप्त फंड नहीं था। 2023 में उनकी मुलाकात अमेरिका के रोटरी क्लब ऑफ मेपल ग्रोव के सदस्य डॉ राज खनकारी से हुई। उनका संबंध महाराष्ट्र के मालेगांव से है। उनके दिवंगत भाई का रोटरी से 50 वर्षों तक जुड़ाव रहा था।

डॉ श्रीनिवास, डॉ खनकारी और भटनागर को होने वाली सर्जरी के बारे में समझाते हुए।

महत्वपूर्ण हिस्सा उन बच्चों की पहचान करना था जिन्हें स्वास्थ्य शिविरों के जरिए तत्काल सर्जरी की जरूरत थी।

इन परिवारों के पास साधन नहीं होते। कई माता-पिता ठाणे आने से भी डरते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि सर्जरी के बाद अस्पताल का भारी-भरकम बिल उनके सामने रख दिया जाएगा। उन्हें यह विश्वास ही नहीं होता कि उनके बच्चे का पूरा इलाज मुफ्त में हो सकता है।

रोटेरियन द्वारा जुटाए गए फंड से हर खर्च - ठाणे तक आने-जाने, अस्पताल में रहने और खाने से लेकर सर्जरी तक - पूरा किया जाता है।

इससे महाराष्ट्र के दूरदराज इलाकों में समय से पहले जन्मे उन बच्चों की भी जान बची है, जिनका वजन 700 ग्राम से भी कम था।

मेहता कहते हैं कि 141 बच्चों के लिए मिले ग्लोबल ग्रांट से 420 बच्चों को स्वस्थ जीवन की ओर लौटाना रोटरी जिस सहयोग की ताकत में विश्वास करती है, उसका उदाहरण है।

वे एक पांच साल के बच्चे को याद करते हैं, जिससे पिछले साल ठाणे के मुरबाड के एक आदिवासी इलाके में मुलाकात हुई थी। उसके माता-पिता ने बताया कि बचपन में वह ठीक से खा या सो नहीं पाता था और खेलने की ताकत भी नहीं थी। रोटरी ने उसकी सर्जरी का खर्च उठाया।

अगर कोई बच्चा इस दुनिया में आया है, तो उसे जीने का अधिकार है, मेहता कहते हैं।

ऐसी कई और कहानियां हैं। भटनागर बताते हैं कि सात महीने की उम्र में डॉ श्रीनिवास द्वारा ऑपरेशन की गई एक आठ वर्षीय बच्ची आज राज्य स्तर की जिम्नास्ट है।

इस प्रोजेक्ट के बिना शायद वह एक साल की उम्र भी पार नहीं कर पाती। इस साल अकेले हम 300 सर्जरी करेंगे। कुछ बच्चों को तुरंत सर्जरी चाहिए और कुछ तीन-चार महीने इंतजार कर सकते हैं। लेकिन हम किसी के साथ भेदभाव नहीं करते।

इस प्रोजेक्ट का एक और सकारात्मक परिणाम यह है कि अधिक रोटरी क्लब और कॉरपोरेट अब इससे जुड़ रहे हैं।

यह साबित करता है कि अगर आपका उद्देश्य बड़ा और सार्थक है, तो आप लोगों को उसके लिए साथ ला सकते हैं।

रोटरी क्लब मेपल ग्रोव का फोकस दुनिया भर में विभिन्न प्रोजेक्ट्स को फंड करना है। मिनियापोलिस में क्लब पर्यावरण और शिक्षा से जुड़े प्रोजेक्ट्स को सहयोग देता है। इसके कई सदस्य भारत और अफ्रीका से हैं, इसलिए वैश्विक चुनौतियों पर काम करना क्लब के लिए स्वाभाविक रहा है।

क्लब ने नाइजीरिया में मलेरिया रोकथाम प्रोजेक्ट को फंड किया है, युगांडा में महिलाओं को सिलाई मशीनें दी हैं और दुनिया के उन हिस्सों

पीआरआईडी अशोक महाजन, एक अस्पताल में हृदय सर्जरी के बाद स्वस्थ हो रहे बच्चे को गोद में लिए हुए। साथ में भटनागर और डॉ श्रीनिवास।

में महिलाओं को दोबारा इस्तेमाल किए जा सकने वाले सैनिटरी पैड उपलब्ध कराए हैं, जहां बुनियादी मासिक धर्म स्वच्छता सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं।

डॉ खनकारी ठाणे क्लब के साथ इस साझेदारी के लिए आभारी हैं।

दूसरे क्लब के साथ मिलकर काम करने पर आपको शानदार लोगों को जानने का मौका मिलता है। रोटेरियन का एक ही उद्देश्य होता है - साथ मिलकर दूसरों की मदद करना। ऐसे प्रोजेक्ट्स हमारे क्लबों के बीच जीवनभर की सद्भावना और दोस्ती कायम करते हैं।

हालांकि काम अभी बाकी है। भटनागर और डॉ खनकारी चाहते हैं कि दोनों मंडलों के और क्लब आगे आएं और बच्चों की हृदय सर्जरी के लिए ग्लोबल ग्रांट्स के लिए आवेदन करें।

मदद करने के इच्छुक बहुत से लोग हैं। उन्हें सिर्फ यह दिखाने की जरूरत है कि दुनिया में सबसे ज्यादा मदद कहां चाहिए। जब मैं अपने क्लब के सदस्यों को हर सफल सर्जरी के बारे में बताता हूं तो मुझे बहुत संतोष मिलता है। उन माता-पिता से बात करते हुए आंखों में आंसू आ जाते हैं, जिन्होंने अपने बच्चे के जीवित रहने की उम्मीद छोड़ दी थी। यही मुझे आगे और काम करने की प्रेरणा देता है, डॉ खनकारी कहते हैं।

भटनागर के लिए यह प्रोजेक्ट रोटरी के एक महत्वपूर्ण सिद्धांत - साझेदारी की ताकत - को साबित करता है।

मेरे क्लब में इस परियोजना से जुड़ी मेरी अपडेट का सभी को बेसब्री से इंतजार रहता है। हर महीने जब मैं बताता हूं कि हमने 30-40 बच्चों की सर्जरी पूरी कर ली है, तो क्लब में इसकी खूब सराहना होती है।

डॉ राज खनकारी

रोटरी क्लब मेपल ग्रोव, अमेरिका

यह बड़ी उपलब्धि इसलिए संभव हुई क्योंकि हमने ग्लोबल ग्रांट को कई कॉरपोरेट और व्यक्तिगत दानदाताओं के सहयोग से जोड़ा। हमने एक टिकाऊ और बड़े प्रभाव वाली स्वास्थ्य पहल खड़ी की। अपने काम की जानकारी पाठकों तक पहुंचाकर हम दूसरे क्लबों को यह बताना चाहते हैं कि ग्लोबल ग्रांट्स को बड़े स्तर पर ले जाने का यह एक मॉडल है। दूसरे मंडल और क्लब भी इससे प्रेरणा लेकर अपने समुदायों में बड़े और प्रभावशाली प्रोजेक्ट शुरू कर सकते हैं।

आगे भी यह प्रोजेक्ट जरूरतमंद परिवारों के बच्चों की हृदय सर्जरी जारी रखेगा। घखचड और ज्यूपिटर अस्पताल सहयोगी दरों पर सर्जरी करते हैं, जिससे एक ऑपरेशन की औसत लागत ₹1.5-2 लाख आती है।

BPL परिवारों के लिए उपलब्ध सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं के बारे में भटनागर कहते हैं, दुर्भाग्य से दूसरे राज्यों से आने वाले कई लाभार्थियों, खासकर मजदूरों के पास इन योजनाओं का लाभ लेने के लिए जरूरी दस्तावेज नहीं होते। यही एक कारण है कि हम ऐसे परिवारों को चुनते हैं - क्योंकि अपने बच्चों को बचाने में वे पूरी तरह असहाय होते हैं।

भविष्य की योजनाओं के बारे में भटनागर, जो 2025-26 में रो ई मंडल 3142 के CSR के संयुक्त निदेशक थे, बताते हैं कि 25,000 डॉलर का एक CSR ग्रांट अंतिम रूप दिया जा रहा है और दोनों क्लबों ने TRF से एक और ग्लोबल ग्रांट के लिए आवेदन किया है।

भारत और अमेरिका दोनों क्लबों की प्रोजेक्ट टीम और सदस्य इस प्रोजेक्ट को जारी रखने के लिए फंड जुटाने को प्रतिबद्ध हैं, क्योंकि भारत में ऐसी हृदय सर्जरी की बहुत जरूरत है। हमारे अनुमान के अनुसार, अकेले महाराष्ट्र में हर साल करीब 8,000-10,000 बच्चों को इस सर्जरी की जरूरत होती है। ■

नेपाल के रोटरेक्टर राहत कार्य में जुटे

जयश्री

सूरज भंडारी के लिए नेपाल में आई अचानक बाढ़ कोई दूर की आपदा नहीं थी। वह प्रभावित इलाकों में शामिल चितवन के रहने वाले हैं और उन्होंने चिंता के साथ देखा कि त्रिशूली की सहायक नदी नारायणी उफान पर आ गई और फसलों व संपत्ति को नुकसान पहुंचा रही है।

रो ई मंडल 3292, जिसमें नेपाल और भूटान शामिल हैं, के रोटरेक्ट सचिव भंडारी राहत कार्य में भी सक्रिय रहे। नेपाल के प्रधानमंत्री कार्यालय की आपात अपील के बाद उन्होंने अन्य रोटरेक्टरों के साथ, डीआरआर प्रकाश शर्मा के मार्गदर्शन में राहत जुटाने का काम शुरू किया।

डीआरआर शर्मा ने मंडल के रोटरेक्ट क्लब प्रमुखों की बैठक बुलाई और राहत कार्य की योजना तैयार की, उन्होंने बताया। मंडल 3292 में करीब 192 क्लबों में 6,000 रोटरेक्टर हैं।

काठमांडू, चितवन, भैरहवा और पूर्वी नेपाल में संग्रह केंद्र बनाए गए। यहां दवाइयां, शिशु आहार, रोजमर्रा का सामान, राशन, फल, नूडल्स और बिस्कुट जुटाकर नेपाल सेना के जरिए रसुवा, चितवन और नुवाकोट के सरकारी राहत शिविरों तक पहुंचाए गए।

26 अगस्त को हिमालय की लांगटांग लिरुंग चोटी पर बर्फ और चट्टानों के हिमस्खलन के बाद पानी का तेज बहाव नीचे आया और लेंदे खोला तथा त्रिशूली नदी तंत्र के आसपास कई समुदायों में अचानक बाढ़ आ गई। रसुवा, नुवाकोट, धादिंग, चितवन, गोरखा और तनहुन प्रभावित जिलों में शामिल थे। सड़कें और पुल बह जाने से राहत और बचाव कार्य मुश्किल हो गया।

''पूरे गांवों को अचानक आई बाढ़ में तबाह होते देखना बेहद पीड़ादायक था। कई जगह लोगों तक राहत सामग्री पहुंचाने के लिए हमें इमारतों के मलबे और टूटे घरों के बीच से पैदल जाना पड़ा, भंडारी ने कहा।''

रोटरी न्यूज़ से बातचीत के समय तक राहत सामग्री के वितरण के दो चरण पूरे हो चुके थे और तीसरा चरण जारी था। इसमें नुवाकोट के परिवारों के

डीआरआर प्रकाश शर्मा गैरे और रोटरेक्ट मंडल सचिव सूरज भंडारी, बाढ़ प्रभावित लोगों के साथ।

डीजी विष्णु कार्की (दाएं) फ्लैश फ्लड में ढहे एक मकान के सामने एक रोटेरियन के साथ।

आपदा प्रभावित स्थल पर घरेलू सामान वितरित करते हुए।

लिए टेंट, गैस चूल्हे, कूड़ेदान, मच्छरदानियां, कंबल, तौलिये और चादरें शामिल थीं।

समझ नहीं आता कि कहां से शुरुआत करें और उन लोगों को कैसे सांत्वना दें जिन्होंने अपना पूरा घर और सामान खो दिया है। कई लोग अभी भी अपने प्रियजनों को खोज रहे हैं और उम्मीद कर रहे हैं कि जल्द उनके बारे में कोई खबर मिलेगी।

रोटरी परिवार के बीच *Google Forms* साझा कर स्वयंसेवकों की सूची तैयार की गई। उन्हें परिवहन, राहत वितरण, रक्तदान और काउंसलिंग के लिए टीमों में बांटा गया। रोटेरियन और रोटरेक्टरों ने सिविल अस्पतालों में रक्तदान किया। आपातकालीन डेटाबेस में ऐसे सदस्यों की जानकारी भी जुटाई गई जो जरूरत पड़ने पर अपने आसपास रक्तदान कर सकते थे।

रोटरेक्टरों ने बाढ़ में बहकर आए शवों को बरामद करने में भी मदद की। कुछ शव त्रिशूली के किनारे और कुछ चितवन में नारायणी नदी में मिले। करीब 300 शव बरामद कर मुर्दाघरों तक पहुंचाए गए, भंडारी ने बताया।

नेपाल सेना ने उन इलाकों तक राहत सामग्री पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जहां सड़कें क्षतिग्रस्त होने के कारण पहुंचना मुश्किल था। दुर्गम क्षेत्रों तक पहुंचने के लिए हेलीकॉप्टरों का भी इस्तेमाल किया गया।

तत्काल राहत के साथ ही डीआरआर शर्मा के नेतृत्व में रोटरेक्ट कार्यालय ने राहत और पुनर्वास के लिए धन जुटाना शुरू किया। नेपाल के बाहर, भारत समेत, रोटेरियन ने भी योगदान दिया। डिजिटल ट्रांसफर के लिए QR कोड वाले फ्लायर साझा किए गए और यह राशि प्रधानमंत्री आपदा राहत कोष में देने की योजना थी।

नेपाल सेना द्वारा राहत सामग्री हेलीकॉप्टर में लोड की जा रही है।

आरआईडीई बसु देव गोल्यान, रोटरी क्लब विराटनगर, नेपाल के सदस्य, के समन्वय से रोटरी अपने प्रोजेक्ट पार्टनर ShelterBox के साथ मिलकर आपदा प्रभावित इलाकों में टेंट, तिरपाल, पानी के फिल्टर, मच्छरदानी और खाना पकाने के सामान उपलब्ध करा रही है।

काठमांडू में *ShelterBox* की टीम ने डीजी विष्णु कार्की, दिनेश राज मानंधर और रोटरी नेपाल मंडल आपदा राहत समितियों के सदस्यों से मुलाकात कर प्रभावित समुदायों की जरूरतों का आकलन किया।

हमारे रोटरेक्टर और रोटेरियन टीम के साथ मिलकर जरूरतमंद लोगों की पहचान कर रहे हैं और उन्हें किट वितरित कर रहे हैं, भंडारी ने कहा।

डीजी कार्की ने बताया कि रोटेरियन बाढ़ के तीसरे दिन से ही प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचने लगे थे। स्थानीय प्रशासन, सेना और पुलिस द्वारा बताई गई जरूरतों के अनुसार बॉडी बैग, PPE किट, मास्क, दस्ताने, मेडिकल किट, गद्दे, स्लीपिंग बैग और सोलर लैंप पहुंचाए गए।

रोटेरियन की टीमें रोज प्रभावित क्षेत्रों में जाकर लोगों की जरूरतों का आकलन कर रही हैं।

रोटरी प्रभावित इलाकों में डॉक्टर और दो नर्सों के साथ अस्थायी मेडिकल सेंटर स्थापित करने की योजना बना रही है। पानी की सुविधा और फिल्ट्रेशन सिस्टम वाले 20 पोर्टेबल टॉयलेट भी लगाए जाएंगे। पहाड़ी और सड़क से कटे इलाकों में फंसे लोगों की मदद के लिए छह मोटरबाइक एंबुलेंस भी प्रायोजित की जाएंगी।

अब राहत कार्य तत्काल जरूरतों से आगे बढ़कर पुनर्वास की ओर देख रहा है।

डीजी कार्की ने कहा, सरकार जब पुनर्वास के लिए जगह तय कर लेगी, तब हम पुनर्वास और पुनर्निर्माण पर काम करेंगे। हम सरकार के साथ मिलकर स्कूल और टॉयलेट बनाएंगे, पेयजल व्यवस्था करेंगे और जरूरतमंदों के लिए आय के साधन विकसित करने वाली परियोजनाएं शुरू करेंगे। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटेरियनों में दिखे भगवान

वी मुत्तुकुमारन

19 अगस्त की रात करीब 10 बजे एक जरूरी फोन कॉल ने रो ई मंडल 3080 के पीडीजी प्रवीण गोयल को बिस्तर से उठा दिया। उन्होंने तुरंत चंडीगढ़ से ऋषिकेश तक कई रोटेरियनों को फोन करना शुरू कर दिया।

बेंगलुरु के पीडीजी जीतेंद्र अनेजा ने उन्हें ऋषिकेश में हुए एक सड़क हादसे की जानकारी दी थी। रोटरी क्लब ऑफ विजयनगरम के सदस्य श्रीराम मंचुकोंडा के माता-पिता और उनकी बुआ तीर्थयात्रा पर थे, तभी उनकी कार की सामने से आ रही एक निजी बस से टक्कर हो गई। तीनों गंभीर रूप से घायल हुए।

अनेजा ने हादसे की जानकारी और घायलों के नाम रोटेरियनों के एक Whatspp ग्रुप में साझा किए थे। साथ में हादसे का एक वीडियो भी था, जो उन्हें रो ई मंडल 3020 के पीडीजी एम वेंकटेश्वर राव ने भेजा था। राव ने अपने मंडल के रोटेरियन की मदद के लिए अनेजा से संपर्क किया था।

गोयल कहते हैं, मैंने अनेजा को भरोसा दिया कि मरीजों की हर संभव मदद की जाएगी, क्योंकि AIIMS-ऋषिकेश की निदेशक डॉ मीनू सिंह हमारे रोटरी क्लब चंडीगढ़ की सदस्य हैं।

श्रीराम के माता-पिता-80 वर्षीय श्रीनिवास मंचुकोंडा और 74 वर्षीय नथमम्मा-और उनकी 75 वर्षीय बुआ राज्यलक्ष्मी को एक ''अनजान'' कैब ड्राइवर AIIMS-ऋषिकेश लेकर गया था। उसने श्रीराम को फोन कर हादसे की जानकारी दी, क्षतिग्रस्त कार और सदमे में बैठे उनके माता-पिता का वीडियो भेजा और एंबुलेंस की व्यवस्था भी की।

गोयल के देर रात किए फोन पर बाल रोग विशेषज्ञ डॉ मीनू सिंह ने तुरंत इमरजेंसी और ट्रॉमा केयर वार्ड में एक डॉक्टर को मरीजों की स्थिति देखने और जांच रिपोर्ट तैयार करने के लिए भेजा।

कुछ ही घंटों में मुझे मेडिकल रिपोर्ट मिल गईं। रात 12.30 बजे मुझे भेजी गई रिपोर्ट मैंने देखी, गोयल याद करते हैं। हादसे के करीब आठ घंटे बाद श्रीराम की मां नथमम्मा को अस्पताल से छुट्टी मिल गई।

श्रीराम कहते हैं, मैं पीडीजी प्रवीण गोयल, पीडीजी वेंकटेश्वर राव, पीडीजी रामा राव और डॉ मीनू सिंह के साथ उन सभी लोगों का जीवनभर आभारी रहूंगा, जिन्होंने मेरे माता-पिता और बुआ को समय पर इलाज दिलाने में मदद की। हादसे में कार चालक को मामूली चोटें आईं।

जब डॉक्टर ने तीनों गंभीर मरीजों को ICU में भर्ती करने की सलाह दी, तो गोयल ने फिर डॉ. मीनू सिंह से बात की और उन्होंने तुरंत मंजूरी दे दी।

अगली सुबह श्रीराम ऋषिकेश के लिए रवाना हुए। इस मुश्किल सफर के दौरान भी उन्हें अपने माता-पिता की हालत की लगातार जानकारी मिलती रही। रो ई मंडल 3080 की डीजी रीता कालरा, जो स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं, और पीडीजी अजय मदान लगातार उनके संपर्क में थे।

आईपीडीजी रवि प्रकाश, जो रुड़की में रहते हैं, ने ऋषिकेश में रहने वाले तीन रोटेरियनों को अस्पताल भेजा। उन्होंने मरीजों की जरूरतों का ध्यान रखा और श्रीराम की हर संभव मदद की।

लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद श्रीनिवास की 25 अगस्त को, हादसे के छह दिन बाद, मौत हो गई। गंभीर चोटों से हुए सदमे और अंगों में आई जटिलताओं के कारण उन्हें कई बार हार्ट अटैक आया।

हादसे से लेकर अपने पिता के विजयनगरम में अंतिम संस्कार तक श्रीराम को हर कदम पर रोटेरियनों का साथ मिला। वे कहते हैं, ''मुझे हर जगह रोटेरियनों में भगवान नजर आए। उनकी इस अमूल्य सेवा के लिए मैं हमेशा उनका ऋणी रहूंगा।''

54 वर्षीय श्रीराम पिछले 10 वर्षों से रोटेरियन हैं। उनकी मां अब सुरक्षित घर लौट चुकी हैं, जबकि उनकी बुआ अभी भी ICU में ज़िंदगी के लिए जूझ रही हैं।

पीआरआईपी राजेंद्र साबू की पत्नी उषा साबू ने इस घटना पर कहा, ''रोटरी की ऐसी कहानियां प्रकाशित होनी चाहिए, ताकि इसका मानवीय पक्ष ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचे। ईश्वर हमें हमेशा ज्यादा से ज्यादा लोगों की सेवा करने के अवसर देता रहे।'' ■

रो ई मंडल 3192 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रविशंकर डकोजू (बाएं से चौथे), उनकी पत्नी पाओला और रोटरी फेलोशिप ऑफ टी लवर्स के चेयर चेतन नवीन कामानी, फेलोशिप सदस्यों के साथ लीला पैलेस, बेंगलुरु में।

एक खास शख्स के लिए खास चाय

रशीदा भगत

लगता है, यह रोटरी फेलोशिप का मौसम है। पिछले कुछ हफ्तों में *रोटरी न्यूज़* को अलग-अलग रोटरी फलोशिप के बारे में फीचर करने के कई अनुरोध मिले हैं। पहले बाइकिंग के शौकीनों की फेलोशिप थी, फिर हिप्नोसिस और हीलिंग की फेलोशिप, और इस महीने हम बात कर रहे हैं बेंगलुरु के चाय प्रेमियों के एक ऐसे समूह की, जो अपनी टी फेलोशिप को काफी गंभीरता से लेता है। उनकी बैठकों में बाकायदा एक टी सोमेलियर भी मौजूद रहता है!

जब इस तीन साल पुरानी फेलोशिप के हाल ही में चेयर बने चेतन नवीन कामानी बताते हैं कि उनकी पिछली बैठक लीला पैलेस में हुई थी और होटल के टी सोमेलियर ने इस खास मौके के लिए विशेष रूप से एक चाय तैयार की, तो मैं उनसे मजाक में कहती हूं, मुझे तो पता ही नहीं था कि टी सोमेलियर भी होते हैं। ओह हां, अब तो वॉटर सोमेलियर भी होते हैं, वह जवाब देते हैं।

खैर, इस खास मौके के लिए तैयार की गई चाय का नाम रखा गया कर्मयोगी टी। और यह अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं कि इसे किसके सम्मान में तैयार किया गया था। यह चाय रो ई मंडल 3192 के मौजूदा डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रविशंकर डकोजू के रोटरी के लिए दिए गए समय, धन और सेवा के अमूल्य योगदान को सम्मानित करने के लिए तैयार की गई थी।

इस खास चाय को ऊलॉन्ग टी और मोरक्कन मिंट को मिलाकर तैयार किया गया था, ताकि एक कप में दोनों का बेहतरीन मेल हो सके। कामानी कहते हैं, ऊलॉन्ग ने इसमें गहराई, नफासत और खासियत जोड़ी, जबकि मोरक्कन मिंट ने ताजगी, जोश और ऊर्जा दी। दोनों मिलकर खुद डकोजू के व्यक्तित्व का एक सुंदर रूपक बन गए - उद्देश्य के साथ गहराई, दृढ़ विश्वास के साथ व्यक्तित्व और भलाई करते रहने की हमेशा ताजा ऊर्जा।

डकोजू के बारे में अपनी इस उदार प्रशंसा को खत्म करते हुए कामानी कहते हैं, हम सभी को लगा कि यह उस जीवन के प्रति आभार जताने का तरीका है, जो उद्देश्य, सेवा और देने की भावना से परिभाषित रहा है। और इस मौके पर वह आभार एक कप चाय में परोसा गया।

यहां संदर्भ डकोजू की प्रमुख हरित पहल *धन्यवाद* का था।

अगर अब आपका मन कर्मयोगी टी के कुछ पैकेट मंगाने का कर रहा है, तो जरा ठहरिए। कामानी बताते हैं कि यह चाय न तो किसी कैटलॉग से चुनी गई थी और न ही बिक्री के लिए तैयार की गई थी। इसे सिर्फ उस एक शाम के लिए बनाया गया था और यह बाजार में उपलब्ध नहीं है।

लेकिन डकोजू खुद भी चाय के शौकीन हैं। इसलिए जब उन्होंने कुछ पैकेट खरीदने की इच्छा जताई तो हलचल मच गई! आखिरकार फेलोशिप के सदस्यों ने होटल के टी सोमेलियर की मदद से अपने खास मेहमान के लिए चाय का एक पैक तैयार करवा ही लिया, जिसे वह अपने साथ ले जा सकें।

कामानी खुद भी चाय के शौकीन हैं। जब मैं उनसे उनकी पसंदीदा चाय पूछती हूं, तो मुझे उम्मीद होती है कि किसी विदेशी चाय-क्षेत्र की कोई खास चाय का नाम सुनने को मिलेगा। लेकिन उनका जवाब तुरंत आता है - मसाला चाय। वही हमारी आम भारतीय चाय, जिसमें अदरक, लेमनग्रास और पुदीना होता है।

इस फेलोशिप में 500 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें ज्यादातर बेंगलुरु से हैं। हर महीने एक बैठक होती है, जिसमें करीब 30 से 40 सदस्य शामिल होते हैं। इन आयोजनों में अलग-अलग तरह की चाय को अलग-अलग व्यंजनों के साथ परोसा जाता है।

चाय प्रेमी नवानी बताते हैं, इन आयोजनों में हमने तुर्की से लेकर चीनी और जापानी चाय तक कई तरह की चाय का स्वाद लिया है। टी सोमेलियर हमें अलग-अलग चाय की कहानियां बताते हैं। जैसा कि आप जानते हैं, चाय पहाड़ी इलाकों से लेकर तटीय क्षेत्रों तक में उगाई जाती है। और हर चाय की अपनी एक कहानी होती है... वह कैसे उगाई गई, उसकी पत्तियां कैसे तोड़ी गईं और उसका स्वाद बेहतर बनाने के लिए उसे किस खास तरीके से तैयार किया जाता है।

खास तौर पर तैयार की गई कर्मयोगी टी, ग्रिल्ड हॉलौमी चीज़ और मीठे अंजीर के स्क्यूअर्स के साथ।

तो आखिर डकोजू के नाम पर खास चाय तैयार करने के लिए उन्हीं को क्यों चुना गया? मुझे तो लगता कि डकोजू ज्यादा दाल-चावल और चाय की दुकान वाली साधारण चाय पसंद करने वाले इंसान होंगे।

क्योंकि वह इतने खास हैं और समाज को कुछ लौटाने के लिए जाने जाते हैं... इसलिए हमने सोचा कि हमें भी उन्हें एक खास तरीके से तैयार की गई चाय देकर कुछ लौटाना चाहिए, नामानी कहते हैं।

कर्मयोगी मिश्रण के अलावा इस आयोजन में अदरक की चाय, येर्बा माते - दक्षिण अमेरिका का एक पारंपरिक हर्बल पेय - सुलेमानी चाय और सेनचा, एक नफीस जापानी ग्रीन टी, भी परोसी गई।

इन चाय प्रेमियों ने अपनी अगली फेलोशिप बैठक भी तय कर ली है। आगे चलकर दार्जिलिंग की यात्रा का भी कार्यक्रम है। लेकिन उससे पहले फोर सीजन्स होटल में कोम्बुचा चाय का स्वाद लेने की तैयारी है।

इस बैठक को लेकर कामानी इतने उत्साहित हैं कि मैं भी इसके बारे में थोड़ा जानने के लिए गूगल करती हूं और होटल की जानकारी में यह पढ़ती हूं: कोम्बुचा की झागदार और स्वाद से भरपूर दुनिया को जानिए। अदरक, बेरी, सिट्रस और हर्बल जैसे कई तरह के घर में तैयार किए गए स्वादों का आनंद लीजिए और मिठास, खट्टेपन और बुलबुलेदारपन के बीच के बारीक फर्क को समझिए। साथ ही फर्मेंटेशन की बुनियादी बातें जानिए...

किसने कहा कि सिर्फ वाइन चखने में ही इतना तामझाम और उत्साह होता है? बेंगलुरु के ये चाय प्रेमी भी किसी से कम नहीं हैं।

और उस अगली बैठक में, मुझे पूरा यकीन है कि इन चाय प्रेमियों के कप सचमुच छलकते नजर आएंगे! ■

कार्यक्रम में डीज़ी डकोजू को चाय परोसते हुए।

मोबाइल ब्रिज स्कूल के सामने छात्र। पीछे रोटरी क्लब बेंगलुरु राजमहल विलास की अध्यक्ष छाया नवंदर, पूर्व अध्यक्ष कीर्ति मेहता और आर के हेगड़े।

Rotary PEOPLE OF ACTION

प्रवासी बच्चों के लिए चलती-फिरती पाठशाला

रशीदा भगत

भारत में लाखों प्रवासी मजदूरों के बच्चे शिक्षा से दूर रह जाते हैं। यह समस्या बड़े शहरों में भी है, जहां अच्छे स्कूल मौजूद हैं, लेकिन इन बच्चों के लिए वहां तक पहुंचना आसान नहीं होता।

बड़े शहरों में लंबे समय तक काम करने वाले प्रवासी मजदूरों के बच्चों के सामने भाषा एक बड़ी चुनौती है। रो ई मंडल 3192 के पीडीजी एच राजेंद्र राय, जो वंचित बच्चों, खासकर प्रवासी मजदूरों के बच्चों की शिक्षा के लिए काम करने वाले एनजीओ समृद्धि ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं, कहते हैं, बेंगलुरु में आने वाले ज्यादातर प्रवासी मजदूर पश्चिम बंगाल, असम, बिहार और पूर्वोत्तर के दूसरे हिस्सों के साथ-साथ नेपाल से आते हैं। उनकी मातृभाषाएं अलग होती हैं, इसलिए वे बेंगलुरु के सरकारी स्कूलों में दाखिला नहीं ले पाते, जहां पढ़ाई कन्नड़ में होती है। ऐसे बच्चों को नियमित स्कूल में जाने से पहले कम से कम एक साल की ब्रिजिंग की जरूरत होती है।

इसी जरूरत को देखते हुए समृद्धि ट्रस्ट बेंगलुरु के बाहरी इलाकों में अस्थायी झुग्गियों और बस्तियों में रहने वाले प्रवासी मजदूरों के बच्चों के लिए एक और ‘मोबाइल ब्रिज स्कूल’ शुरू करना चाहता था। 2025 के अंत में राय ने रोटरी क्लब ऑफ बेंगलुरु राजमहल विलास की तत्कालीन अध्यक्ष दीपा शशिधरन और आईपीपी आरके हेगड़े से इस प्रोजेक्ट में साझेदारी की बात की।

क्लब बोर्ड ने तुरंत इस प्रोजेक्ट को मंजूरी दे दी। क्लब की पूर्व अध्यक्ष कीर्ति मेहता ने मेरे साथ समन्वय किया और एक लेलैंड वाहन में यह मोबाइल स्कूल तैयार करवाया, राय बताते हैं।

मेहता के अनुसार, इसका मकसद बच्चों के घर तक शिक्षा पहुंचाना था। खढ सॉल्यूशंस कंपनी V2 Solution से करीब ₹10 लाख की CSR मदद मिली। क्लब सदस्यों ने भी करीब दो लाख रुपये जुटाए। इसके बाद KHT Agency की मदद से एक पुराने लेलैंड वाहन को मोबाइल स्कूल में बदला गया। एजेंसी के मालिक रोटरी क्लब बेंगलुरु ऑर्चर्ड्स के पूर्व अध्यक्ष किरीट मोरजारिया हैं।

समृद्धि ट्रस्ट का अनुभव भी इस प्रोजेक्ट में काम आया। ट्रस्ट पहले से ही स्कूल से बाहर रह गए बच्चों के लिए ब्रिज स्कूल चला रहा है, जहां उन्हें नियमित स्कूल में दाखिले के लिए तैयार

किया जाता है। मोबाइल स्कूल के लिए शिक्षक उपलब्ध कराने में भी ट्रस्ट ने मदद की।

इस वाहन में 12 स्थायी डेस्क हैं और एक बार में 24 बच्चे बैठ सकते हैं। यह समृद्धि ट्रस्ट की अस्थायी ढांचों में चल रही दो अन्य ब्रिज स्कूलों का पूरक है।

बस में 32 इंच का टीवी मॉनिटर भी लगाया गया है, जिसमें कक्षा 5 से 10 तक के बच्चों को विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान और अंग्रेजी व्याकरण जैसे विषय पढ़ाने के लिए शैक्षणिक सॉफ्टवेयर है। बस खड़ी होने पर स्थानीय बिजली कनेक्शन से इसे बिजली मिल सकती है। बिजली उपलब्ध न होने पर छत पर लगा सोलर पैनल बैकअप बिजली देता है।

बस में अलग-अलग उम्र के बच्चों के लिए किताबों से भरी चार "क्लासरूम लाइब्रेरी" भी हैं। बच्चे अपनी पसंद की किताबें चुनकर बस में ही पढ़ सकते हैं।

हमने जरूरी वायरिंग के साथ बच्चों के लिए लाइट और पंखे लगाए हैं और एक डिस्प्ले बोर्ड भी लगाया है। अच्छी बात यह है कि समृद्धि ट्रस्ट के पास अनुभवी शिक्षक हैं। वे उन झुग्गी बस्तियों से भी बच्चों को लाते हैं, जहां उनके माता-पिता काम पर चले जाते हैं और बच्चे इधर-उधर समय बिताते रहते हैं। इनमें से कई बच्चे स्कूल छोड़ चुके हैं, इसलिए नियमित स्कूल में वापस भेजने से पहले उन्हें एक निश्चित स्तर तक पढ़ाना जरूरी होता है।

मेहता बताते हैं कि प्रवासी मजदूरों के बच्चे सुबह कुछ घंटे मोबाइल स्कूल में पढ़ते हैं। कुछ बच्चे दो घंटे पढ़कर चले जाते हैं, जबकि पढ़ाई में ज्यादा रुचि रखने वाले बच्चे अधिक समय बिताते हैं। बच्चे अपना खाना साथ लाते हैं और पढ़ाई के बीच भोजन का ब्रेक लेते हैं।

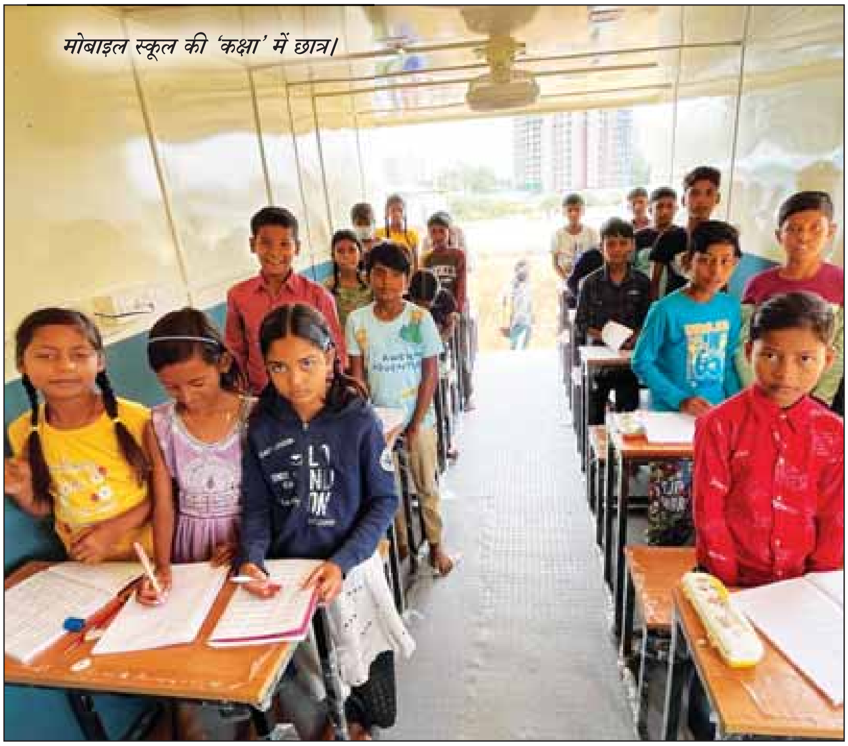
मोबाइल स्कूल की 'कक्षा' में छात्र।

चूंकि इनमें ज्यादातर बच्चे कन्नड़ नहीं बोलते, इसलिए उन्हें स्थानीय भाषा का बुनियादी ज्ञान भी दिया जाता है, ताकि वे नियमित स्कूलों में आसानी से घुल-मिल सकें। वे कन्नड़ के शब्द बार-बार दोहराते हैं, ताकि कुछ आत्मविश्वास के साथ भाषा बोल सकें।

शुरुआत में मोबाइल स्कूल को तीन-चार अलग-अलग जगहों पर ले जाने की योजना थी। समृद्धि के शिक्षक अक्सर झुग्गियों और प्रवासी बच्चों को खुले में पढ़ाते थे, जहां उन्हें मौसम की मार झेलनी पड़ती थी। लेकिन अब एनजीओ को कुछ स्कूलों में जगह मिल गई है, इसलिए रोटरी की बस को ज्यादा घूमने की जरूरत नहीं पड़ती।

यहां किसी स्कूल में दाखिला लेना उनके लिए मुश्किल होता है। यह ब्रिज स्कूल उन्हें आगे चलकर नियमित स्कूल में दाखिला लेने में मदद करेगा।

इस मॉडल के तहत बच्चे को 10 महीने की ट्रेनिंग के बाद नियमित स्कूल में दाखिला दिलाया जाता है। इसके बाद भी समृद्धि के ब्रिज स्कूल शिक्षक हर शाम कुछ अतिरिक्त घंटे इन बच्चों को पढ़ाते हैं, ताकि वे नियमित स्कूल की पढ़ाई में अच्छी तरह पकड़ बना सकें।

जब मेहता से पूछा गया कि क्या माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा के लिए रोटरी के आभारी हैं और उन्हें मोबाइल स्कूल भेजने में सहयोग करते हैं, तो उन्होंने कहा, हम माता-

सबसे बड़ी बात यह है कि बच्चे बहुत खुश हैं। बेकार या गलत गतिविधियों में समय बिताने के बजाय वे कुछ सीख रहे हैं और स्कूल जाने की तैयारी कर रहे हैं।

पिता से बहुत कम मिलते हैं, क्योंकि समृद्धि के लोग उनसे संपर्क रखते हैं। लेकिन बच्चे हमारे स्कूल आने और पढ़ाई करने में बहुत खुश होते हैं। हमें बताया गया है कि जो बच्चे पहले नियमित स्कूलों में गए हैं, उन्होंने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की है और कुछ तो इंजीनियर और अन्य प्रोफेशनल भी बने हैं।

पीडीजी राय बताते हैं कि समृद्धि ट्रस्ट हर साल करीब 100 बच्चों को ब्रिजिंग क्लास देता है और फिर उन्हें कम फीस वाले अंग्रेजी माध्यम के नियमित स्कूलों में दाखिला दिलाता है। इसकी आधी फीस ट्रस्ट और आधी माता-पिता वहन करते हैं।

रोटरी क्लब बेंगलुरु राजमहल विलास द्वारा प्रायोजित मोबाइल स्कूल के एक दौरे में राय ने 29 बच्चों को खुशी-खुशी पढ़ाई करते देखा। वे कहते हैं, सभी बच्चे अपनी पढ़ाई का आनंद ले रहे थे। उनकी खुशी और मुस्कुराते चेहरे हम सभी के लिए बेहद संतोषजनक अनुभव थे।

क्लब की भविष्य की योजनाओं पर कीर्ति मेहता बताते हैं कि जैसे-जैसे समृद्धि अपना काम बढ़ा रहा है, उसे रोटरी से और मदद की उम्मीद है। फिलहाल छात्रों की संख्या है, लेकिन शिक्षकों की कमी है। शिक्षक मिलने और ट्रस्ट की ओर से और मदद मांगे जाने पर रोटेरियन एक और ब्रिज स्कूल शुरू करने के लिए तैयार हैं।

इस बार स्कूल के लिए बस की जगह कंटेनर इस्तेमाल करने की योजना है। समृद्धि को स्कूलों से एक स्थायी जगह मिल गई है, इसलिए क्लब एक कंटेनर लेकर उसे तैयार करेगा और उसमें टेबल, कुर्सियां व अन्य जरूरी सुविधाएं लगाएगा।

इससे लागत भी कम होगी, क्योंकि बस के लिए रजिस्ट्रेशन, बीमा, रखरखाव, रोड टैक्स और ड्राइवर का खर्च भी होता है। हालांकि कंटेनर भी सस्ता नहीं है और इस पर करीब ₹10-12 लाख खर्च होंगे। मेहता को भरोसा है कि क्लब यह राशि जुटा लेगा, खासकर इसलिए क्योंकि एक बिल्डर ने उन्हें इसके लिए जगह देने की पेशकश की है।

मेहता कहते हैं, सबसे बड़ी बात यह है कि बच्चे बहुत खुश हैं। बेकार या गलत गतिविधियों में समय बिताने के बजाय वे कुछ सीख रहे हैं और स्कूल जाने की तैयारी कर रहे हैं।

ऐसे ब्रिज स्कूलों की जरूरत भी काफी है। बेंगलुरु जैसे तेजी से बढ़ते शहर में निर्माण कार्य के लिए आने वाले प्रवासी मजदूरों के अलावा सुरक्षा सेवाओं जैसे क्षेत्रों में काम की तलाश में भी कई लोग आते हैं। जब माता-पिता को बेंगलुरु में काम मिल जाता है, तो उनके बच्चे, जो पहले स्कूल जा रहे थे, अक्सर पढ़ाई छोड़ देते हैं। यहां किसी स्कूल में दाखिला लेना उनके लिए मुश्किल होता है। यह ब्रिज स्कूल उन्हें आगे चलकर नियमित स्कूल में दाखिला लेने में मदद करेगा। हमें खुशी होगी कि हम उनके और स्कूल के बीच यह पुल बन सकें। ■

बच्चों की चिड़ियाघर सैर

किरण ज़ेहरा

चेन्नई के अलग-अलग स्कूलों और संस्थानों के 3,234 बच्चे 60 बसों में सवार होकर वंडलूर के अरिग्नार अन्ना जूलॉजिकल पार्क पहुंचे। यह मैग्नम कार्निवल, रो ई मंडल 3234 और रोटरी क्लब ऑफ मद्रास मैग्नम (RCMM) की पहल थी।

क्लब पिछले सात वर्षों से यह कार्यक्रम आयोजित कर रहा है और हर साल कम सुविधा वाले परिवारों के बच्चों को चेन्नई और आसपास की मनोरंजक जगहों की सैर कराता है। पिछले साल 1,000 से अधिक बच्चों को चिड़ियाघर ले जाया गया था। इस बार डीजी डी सुरेश जैन ने प्रोजेक्ट का विस्तार करते हुए मंडल के नंबर के बराबर 3,234 बच्चों को शामिल करने का सुझाव दिया।

उन्होंने कहा, ऐसी पिकनिक बच्चों को नए अनुभव देती हैं, उन्हें एक-दूसरे से जुड़ने और कुछ नया सीखने का मौका देती हैं। बच्चों के मन को समृद्ध करना हमारी जिम्मेदारी है और उन्हें बेहतर नागरिक बनाने की दिशा में यह पहला कदम है।

हरे रंग की टी-शर्ट पहने बच्चों का चिड़ियाघर में रोटेरियन, एन्स और रोटरेक्टरों ने स्वागत किया। टी-शर्ट पर संदेश था- "पेड़ लगाएं; अपना भविष्य संवारें।"

RCMM के अध्यक्ष सिद्धार्थ भैया ने कहा, इतने सारे बच्चों को उत्साह के साथ चिड़ियाघर पहुंचते देखना शानदार था। हमारा मकसद था कि वे मस्ती, नए अनुभवों और खूबसूरत यादों से भरा दिन बिताएं।

कार्यक्रम को तमिलनाडु के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने लोक भवन से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। नाश्ते के बाद बच्चों ने सुबह चिड़ियाघर में वन्यजीवों को देखा और इस शैक्षणिक व मनोरंजक यात्रा का आनंद लिया।

RCMM के 70 से अधिक रोटेरियन और उनके परिवारों के अलावा 60 रोटरेक्टर तथा 50 मंडल पदाधिकारी और क्लब नेताओं ने स्वयंसेवक के रूप में काम किया। इनमें विशेष जरूरतों वाले 150 बच्चे भी शामिल थे, जिनके साथ उनके परिवार का एक सदस्य या देखभालकर्ता था। अक्षय सेठ कार्यक्रम के संयोजक थे।

बच्चों के लिए चिड़ियाघर के पास स्थित बीएस अब्दुर रहमान क्रिसेंट इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी में दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई। कैंपस के एम्फीथिएटर में बच्चों ने मैजिक शो भी देखा। कॉलेज ने परिवहन के लिए 25 बसें उपलब्ध कराईं और वहां के 40 रोटरेक्टरों ने बच्चों की व्यवस्था संभाली।

कार्यक्रम पर कुल ₹40 लाख खर्च हुए। 50 रोटरी क्लबों, व्यक्तियों और एनेट्स ने 1,000 से ₹2 लाख तक का योगदान दिया, जबकि मंडल ने ₹30 लाख दिए। क्लब अध्यक्ष भैया के अनुसार, बची हुई राशि का इस्तेमाल सरकारी स्कूलों में शौचालय बनाने के लिए किया जाएगा। ■

ऊपरः तमिलनाडु के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर एक छात्र से बातचीत करते हुए। उनके बाईं ओर डीजी डी सुरेश जैन और पीछे रोटरी क्लब मद्रास मैग्नम के अध्यक्ष सिद्धार्थ भैया।
नीचेः चिड़ियाघर में छात्रों के साथ क्लब सदस्य।

बाढ़ प्रभावित परिवारों तक पहुंची रोटरी

जयश्री

असम, केरल और गुजरात में बाढ़ से प्रभावित परिवारों की मदद के लिए रोटरी क्लब आगे आए। क्लबों ने तत्काल राहत सामग्री पहुंचाने के साथ-साथ लोगों को घर और जीवन फिर से संवारने में भी मदद की।

असम देश के सबसे अधिक बाढ़ प्रभावित राज्यों में से एक है। जुलाई में राज्य में करीब 1.8 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हुए। भारी बारिश और बादल फटने से ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियों डिखो और धानसिरी में अचानक जलस्तर बढ़ गया। शिवसागर, चराइदेव, जोरहाट और गोलाघाट सबसे ज्यादा प्रभावित जिलों में रहे।

केरल के अरनमुला में राहत सामग्री पहुंचाने के लिए नाव से जाते रोटेरियन।

केरल के अरनमुला में बाढ़ से जलमग्न इलाका।

रोटरी क्लब दिल्ली वेस्ट के अध्यक्ष बिद्युत तमुली (दाएं से दूसरे) और पूर्व अध्यक्ष अरुण रूंगटा (बीच में) असम के बाढ़ प्रभावित शिवसागर में एक महिला को सहायता राशि का चेक देते हुए।
नीचे: *गुजरात में बाढ़ प्रभावित परिवारों को जरूरी सामान बांटते रोटेरियन।*

बारिश थमने के बाद रोटरी क्लब दिल्ली वेस्ट – रो ई मंडल 3011 की एक टीम अगस्त की शुरुआत में शिवसागर पहुंची। क्लब ने 16 प्रभावित परिवारों को झोपड़ियों के पुनर्निर्माण के लिए ₹21,000 प्रति परिवार दिए। इससे वे टिन की छत वाले घर बना सकेंगे। क्लब के पूर्व अध्यक्ष अरुण रूंगटा ने बताया कि इन परिवारों की पहचान स्थानीय प्रशासन ने की थी।

टीम ने किराना सामान, टॉयलेटरी और दवाएं भी बांटीं तथा नाजिरा कॉलेज को छोटी-मोटी मरम्मत के लिए आर्थिक मदद दी। क्लब अध्यक्ष बिद्युत तमुली, जो असम के रहने वाले हैं, ने रूंगटा और क्लब सदस्य अनिल तायल के साथ इस पहल का नेतृत्व किया।

केरल में पंपा नदी के किनारे स्थित अरनमुला में तीन दिनों से अधिक की भारी बारिश के कारण शहर का बड़ा हिस्सा जलमग्न हो गया। हजारों लोगों को स्कूलों और चर्चों में बनाए गए राहत शिविरों में जाना पड़ा। रोटरी क्लब कंजीरापल्ली – रो ई मंडल 3211 ने रोटरी क्लब एरुमेली और रोटरी क्लब अरनमुला के साथ मिलकर राहत शिविरों में भोजन और पीने का पानी पहुंचाया।

कई जगहों पर इतनी ज्यादा बाढ़ थी कि हमें नाव से जाना पड़ा, रोटरी क्लब अरनमुला के अध्यक्ष श्रीकुमारन नायर ने बताया। उनका अपना घर भी बाढ़ में डूब गया था, जबकि डिस्ट्रिक्ट असिस्टेंट गवर्नर और उनका परिवार तीन दिन तक अपने घर की दूसरी मंजिल पर रहा।

बारिश थमने और लोगों के घर लौटने के बाद रोटरी अब जरूरी घरेलू सामान बांट रही है। त्रिवेंद्रम और कोल्लम के क्लबों ने भी अरनमुला के प्रभावित परिवारों को कंबल, कपड़े और किराना सामान उपलब्ध कराया।

दक्षिण गुजरात में सूरत, चिखली, गंडेवी, नवसारी, वलसाड और उमरगांव के रोटरी क्लबों ने मिलकर बाढ़ प्रभावित परिवारों तक राहत पहुंचाई। पीडीजी तुषार शाह के अनुसार, शुरुआत में विस्थापित परिवारों को सूखे खाद्य पदार्थ, पीने का पानी और दवाएं दी गईं।

हालात सुधरने के साथ राहत अभियान का दायरा बढ़ाया गया। 500 से अधिक बाढ़ प्रभावित परिवारों को किराना सामान, तिरपाल, खाना पकाने के बर्तन, कपड़े, सैनिटेशन और हाइजीन सामग्री, गद्दे, कंबल और मच्छरदानी दी गईं।

बॉम्बे के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3141, और लोकमंगलम चैरिटेबल ट्रस्ट तथा परब सहित कई NGOs ने भी राहत कार्य में सहयोग दिया।

शाह कहते हैं, जब क्लब भौगोलिक सीमाओं से परे जाकर एकजुट होते हैं, तो यह सिर्फ राहत सामग्री बांटना नहीं होता। यह प्रभावित परिवारों को यह भरोसा दिलाना भी है कि उनकी मुश्किल घड़ी में वे अकेले नहीं हैं। ■

आदिवासी छात्राओं के लिए डिजिटल शिक्षा की नई राह

सुब्बाराव रावुरी

कल्पना कीजिए-आंध्र प्रदेश के एक दूरदराज इलाके की 640 वंचित छात्राएं पहली बार कंप्यूटर खोलती हैं और उनके सामने बेहतर शिक्षा और बेहतर भविष्य की नई दुनिया खुल जाती है।

आज इन छात्राओं के पास डिजिटल शिक्षा और STEM संसाधन हैं, जो उन्हें उच्च शिक्षा, विश्वविद्यालय प्रवेश, रोजगार और आर्थिक आत्म निर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने में मदद कर रहे हैं। यह बदलाव रोटरी और ग्लोबल ग्रांट की साझेदारी से संभव हुआ है।

पीढ़ियों से आंध्र प्रदेश के दूरदराज आदिवासी इलाकों की लड़कियों की शिक्षा बुनियादी स्तर तक सीमित रही। तकनीक और आधुनिक शैक्षणिक संसाधनों से दूरी के कारण उनके लिए उच्च शिक्षा और रोजगार के रास्ते मुश्किल थे। इसका असर कम उम्र में विवाह, आर्थिक निर्भरता और कभी-कभी शोषण के रूप में भी दिखता था।

इस चुनौती को देखते हुए आंध्र प्रदेश सरकार ने आदिवासी बच्चों के लिए आवासीय

स्कूल शुरू किए। लेकिन इन स्कूलों में डिजिटल शिक्षा और STEM संसाधनों की कमी बनी रही। छात्राएं कंप्यूटर आधारित प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी ठीक से नहीं कर पाती थीं।

रोटरी ने इस कमी को दूर करने का बीड़ा उठाया। 2024 में रोटरी क्लब विजयवाड़ा मिडटाउन - रो ई मंडल 3020 ने अमेरिका के रोटरी क्लब बर्लिंगेम एंड हिल्सबोरो - रो ई मंडल 5150 के साथ मिलकर विस्सन्नापेटा के आदिवासी कन्या स्कूल एवं जूनियर कॉलेज में दो डिजिटल लर्निंग सेंटर और दो STEM लैब स्थापित कीं। इस प्रोजेक्ट का बजट 90,000 डॉलर था। रो ई मंडल 5150 ने DDF में 35,000 डॉलर, रो ई मंडल 3020 ने 10,000 डॉलर और रो ई मंडल 5330 ने 5,000 डॉलर का उदार योगदान दिया। रोटरी फाउंडेशन ने 40,000 डॉलर का 80 प्रतिशत मैचिंग अनुदान दिया, जिससे यह GG संभव हो सका।

परियोजना में 80 कंप्यूटर टर्मिनल, सर्वर, डिजिटल बोर्ड, शैक्षणिक सामग्री, फिजिक्स-केमिस्ट्री-बायोलॉजी की प्रयोगशालाएं और शिक्षकों का प्रशिक्षण शामिल था। रोटरी की इस पहल को काकीनाडा इंजीनियरिंग एलुमनाई ट्रस्ट फॉर सर्विस (KEATS), आंध्र प्रदेश ट्राइबल वेलफेयर रेजिडेंशियल एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस सोसाइटी (APTWREIS) और APNRTS का भी सहयोग मिला। लेकिन समस्या सिर्फ कंप्यूटरों की नहीं थी। स्कूल में इंटरनेट और बिजली की कमी, साफ पानी की समस्या और परिसर में बंदरों के घुसने जैसी दिक्कतें भी थीं। रैड्डी लैब्स से मिले अतिरिक्त 100,000 डॉलर के CSR सहयोग से सौर ऊर्जा, साफ पानी और सुरक्षा के इंतजाम किए गए।

आदिवासी स्कूल की कंप्यूटर लैब में छात्राएं।

इन चार ग्लोबल ग्रांट परियोजनाओं का कुल मूल्य 674,000 डॉलर है। रोटरी के इस निवेश को रैड्डी लैब्स के 400,000 डॉलर के CSR सहयोग से और मजबूती मिली।

एक स्कूल से शुरू हुआ बदलाव विस्सन्नापेटा की सफलता ने रोटेरियन को इस मॉडल को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

2025 में रो ई मंडल 3020 और 5150 ने KEATS, APNRTS और APTWREIS के साथ मिलकर 117,000 डॉलर की ग्लोबल ग्रांट से बुसाराजुपल्ले के आदिवासी कन्या स्कूल एवं जूनियर कॉलेज में दो डिजिटल लर्निंग सेंटर, दो STEM लैब, नौ डिजिटल बोर्ड और शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था की। इससे 779 छात्राओं को लाभ मिला।

2026 में भद्रगिरि और पाडेरू के दो आदिवासी स्कूलों एवं जूनियर कॉलेजों के लिए 250,000 डॉलर की एक और ग्लोबल ग्रांट मंजूर हुई। इसमें STEM लैब, 14 डिजिटल बोर्ड और व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण शामिल है। इससे करीब 2,000 छात्राओं को लाभ मिलेगा।

इसी वर्ष गन्नवरम के पास HEAL School में 1,000 अनाथ विद्यार्थियों के लिए 217,000 डॉलर की एक और ग्लोबल ग्रांट स्वीकृत हुई।

इस तरह एक आदिवासी कन्या स्कूल से शुरू हुई पहल अब हजारों वंचित विद्यार्थियों तक पहुंचने वाले डिजिटल शिक्षा अभियान में बदल गई है।

साझेदारी की ताकत

इन चार ग्लोबल ग्रांट परियोजनाओं का कुल मूल्य 674,000 डॉलर है। इसके अलावा रैड्डी लैब्स ने 400,000 डॉलर का CSR सहयोग दिया,

STEM लैब में छात्राएं।

जिससे सौर ऊर्जा, शौचालय और भोजन कक्षों के नवीनीकरण, साफ पानी और अन्य बुनियादी सुविधाओं में सुधार किया गया।

इन पहलों से अब तक 4,400 से अधिक विद्यार्थियों को डिजिटल शिक्षा मिली है। गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान में उनके प्रदर्शन में सुधार हुआ है। छात्राएं नियमित रूप से कंप्यूटर और STEM लैब का इस्तेमाल कर रही हैं और अपने भविष्य को लेकर अधिक उत्साहित और आत्मविश्वासी हैं।

एक छोटी-सी पहल ने उनके लिए उच्च शिक्षा और बेहतर भविष्य के दरवाजे खोल दिए हैं। यही ग्लोबल ग्रांट की असली ताकत है-साझेदारी के जरिए एक निवेश का असर हजारों जिंदगियों तक पहुंचाना।

लेखक रो ई मंडल 3020 के पीडीजी हैं।

तमिलनाडु में ग्लोबल ग्रांट से क्रेनियोफेशियल सेंटर की स्थापना

टीम रोटरी न्यूज़

तमिलनाडु के रानीपेट स्थित स्कडर मेमोरियल अस्पताल में क्रेनियोफेशियल सेंटर का उद्घाटन करते रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम। साथ में रो ई मंडल 3231 के डीजी टी एस रविकुमार (बाएं से तीसरे), डीजीई टी शिवकुमार (दाएं), पीडीजी जे के एन पलानी और आईपीडीजी वी सुरेश।

रो ई उपाध्यक्ष एवं निदेशक एम मुरुगानंदम ने तमिलनाडु के रानीपेट स्थित स्कडर मेमोरियल अस्पताल में क्रेनियोफेशियल सेंटर का उद्घाटन किया। ₹1.5 करोड़ की यह परियोजना रोटरी क्लब आर्कोट फोर्ट - रो ई मंडल 3231 के ग्लोबल ग्रांट से शुरू की गई है। इसमें अमेरिका के फ्लोरिडा स्थित रोटरी क्लब सरसोटा सनराइज, रो ई मंडल 6960 साझेदार रहा, जबकि 13 अन्य क्लबों ने सह-प्रायोजक के रूप में सहयोग दिया।

पीडीजी जवाहरलाल जैन ने डायरेक्टेड गिफ्ट एंडोमेंट के जरिए सेंटर के लिए आर्थिक सहयोग दिया। यह हाई-टेक सेंटर जन्मजात विकृतियों, चोटों और सिर, खोपड़ी, चेहरे तथा जबड़े को प्रभावित करने वाले ट्यूमर जैसी जटिल क्रेनियोफेशियल समस्याओं से जूझ रहे बच्चों और वयस्कों को विशेषज्ञ चिकित्सा सुविधा देगा।

मुरुगानंदम ने कहा, यह केंद्र केवल इलाज की सुविधा नहीं देगा, बल्कि अनगिनत मरीजों और परिवारों के जीवन में उम्मीद, गरिमा, आत्मविश्वास और बेहतर जीवन की संभावना भी लाएगा। उन्होंने मेजबान क्लब को बधाई दी और डीजी टी एस रविकुमार की ग्लोबल ग्रांट परियोजना के लिए सराहना की।

इससे पहले उन्होंने रो ई मंडल 3000 के रोटरी क्लब उसिलमपट्टी द्वारा स्थानीय सरकारी अस्पताल में स्थापित डायलिसिस यूनिट का उद्घाटन किया। मदुरै के पास थेनी में उन्होंने रोटरी क्लब ऑफ थेनी सेंट्रल जेम्स द्वारा लगाए गए रोटरी स्वागत बोर्ड का भी अनावरण किया, जिसका उद्देश्य तमिलनाडु के दक्षिणी हिस्सों में रोटरी की सार्वजनिक छवि को मजबूत करना है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

सिलाई से बनती आत्मनिर्भर ज़िंदगी

वी मुत्तुकुमारन

ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना रो ई मंडल 3212 के डीजी गांधी कृष्णन की प्राथमिकता है। डीजी-नामित रहते हुए उन्होंने फरवरी 2026 में 120 निर्वाचित क्लब नेताओं के PELS में 1,000 से अधिक सिलाई मशीनें बांटने का लक्ष्य रखा था।

रामनाथपुरम से लेकर कन्याकुमारी तक सात राजस्व जिलों के सभी 124 क्लब इस प्रोजेक्ट में शामिल हैं। रोटेरियन फील्ड वर्क के जरिए लाभार्थियों के नाम जुटाते हैं और सूची बनाकर गवर्नर को भेजते हैं, कहते हैं मंडल सचिव बीजू फिडेलिस।

क्लबों की ओर से कोई व्यावसायिक प्रशिक्षण नहीं दिया जा रहा है। इसलिए यह सुनिश्चित किया जाता है कि चुनी गई महिलाएं पहले से सिलाई जानती हों और मशीन का इस्तेमाल कर अपनी आजीविका कमा सकें। रोटेरियन उनके हुनर, आर्थिक स्थिति और पारिवारिक पृष्ठभूमि की जांच के बाद सही लाभार्थियों का चयन करते हैं।

पहले चरण में 360 सिलाई मशीनें तिरुनेलवेली में हुए TRF सेमिनार में बांटी गईं। डीजी कृष्णन के अनुसार, बाकी दो चरण दिसंबर के अंत तक पूरे कर लिए जाएंगे। जमीनी स्तर पर महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता से पूरा परिवार मजबूत होता है। नियमित आमदनी से घर की आर्थिक स्थिति सुधरती है, बच्चों की पढ़ाई सुरक्षित होती है और आत्मनिर्भरता बढ़ती है। ₹60 लाख के इस प्रोजेक्ट को रोटेरियन फंड कर रहे हैं।

डीजी कृष्णन कहते हैं कि सिलाई मशीनों के जरिए ग्रामीण परिवारों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना ही इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य है। इसका असर पूरे समाज पर पड़ता है।

श्रीविल्लिपुथुर की मुथुलक्ष्मी इसका उदाहरण हैं। तलाक के बाद वह अपनी बेटी और बुजुर्ग माता-पिता के साथ रहती हैं। परिवार की अकेली कमाने वाली सदस्य के रूप में कंपनी में सिलाई प्रशिक्षक की नौकरी से घर चलाना मुश्किल था। वह कहती हैं, अब अपनी सिलाई मशीन से मैं अतिरिक्त कमाई कर पा रही हूं और परिवार की जरूरतें पूरी करने में मदद मिल रही है।

तिरुनेलवेली जिले के कट्टलाई गांव की 43 वर्षीय मरियम्मल की कहानी भी ऐसी ही है। ''सात साल पहले पति की मृत्यु के बाद वह अपनी 70 वर्षीय मां के साथ रह रही हैं। कोई संतान नहीं है। मुझे सिलाई आती है, लेकिन मशीन न होने के कारण मैं काम नहीं कर पा रही थी। अब नई मशीन मिली है और मुझे उम्मीद है कि मैं अच्छी आमदनी कमा सकूंगी।''

पिंक ऑटो

डीजी कृष्णन ने 124 पिंक ऑटो बांटने के लिए तीन चरणों में ₹3 करोड़ के ग्लोबल ग्रांट के लिए आवेदन किया है। रोटरी क्लब लाभार्थियों को ड्राइविंग की ट्रेनिंग देंगे और प्रशिक्षण पूरा होने के बाद उन्हें ऑटो चलाने का लाइसेंस दिलाया जाएगा। कृष्णन कहते हैं, जहां सिलाई मशीनें उन जरूरतमंद महिलाओं को दी जा रही हैं जिन्हें सिलाई आती है, वहीं पिंक ऑटो के लिए विधवाओं, बेसहारा और दूसरों पर निर्भर महिलाओं का चयन किया जाएगा। उन्हें प्रशिक्षण देने के बाद ऑटो दिए जाएंगे। ■

डीजी गांधी कृष्णन (बाएं से चौथे) महिलाओं को सिलाई मशीनें सौंपते हुए। साथ में पीडीजी मुत्तैया पिल्लई, बी आरुमुगपांडियन, चिन्नदुरई अब्दुल्ला, रो ई मंडल 3234 के पीडीजी जे श्रीधर, डीजीई एबेनेश बेंसाम और पीडीजी बी धनशेखर।

तालिबान की तबाही, दुनिया की बेरुखी

रशीदा भगत

पुरस्कार विजेता पत्रकार ज़हरा जोया और एमी फेरिस-रॉटमैन की किताब *द वैनिशिंग गर्ल ऑफ काबुल* (Hachette India) का सार इन पंक्तियों में मिलता है:

तालिबान का दमन सिर्फ कपड़ों या शिक्षा तक सीमित नहीं था। यह महिलाओं को सार्वजनिक जीवन से पूरी तरह मिटा देने के बारे में था। यह स्त्री-विरोध को शासन का आधार बनाने के बारे में था-कंट्रोल, डर और संभावनाओं को खत्म करके शासन करने का एक तरीका।

यह किताब 2021 में अमेरिकी सैनिकों की अफगानिस्तान से वापसी के बाद अफगान महिलाओं पर हुए दमन और हिंसा की एक और दिल दहला देने वाली कहानी है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर तालिबान ने भले ही यह दावा किया हो कि लड़कियों को शिक्षा और महिलाओं को स्वतंत्रता मिलेगी, लेकिन ज़हरा की कहानी बताती है कि जमीन पर हकीकत इसके बिल्कुल उलट थी।

किताब	:	The Vanishing Girl of Kabul
लेखक	:	ज़हरा जोया; सह-लेखक एमी फेरिस-रॉटमैन
प्रकाशक	:	Hachette India
पृष्ठ	:	288
कीमत	:	₹ 799

किताब में अपहरण, हिरासत, मारपीट, यातना, जबरन शादी और बलात्कार की भयावह घटनाएं सामने आती हैं। ब्रिटिश-अमेरिकी पत्रकार और काबुल में रॉयटर्स की पूर्व संवाददाता एमी फेरिस-रॉटमैन भूमिका में लिखती हैं कि यह ज़हरा की कहानी है। दोनों की पहली मुलाकात 2016 में काबुल में एक पत्रकारिता प्रशिक्षण के दौरान हुई थी। तब ज़हरा को अंग्रेजी नहीं आती थी, लेकिन पत्रकारिता को लेकर उसका जुनून साफ था।

शिया हज़ारा समुदाय से आने वाली ज़हरा का बचपन बामियान में बीता। तालिबान के पहले शासन के दौरान वह *बाचा पोश* बनकर स्कूल जाती थी-यानी लड़की होकर लड़के का रूप धारण करती थी। परिवार में बेटियों के जन्म पर मातम मनाया जाता था, जब तक कि आखिरकार एक बेटा पैदा नहीं हुआ।

काबुल आने के बाद ज़हरा ने पढ़ाई के साथ चोरी-छिपे एक समाचार एजेंसी के लिए काम करना शुरू किया। 2020 में, तालिबान की वापसी से एक साल पहले, उसने अपनी न्यूज एजेंसी *रुख्शाना मीडिया* शुरू की।

तालिबान द्वारा पत्रकारों, सैन्य दुभाषियों और सरकारी कर्मचारियों को निशाना बनाए जाने की खबरें आने लगीं तो कई कलाकार, संगीतकार, यूट्यूबर और पत्रकार भूमिगत हो गए। ज़हरा भी घर छोड़कर दोस्तों और रिश्तेदारों के यहां छिपती रही। चेहरा ढककर और जान के खतरे के बीच भी वह अफ़गानिस्तान से विदेशी मीडिया को खबरें भेजती रही। *द गार्जियन* भी उसकी रिपोर्ट प्रकाशित करता था।

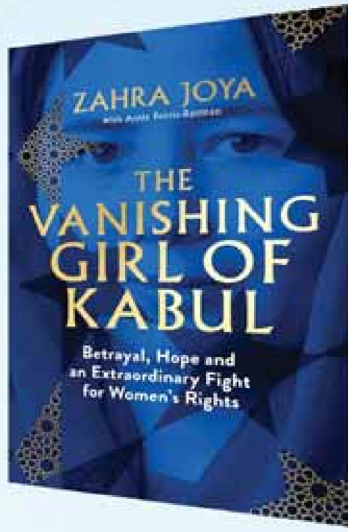

एक सप्ताह के भीतर साफ हो गया कि उसके जैसे सपने देखने वाली एक पूरी पीढ़ी को दुनिया ने अकेला छोड़ दिया था। सैकड़ों अफगान महिलाएं अपने अधिकारों और आजादी के लिए सड़कों पर उतरीं, लेकिन विरोध का बहुत कम असर हुआ।

एमी फेरिस-रॉटमैन ने काबुल में ब्रिटिश राजदूत को ज़हरा की जान के खतरे से अवगत कराया। आखिरकार ज़हरा अपनी तीन बहनों, भाई और भतीजी के साथ ब्रिटिश सैन्य विमान में सैकड़ों अन्य लोगों के साथ अफगानिस्तान से निकलने में सफल हुई।

किताब का बाकी हिस्सा लंदन में नया जीवन शुरू करने वाले भाई-बहनों की कहानी है। ज़हरा, जो सबसे बड़ी हैं, अफगान महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों की रिपोर्टिंग जारी रखती हैं। उनके पास देश में मौजूद कई स्रोतों से लगातार जानकारी आती रहती है, जबकि उनके छोटे भाई-बहन अपनी पढ़ाई आगे बढ़ाते हैं।

ज़हरा की रिपोर्टिंग जल्द ही अंतरराष्ट्रीय पहचान हासिल करती है। 2022 में अमेरिका में गेट्स फाउंडेशन का पुरस्कार लेने के दौरान उनकी मुलाकात नोबेल पुरस्कार विजेता मलाला यूसुफ़जई से हुई। ज़हरा लिखती हैं, हम दोनों का दुश्मन एक ही था-तालिबान।

जब उनसे पूछा गया कि क्या अफ़गान महिलाओं के लिए कोई उम्मीद बाकी है, तो वह अमेरिका की अफ़गानिस्तान से बेरुखी पर अपना गुस्सा छिपा नहीं पातीं। उनका सवाल साफ़ था-क्या अमेरिका अफ़गानिस्तान को पीछे छोड़कर आगे बढ़ गया और भूल गया कि काबुल में उसका दूतावास अब नहीं है और उसके अपने अधिकारी और सैनिक उसे जला-झुलसा छोड़कर चले गए।

अमेरिका की भूमिका और दोहा वार्ता के दौरान अफ़गान सरकार को बातचीत से बाहर रखने को लेकर ज़हरा का गुस्सा पूरी किताब में दिखाई देता है। अफ़गानों, खासकर महिलाओं के भीतर अमेरिकी वादों से मिले 'धोखे' की टीस भी साफ़ महसूस होती है।

यह किताब परेशान करने वाली है, लेकिन पढ़ने के लिए मजबूर करती है। इसमें अफ़गान महिलाओं के खिलाफ़ जारी यौन हिंसा का बेहद प्रत्यक्ष और भयावह चित्रण है। ईरान में मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रही बहार नवरोज मनाने घर लौटती है। तालिबान उसे सीमा पर हिरासत में ले लेते हैं। उसे एक कमरे में ले जाकर गालियां दी जाती हैं, पीटा जाता है, कपड़े उतारे जाते हैं और बार-बार बलात्कार किया जाता है। बेहोश होने के बाद जब उसे होश आता है, तो उसकी रीढ़ की एक हड्डी टूट चुकी होती है और उसे तीन महीने इलाज कराना पड़ता है।

बहार और दूसरी पीड़ित महिलाएं ज़हरा से संपर्क कर अपनी कहानियां बताने लगती हैं। अब तालिबान घरों में घुसकर मां-बेटियों, यहां तक कि छोटी बच्चियों तक का बलात्कार कर रहे थे। इन घटनाओं को लगातार सुनते-सुनते ज़हरा खुद भी गहरे मानसिक आघात और बार-बार आने वाले बुरे सपनों से जूझने लगती हैं।

फिर भी वह लिखना नहीं छोड़तीं। तालिबान अब पीड़ित महिलाओं को धमकाते हैं कि शिकायत करने पर उनके बलात्कार के वीडियो सोशल मीडिया पर डाल दिए जाएंगे। इसी डर के बावजूद और भी महिलाएं सामने आती हैं। ज़हरा की रिपोर्ट अंतरराष्ट्रीय मीडिया में पहुंचती है और महिलाओं के खिलाफ़ अत्याचारों को एकत्र कर अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय (ICC), हेग के सामने रखा जाता है।

आखिरी पन्ना पलटते हुए ऐसा लगता है जैसे अफ़गान महिलाओं की चीखें किताब से निकलकर पूरी दुनिया से सवाल कर रही हों-क्या आप भी हमारी ओर से मुंह मोड़ लेंगे और हमें तालिबान के रहम पर छोड़ देंगे? ■

मैदान पर उतरीं महिला रोटेरियन

टीम रोटरी न्यूज़

राष्ट्रीय खेल दिवस (29 अगस्त) से पहले रोटरी क्लब रायपुर कॉस्मो डिवाज़, रो ई मंडल 3261 ने दो दिवसीय रोटरी इंटरक्लब फेलोशिप विमेंस प्रीमियर लीग (WPL) का आयोजन किया। इसमें चार क्लबों - रायपुर क्वींस, रायपुर एलिगेंस, भिलाई पिनेकल और मेजबान रायपुर कॉस्मो डिवाज़ - की महिला रोटेरियन ने हिस्सा लिया।

क्रिकेट लीग में प्रतिस्पर्धा के साथ दोस्ती और टीम भावना भी देखने को मिली। रोटरी क्लब भिलाई पिनेकल विजेता रहा, जबकि रोटरी क्लब रायपुर एलिगेंस उपविजेता बना।

रायपुर कॉस्मो डिवाज़ की सचिव शिल्पा चोपड़ा ने कहा, रन, विकेट और जीत से कहीं बढ़कर यह लीग उस खुशी के लिए याद रहेगी, जो बल्लेबाजों, गेंदबाजों, विकेटकीपरों, फील्डरों और दर्शकों ने मिलकर बांटी। इन दो दिनों में हमने रोटेरियन होने का जश्न भरपूर मनाया।

WPL के तुरंत बाद एक नई सदस्य भी रोटरी क्लब रायपुर कॉस्मो डिवाज़ से जुड़ीं। ■

क्या तीन दिन किशोरों को नेतृत्व सिखा सकते हैं?

किरण ज़ेहरा

महाराष्ट्र के अकोला में आयोजित तीन दिवसीय रोटरी यूथ लीडरशिप अवॉर्ड (RYLA) कैंप की पहली चुनौती का नेतृत्व से कोई सीधा संबंध नहीं था। ''छात्रों को अपने फोन जमा करने थे और दूसरे स्कूलों के छात्रों के साथ कमरे साझा करने थे। अपने स्कूल के दोस्तों के बीच रहने वाले किशोरों के लिए यह एक नया अनुभव था। कक्षा 9 से 12 तक के 100 से अधिक छात्रों को अलग-अलग गतिविधियों में मिलकर काम करना था। शुरुआत में काफी नोकझोंक हुई, लेकिन तीन दिन बाद यही बच्चे पूछ रहे थे कि कैंप कुछ दिन और क्यों नहीं चल सकता,'' बताते हैं रो ई मंडल 3030 के रोटरी क्लब ऑफ अकोला मिडटाउन के सदस्य और RYLA समन्वयक मोहित अग्रवाल।

उन्होंने बताया कि छात्रों ने बिना आग के मास्टरशेफ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया, काल्पनिक प्रोडक्ट्स की प्रस्तुति दी, मंच पर परफॉर्म किया और नेतृत्व, संवाद, टीमवर्क, योग व मंच पर आत्म विश्वास जैसे विषयों पर सत्रों में भाग लिया। उन्होंने अलग-अलग चुनौतियों पर टीम के रूप में भी काम किया। *Metamorphosis 2026* नाम के इस तीन दिवसीय RYLA की फीस ₹8,500 प्रति छात्र थी, जिसे क्लब ने सब्सिडी देकर ₹5,000 किया।

अग्रवाल तीन दिनों को "परिवर्तनकारी" कहने से बचते हैं। ''तीन दिन निश्चित रूप से पर्याप्त नहीं हैं। हमारा उद्देश्य 72 घंटे में किशोरों को तैयार नेता बनाना नहीं था। हमने ऐसी गतिविधियां तैयार की थीं, जिनसे वे हिस्सा लें, एक-दूसरे की बात सुनें, टीम में काम करें और समस्याओं को हल करने की जिम्मेदारी लें।'' कार्यक्रम में प्रेजेंटेशन, वीडियो, डेमोंस्ट्रेशन और मंच से जुड़ी गतिविधियों का इस्तेमाल किया गया।

अग्रवाल कहते हैं, इस कार्यक्रम के पीछे मूल विचार यह था कि नेतृत्व का मतलब हमेशा दूसरों को निर्देश देना नहीं है। सबसे पहले एक अच्छा श्रोता बनना जरूरी है। नेतृत्व यानी टीम को समझना, संवाद करना और हर सदस्य की क्षमता को सामने लाना।

शिक्षाविद और कॉरपोरेट ट्रेनर शीतल गांधी ने कैंप के सभी सत्रों का समन्वय किया। उनके लिए किसी बड़े बदलाव से ज्यादा छोटे बदलाव मायने रखते हैं। उन्होंने देखा कि पहले सत्र में कुछ छात्र बोलने से झिझक रहे थे, लेकिन अगले सत्र तक उनमें से कुछ ने हिस्सा लेना शुरू कर दिया।

बिना आग के मास्टरशेफ प्रतियोगिता में हिस्सा लेते छात्र।

RYLA किंग रिशोन और RYLA क्वीन ख्याति, रोटेरियन और अन्य RYLA प्रतिभागियों के साथ।

हाथ उठाना, लोगों के सामने बोलना या किसी अनजान गतिविधि में हिस्सा लेने का फैसला भी बदलाव की शुरुआत हो सकता है, वह कहती हैं।

कैंप ने छात्रों को एक-दूसरे से विचार साझा करने का मौका भी दिया। सोचिए, 100 छात्रों के आपस में जुड़ने से कितनी संभावनाएं पैदा हो सकती हैं। छात्र सिर्फ ट्रेनरों से जानकारी नहीं ले रहे थे, बल्कि अलग-अलग विचारों, अनुभवों और समस्याओं को देखने के तरीकों वाले दर्जनों साथियों के साथ भी बातचीत कर रहे थे।

उनके अनुसार, यह आपसी संवाद औपचारिक सत्रों जितना ही महत्वपूर्ण हो सकता है।

लेकिन तीन दिवसीय RYLA का असर कितने समय तक रहता है? इस सवाल पर गांधी कहती हैं, इसका जवाब कैंप खत्म होने के बाद मिलता है। इसे एक अलग अनुभव के रूप में नहीं देखना चाहिए। अगर इन 100 छात्रों को इंट्रेक्ट या रोटरेक्ट से जोड़ा जाए और नेतृत्व कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी जारी रहे, तो यह तय कर सकता है कि तीन दिन का अनुभव स्कूल से मिली एक छोटी-सी छुट्टी बनकर रह जाता है या उसका असर लंबे समय तक रहता है।

कैंप में बनी दोस्ती, अपनी बात रखने का आत्मविश्वास और अनजान लोगों के साथ काम करने का अनुभव तभी टिकेगा जब छात्रों को इन कौशलों को दोबारा आजमाने के मौके मिलते रहें।

अग्रवाल कहते हैं कि स्कूलों में नेतृत्व के अवसर अक्सर कुछ ही छात्रों तक सीमित रहते हैं, जबकि RYLA हर प्रतिभागी को नेतृत्व करने का मौका देता है। इन छात्रों को इंट्रेक्ट और रोटरेक्ट से जोड़ना एक शानदार विचार है। अब देखना होगा कि इसे कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है।

खेल में हिस्सा लेते छात्र।

यह RYLA अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों के छात्रों के लिए था और इसमें फीस भी ली गई। अक्टूबर में होने वाला अगला RYLA ग्रामीण और कम आय वाले परिवारों के छात्रों पर केंद्रित होगा। हम ऐसे ट्रेनर और वक्ता बुलाने की योजना बना रहे हैं, जो हिंदी में सत्र ले सकें, ताकि छात्र अपनी सहज भाषा में बेहतर तरीके से जुड़ सकें।

अग्रवाल कहते हैं कि ग्रामीण कार्यक्रम से यह भी पता चलेगा कि अलग प्रतिभागियों, भाषा और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में यही मॉडल कितना प्रभावी रहता है।

कार्यक्रम में IAS अधिकारी और लीडरशिप ट्रेनर हर्ष पोद्दार ने भी सत्र लिया। वह हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के पूर्व छात्र हैं। Habuild के संस्थापक सौरभ बोथरा ने मेडिटेशन सत्र लिया और छात्रों को किसी गतिविधि से पहले मानसिक रूप से तैयार होने तथा उसके बाद खुद को शांत करने की तकनीकें सिखाईं। स्थानीय विधायक आशीष देशमुख ने नेतृत्व के दौरान चुनौतियों का सामना करने पर छात्रों से बात की।

RYLA किंग और RYLA क्वीन चुने गए रिशोन और ख्याति को कैंप की ओर से आयोजित पॉडकास्ट होस्ट करने का मौका मिला। 15 वर्षीय ख्याति कहती हैं, हमने नेतृत्व और इस बात पर चर्चा की कि युवा अब नेतृत्व को सिर्फ एक व्यक्ति की उपलब्धि नहीं, बल्कि पूरी टीम की सामूहिक कोशिश के नतीजे के रूप में देखते हैं। ■

विशेष बच्चों के लिए रोटरी ओलंपियाड

वी मुत्तुकुमारन

रोटरी मंडल 3233 द्वारा आयोजित रोटरी ओलंपियाड में 1,000 से अधिक विशेष बच्चों के लिए रविवार का दिन उत्साह और उमंग से भरा रहा। दिव्यांग बच्चों के लिए आयोजित इस एथलेटिक मीट में हर बच्चा विजेता था, डिस्ट्रिक्ट यूथ सर्विस डायरेक्टर विनोद नायर ने कहा।

बच्चों ने अपनी शारीरिक सीमाओं को पीछे छोड़ते हुए पूरे उत्साह के साथ दौड़ में हिस्सा लिया। उन्हें देखकर सैकड़ों रोटरी स्वयंसेवक, शिक्षक और माता-पिता तालियां बजाकर उनका हौसला बढ़ाते रहे। सभी प्रतिभागियों को पदक और प्रमाणपत्र दिए गए। इनमें 240 व्यक्तिगत खिलाड़ी थे, जबकि बाकी चेन्नई के विशेष बच्चों के लिए काम करने वाले स्कूलों, संस्थानों, घरों और NGOs से आए थे।

उद्घाटन समारोह में तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री के जी अरुणराज ने कहा कि समाज को विशेष जरूरतों वाले लोगों के लिए अनुकूल माहौल और सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए। ऐसे आयोजन बच्चों के सपनों को पूरा करने में मदद करते हैं। उन्होंने कहा, हर विशेष बच्चे में कोई न कोई प्रतिभा होती है। एक समावेशी समाज के लिए हमें उनके प्रति अपना नजरिया बदलना होगा।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार हर ब्लॉक में वन-स्टॉप सेंटर और जिला मुख्यालयों पर अर्ली इंटरवेंशन सेंटर स्थापित करने की योजना बना रही है। इन केंद्रों के जरिए दिव्यांग बच्चों की पहचान कर उन्हें

शुरुआती स्तर पर उपचार, काउंसलिंग और प्रशिक्षण दिया जाएगा, ताकि वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकें। प्रोजेक्ट चेयर कार्तिक कृष्णन थे।

पिछले साल इसी स्थल पर आयोजित "यूनाइटेड चेन्नई" कार्यक्रम में 150-200 विशेष बच्चे शामिल हुए थे। डीजी श्रीराम दुव्वुरी ने कहा कि उसी कार्यक्रम से रोटरी ओलंपियाड आयोजित करने की प्रेरणा मिली। आने वाले महीनों में जिला क्लब विशेष जरूरतों वाले बच्चों का हौसला बढ़ाने के लिए कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित करेंगे।

उन्होंने यह भी बताया कि जिला क्लब जल्द ही 64 एंबुलेंस में AED (ऑटोमेटेड एक्सटर्नल डिफिब्रिलेटर) लगाएंगे, ताकि हार्ट अटैक के मरीजों को आपातकालीन सहायता मिल सके।

एक विशेष बच्चे की मदद करते रोटरी स्वयंसेवक।

सामूहिक प्रयास

विनोद नायर के अनुसार, रो ई मंडल 3233 के सभी 90 क्लबों ने आयोजन में योगदान दिया। क्लब सदस्यों ने स्वयंसेवक के रूप में काम किया या आयोजन के खर्च का एक हिस्सा प्रायोजित किया।

उन्होंने Rotary News से कहा कि यह आयोजन सरकार और आम लोगों के लिए भी एक सीख है कि विशेष बच्चों को बेहतर सुविधाएं मिलें, ताकि वे राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी बनने का सपना पूरा कर सकें।

उन्होंने कहा, पश्चिमी देशों में सरकारें विशेष बच्चों की जरूरतों और रोजमर्रा की चुनौतियों का जीवनभर ध्यान रखती हैं, ताकि वे अपनी पूरी क्षमता हासिल कर सकें। हमें भी अपने देश में ऐसा ही माहौल तैयार करना होगा।

पश्चिमी देशों में सरकारें विशेष बच्चों की जरूरतों का जीवनभर ध्यान रखती हैं। हमें भी अपने देश में ऐसा ही करना होगा।

विनोद नायर
डिस्ट्रिक्ट यूथ सर्विस डायरेक्टर

तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री के जी अरुणराज,उनके दाएं रो ई मंडल 3233 डीजी श्रीराम दुव्वुरी और बाएं डिस्ट्रिक्ट यूथ सर्विस डायरेक्टर विनोद नायर (पीछे), आयोजन चेयर कार्तिक कृष्णन और इम्तियाज़ बाशा (दाएं) हैं।

राष्ट्रीय स्पेशल ओलंपिक्स 2025 में बैडमिंटन की स्वर्ण पदक विजेता वी श्रीनिवासन (17) और कांस्य पदक विजेता ए संध्या (18) को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। सेरेब्रल पाल्सी और ऑटिज्म से प्रभावित होकर एक वाणिज्यिक बैंक में असिस्टेंट मैनेजर के रूप में काम कर रहे गुरुप्रसाद स्वामी को भी सम्मानित किया गया। वहीं, बौद्धिक अक्षमता से जूझ रहे अपने विशेष बच्चे को बैंक अधिकारी के स्तर तक पहुंचाने वाली मां बामा एस को भी प्रशस्ति-पत्र दिया गया। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

कन्वेंशन से आगे बढ़ी एक दोस्ती

किरण ज़ेहरा

2026 ताइपेई कन्वेंशन में बूथ 635 पर कई चीज़ों ने मा युन का ध्यान खींचा। यह बूथ रो ई मंडल3011 के रोटरी क्लब दिल्ली साउथ ईस्ट के सदस्य नीरज भटनागर ने लगाया था। चार साल पुराने रोटरी क्लब ताइपेई ट्विन-स्टार, रो ई मंडल 3482 की आगामी अध्यक्ष युन खुद को बिगिनर रोटेरियन कहती हैं। उन्हें रोटरी क्लब ऑफ दिल्ली साउथ ईस्ट के काम ने खासा प्रभावित किया। क्लब की पर्यावरण संबंधी पहल, सामुदायिक परियोजनाएं और खास तौर पर *rotariansforautism.com* ने उनका ध्यान खींचा।

यह पहल दो साल पहले शुरू हुई थी, जब रो ई मंडल 3234 के रोटरी क्लब ऑफ मद्रास ने दिल्ली में ऑटिज्म पर जागरूकता सत्र और सेमिनार आयोजित करने में मदद मांगी थी। भटनागर ने इस विचार को आगे बढ़ाते हुए एक ऐसा प्लेटफॉर्म बनाया, जिसमें चेन्नई, श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया के पांच रोटरी क्लब जुड़े। आज यह ऑटिज्म, मानसिक स्वास्थ्य और समावेशन के लिए रोटरी की अगुवाई वाला एआई इकोसिस्टम बन चुका है।

भटनागर ने ताइपेई कन्वेंशन को इस पहल को रोटरी के बड़े समुदाय तक पहुंचाने के अवसर के रूप में देखा। वे कहते हैं, हम चाहते थे कि लोग जानें कि हमारा क्लब क्या कर रहा है और यह देखें कि वे इसमें कैसे शामिल हो सकते हैं।

2023 में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में हुए रो ई कन्वेंशन में ESRAG (Environmental Sustainability Rotary Action Group) वॉलंटियर के रूप में हिस्सा लिया था। अगले साल सिंगापुर कन्वेंशन में उन्होंने ₹5 लाख की लागत से दो स्टॉल लगाए। एक स्टॉल *onemillionmindfulactions.com* को समर्पित था, जिसका उद्देश्य कन्वेंशन में आए लोगों को पर्यावरण के लिए छोटे-छोटे कदम उठाने के लिए प्रेरित करना था - जैसे घर के पौधों को पानी देना - और उस काम की तस्वीर लेकर उसे रिकॉर्ड करना।

दूसरे स्टॉल पर ऊर्जा संबंधी परामर्श दिया गया। इसमें उनके क्लब के सदस्य अजय गुप्ता द्वारा

नवस्थापित वाटर कूलर से अपनी पानी की बोतलें भरती छात्रायें।

विकसित ग्रीन टेक्नोलॉजी को प्रदर्शित किया गया, जो ठोस कचरे को पावर प्लांट में इस्तेमाल होने वाले ग्रीन कोल में बदलती है।

ताइपेई कन्वेंशन में भटनागर ने Climate Belongs To All पर एक ब्रेकआउट सत्र आयोजित किया। *www.climatebelongstoall.com* एक वैश्विक रोटरी प्लेटफॉर्म है, जिसे 54 रो ई मंडलों का समर्थन प्राप्त है और जो जलवायु कार्रवाई के लिए रोटरी क्लबों और सदस्यों को एक साथ लाता है। सत्र में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से आठ वक्ताओं ने हिस्सा लिया और 400 रोटेरियन इसमें शामिल हुए।

भटनागर ने महसूस किया कि पिछले कुछ वर्षों में कन्वेंशन में होने वाली बातचीत भी बदल गई है। वे कहते हैं, लोग अब सिर्फ परियोजनाओं को देख नहीं रहे थे; वे उनके बारे में चर्चा कर रहे थे और यह पूछ रहे थे कि वे इनमें कैसे शामिल हो सकते हैं।

युन अलग-अलग रोटरी पहलों में किस तरह जुड़ सकती हैं, यह समझना चाहती थीं। उन्होंने भटनागर से परियोजनाओं, क्लब और इस बारे में विस्तार से पूछा कि अलग-अलग देशों के रोटेरियन मिलकर किस तरह काम कर सकते हैं।

मा युन कहती हैं, नीरज पांच कन्वेंशन में हिस्सा ले चुके हैं और 14 रोटरी एक्शन ग्रुप (RAGs) से जुड़े हैं। रोटरी के बारे में उनका ज्ञान वाकई अद्भुत है। ताइपेई कन्वेंशन के बाद मा युन *climatebelongstoall.com* से जुड़ीं और तीन RAGs की सदस्य बन गईं।

जब भटनागर कन्वेंशन से लौटने के लिए अपना सामान पैक कर रहे थे, तब मा युन उन्हें मुख्य गेट तक छोड़ने गईं। भटनागर कहते हैं, कन्वेंशन में सैकड़ों लोग आपसे मिलते हैं, लेकिन बहुत कम लोग आपको गेट तक छोड़ने आते हैं। उनका इस तरह मुझे गेट तक छोड़ने आना दिल से था।

जुलाई में झच् श्री केंद्रीय विद्यालय, फरीदाबाद की प्रिंसिपल ममता शेखर ने रोटरी क्लब ऑफ दिल्ली साउथ ईस्ट से दो पेयजल कूलर लगाने में मदद मांगी। स्कूल में 1,100 से अधिक छात्र हैं और उन्हें साफ पीने का पानी उपलब्ध कराने में दिक्कत हो रही थी। क्लब पहले भी स्कूल के साथ जल संरक्षण परियोजना पर काम कर चुका था और वहां एक मेडिकल रूम बनाने में भी मदद की थी।

मा युन के साथ नीरज भटनागर।

इस बार भटनागर को लगा कि मा युन के साथ बनी नई दोस्ती को इस परियोजना से जोड़ने का यह अच्छा मौका है। ताइपेई से लौटने के बाद भी दोनों रोटरी की पहलों पर बातचीत करते रहे थे और स्कूल की यह परियोजना उन चर्चाओं को सहयोग में बदलने का एक सरल अवसर थी।

वे कहते हैं, मुझे पता था कि पानी के कूलर की यह परियोजना वैसे भी हो जाएगी। लेकिन मैंने सोचा, क्यों न इसे एक अंतरराष्ट्रीय सहयोग बनाया जाए? उन्होंने परियोजना के लिए एक फ्लायर तैयार किया और सुझाव दिया कि उसमें रोटरी क्लब ऑफ ताइपेई ट्विन-स्टार का नाम भी शामिल किया जाए। यह ग्लोबल ग्रांट परियोजना नहीं थी और न ही किसी आर्थिक सहयोग की मांग की गई थी। दोनों कूलर लगाने की ₹1.5 लाख की पूरी लागत रोटरी क्लब ऑफ दिल्ली साउथ ईस्ट ने वहन की।

इस तरह दोनों क्लबों ने परियोजना का खर्च साझा नहीं किया, बल्कि परियोजना को साझा किया। भटनागर कहते हैं, मेरे लिए सहयोग का मतलब यह नहीं है कि किसने कितना पैसा लगाया। इसका मतलब है कि मिलकर किसी काम के प्रति जिम्मेदारी और अपनापन पैदा करना।

इसका नतीजा था 150 लीटर प्रति घंटे (LPH) क्षमता वाले दो पेयजल कूलर, जिनमें छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए चार नल हैं। इस तरह बिना किसी आर्थिक लेन-देन के दोनों क्लबों के बीच एक अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी कायम हुआ।

भटनागर यह दिखाना चाहते थे कि कोई भारतीय रोटरी क्लब केवल साझेदारी और दोस्ती की भावना से किसी सेवा परियोजना में किसी विदेशी रोटरी क्लब को भी शामिल कर सकता है। उन्हें उम्मीद थी कि इससे अंतरराष्ट्रीय सहयोग के प्रति अधिक समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलेगा और भारतीय रोटरी क्लबों की एक मजबूत पहचान बनेगी।

वे कहते हैं, मा युन ने इस पहल को दोहराने का वादा किया है। वे आगे कहते हैं, अब 1,100 छात्रों को साफ पीने का पानी मिल रहा है और हमारे दोनों क्लबों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी हुआ है। यह सहयोग किसी आर्थिक लेन-देन पर नहीं, बल्कि उस दोस्ती पर बना है जो कन्वेंशन खत्म होने के बाद भी कायम रही। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रो ई मंडल 3191 ने कृषि सम्मेलन आयोजित किया

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3191 के रोटरी इंटरसिटी सिनर्जी एक्सचेंज के तहत रोटरी क्लब बेंगलुरु मल्हार ने *रोटरी रैतारा सम्मेलन* आयोजित किया। इसमें कर्नाटक के विभिन्न हिस्सों से करीब 600 किसान शामिल हुए और कृषि वैज्ञानिकों, उद्यमियों, नवोन्मेषकों, स्टार्टअप्स तथा ग्रामीण विकास विशेषज्ञों से जुड़े।

तत्कालीन डीजी बी आर श्रीधर ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। इसमें किसानों को नई तकनीकों, टिकाऊ खेती और ग्रामीण उद्यमिता के अवसरों से परिचित कराया गया। ड्रोन के जरिए फसल की निगरानी, सटीक छिड़काव और पोषक तत्वों के प्रबंधन का लाइव प्रदर्शन भी किया गया।

प्राकृतिक खेती, माइक्रोग्रीन्स, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, मृदा स्वास्थ्य, कृषि उद्यमिता, ग्रामीण स्टार्टअप और कृषि में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे विषयों पर सत्र हुए।

क्लब अध्यक्ष वी जे सजीव ने कहा कि सम्मेलन का जोर व्यावहारिक और खेत-केंद्रित सीख तथा नई तकनीकों को अपनाने पर था। विशेषज्ञों ने रासायनिक उर्वरकों और बाहरी कृषि संसाधनों पर निर्भरता कम करने के साथ मृदा स्वास्थ्य, जैव विविधता और जल संरक्षण पर जोर दिया।

वैश्विक आर्थिक और भू-राजनीतिक बदलावों का खेती पर असर भी चर्चा का विषय रहा। विशेषज्ञों ने कहा कि स्थानीय कृषि व्यवस्था को मजबूत करना और टिकाऊ खेती अपनाना

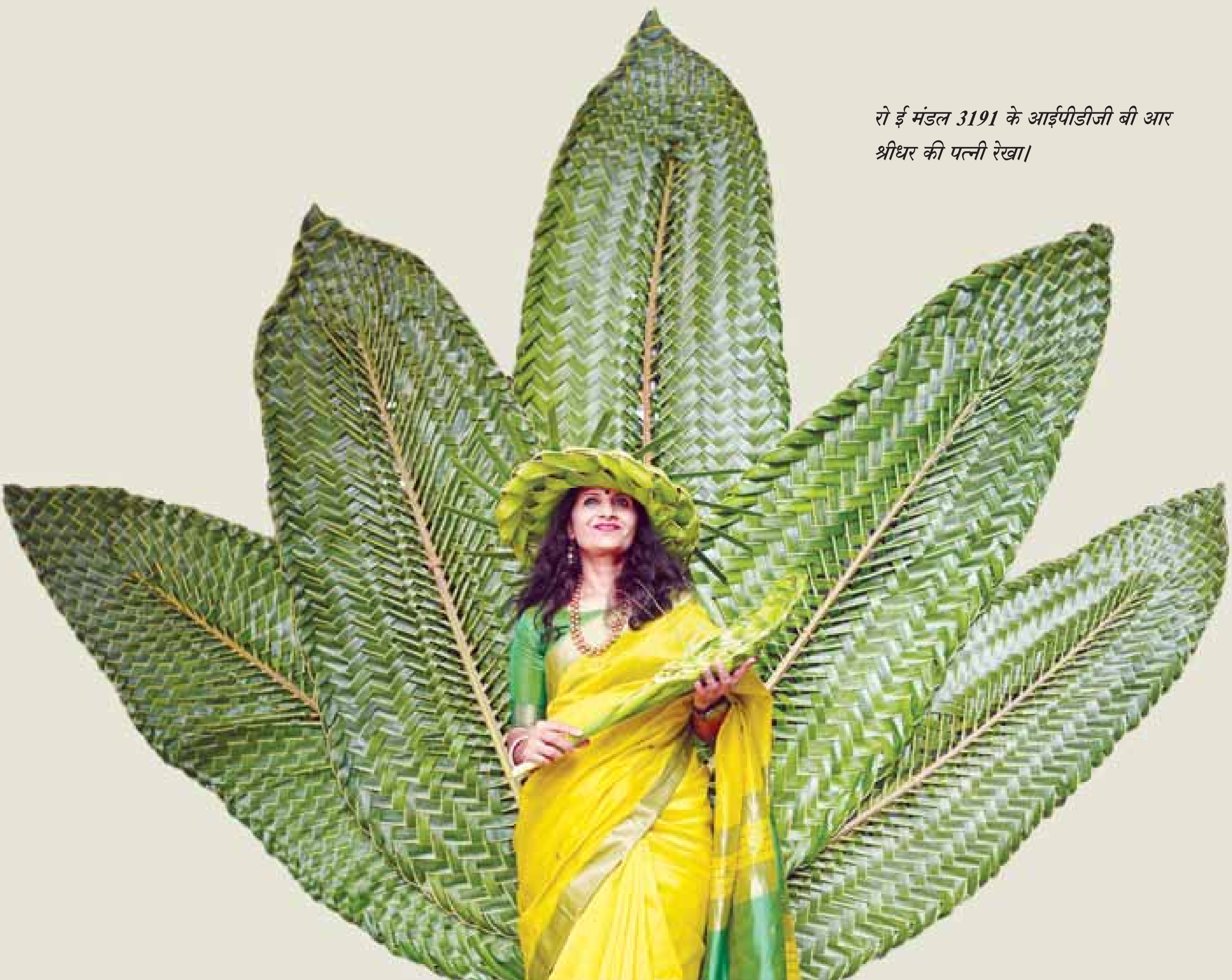

रो ई मंडल 3191 के आईपीडीजी बी आर श्रीधर की पत्नी रेखा।

किसानों के साथ ड्रोन का प्रदर्शन देखते आईपीडीजी बी आर श्रीधर (बाएं) और रोटेरियन। रोटरी क्लब बेंगलुरु मल्हार के अध्यक्ष वी जे सजीव (दाएं से तीसरे) भी चित्र में शामिल हैं।

किसानों को बढ़ती लागत और वैश्विक आपूर्ति में होने वाले बदलावों से निपटने में मदद कर सकता है।

कर्नाटक राज्य रैता संघ, UAS Alumni Association और रोटरी क्लब बेंगलुरु उपकार, बेंगलुरु HSR, अट्टीबेले सरजापुर, राम नगरम, बेंगलुरु जे पी नगर, बेंगलुरु पामविल और बेंगलुरु स्पंदना ने सम्मेलन में सहयोग दिया। ■

सिंगापेन मैराथन ने HPV टीकाकरण का संदेश दिया

चेन्नई में आयोजित सिंगापेन मैराथन में 3,000 से अधिक महिलाओं और लड़कियों ने हिस्सा लिया। इसका उद्देश्य सर्वाइकल कैंसर से बचाव और महिलाओं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना था।

नल्लम्मई रामनाथन की पहल पर आयोजित इस कार्यक्रम का आयोजन रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल, रो ई मंडल 3234 और मंडल के इनर व्हील क्लबों ने तमिलनाडु सरकार की नवगठित सिंगापेन स्पेशल फोर्स के साथ मिलकर किया।

सिंगापेन स्पेशल फोर्स की प्रमुख और पुलिस महानिरीक्षक के भावानीश्वरी ने महिलाओं को 1091 हेल्पलाइन जैसी सुरक्षा सेवाओं का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया। पीडीजी एसवीआरएम अबिरामी रामनाथन ने सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए व्क्षत टीकाकरण के महत्व पर बात की।

डीजी डी सुरेश जैन, पीडीजी विनोद सरावगी, जे श्रीधर और एन एस सरवनन, डीजीएन रवि सुंदरासन, क्लब अध्यक्ष श्रीधर कृष्णास्वामी तथा रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल की सिंगापेन समिति और इनर व्हील के सदस्य मौजूद रहे।■

सिंगापेन मैराथन को हरी झंडी दिखातीं पुलिस महानिरीक्षक के भावानीश्वरी। (दाएं से) डीजी डी सुरेश जैन, पीडीजी विनोद सरावगी, नल्लम्मई रामनाथन, रोटरेक्टर मीनाक्षी पेरियाकरुप्पन, पीडीजी अबिरामी रामनाथन और रोटरी क्लब मद्रास टी नगर की पूर्व अध्यक्ष मीनाक्षी पेरियाकरुप्पन।

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

असीम कांति अधिकारी
स्त्री रोग विशेषज्ञ, रोटरी क्लब बोलपुर-सांतिनिकेतन
रो ई मंडल 3240

पूर्वोत्तर में रोटरी को मजबूत करना

चिकित्सा सेवा से जुड़े डॉ असीम अधिकारी का मानना है कि आठ पूर्वोत्तर राज्यों और उत्तर बंगाल में रोटरी के सदस्य और सेवा परियोजनाएं बढ़ाने की काफी संभावनाएं हैं। रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम से चर्चा के बाद उन्होंने "ग्रोथ स्ट्रैटेजी" पर काम करने के लिए पांच सदस्यीय टीम बनाई है, जिसमें आईपीडीजी कामेश्वर एलांगबाम, डीजीई डैनी दत्ता, डीजीएन पल्लवी माजी और डीजीएनडी शामिल हैं।

1 जुलाई को मंडल में 97 क्लब और 3,600 सदस्य थे। अधिकारी का लक्ष्य सदस्यता में 10 प्रतिशत शुद्ध वृद्धि और 10 नए रोटरी क्लब बनाना है। फिलहाल 50 प्रतिशत क्लब एम्बर जोन, 35 प्रतिशत रेड और 15 प्रतिशत ग्रीन जोन में हैं। अगले तीन वर्षों में 40 प्रतिशत एम्बर क्लबों को ग्रीन जोन में लाने और सभी रेड क्लबों को एम्बर जोन तक पहुंचाने की योजना है।

वह कहते हैं, अभी तक मेरे क्लबों से ग्लोबल ग्रांट परियोजना का कोई प्रस्ताव नहीं मिला है।

विशेष बच्चों के 1,000 से अधिक माता-पिता के लिए कम से कम 12 ऑटिज्म जागरूकता अभियान आयोजित किए जाएंगे। ₹1.5 लाख की इस परियोजना में जिला डिस्ट्रिक्ट ग्रांट और रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3240 फाउंडेशन से मदद मिलेगी। अस्पतालों के सहयोग से 5,000 छात्राओं के लिए क्षत टीकाकरण अभियान भी चलाया जाएगा, जिसकी लागत CSR ग्रांट और सदस्य योगदान से ₹60 लाख होगी। 1999 में रोटरी से जुड़े अधिकारी का TRF के लिए 400,000 डॉलर जुटाने का लक्ष्य है।

जोशी चाको
मैकेनिकल इंजीनियर
रोटरी क्लब पेरुंबावूर सेंट्रल
रो ई मंडल 3205

स्वास्थ्य सेवाओं पर फोकस

अपने इंस्टॉलेशन समारोह में जोशी चाको ने रोटरी के विभिन्न फोकस क्षेत्रों में ₹8 करोड़ की 10 ग्लोबल ग्रांट परियोजनाएं शुरू कीं। उनका लक्ष्य अगले जून तक सदस्य संख्या 350 बढ़ाकर 4,100 करना और 10-15 नए क्लब बनाकर कुल संख्या 120 तक पहुंचाना है।

प्रोजेक्ट सूर्य के तहत ₹2.2 करोड़ के CSR ग्रांट से 2,000 दृष्टिबाधित युवाओं को 600 स्मार्ट केन, 600 स्मार्ट ग्लास और कंप्यूटर का डिजिटल प्रशिक्षण दिया जाएगा। *प्रोजेक्ट आई ब्लीड* के तहत कोचि के सरकारी अस्पताल में 36,000 डॉलर की लागत से पूरी तरह स्वचालित CLIA सिस्टम लगाया जाएगा। इससे अत्यधिक मासिक रक्तस्राव की समय पर पहचान और उपचार में मदद मिलेगी तथा हर साल करीब 3,000 महिलाओं को लाभ होगा। कोचि के पास पेरुंबलम स्थित सरकारी अस्पताल में ₹1.25 करोड़ की ग्लोबल ग्रांट से डिजिटल मैमोग्राफी मशीन और दो डायलिसिस मशीनें लगाई जाएंगी। इससे सालाना करीब 9,500 मरीजों को लाभ मिलेगा।

मुलंथुरुथी के ए पी वार्की मिशन अस्पताल में 62,000 डॉलर की ग्लोबल ग्रांट से डिजिटल एक्स-रे मशीन लगाई जाएगी, जिससे करीब 4,500 मरीजों को कम रेडिएशन के साथ जांच की सुविधा मिलेगी।

2008 में रोटरी से जुड़े चाको ने 2012-13 में एजी के रूप में काम किया और लगातार छह वर्षों तक मंडल ढक्र वाइस-चेयर रहे। उनका ढक्र के लिए 10 लाख डॉलर जुटाने का लक्ष्य है। वह कहते हैं, "दूसरों की सेवा करने की खुशी मुझे रोटरी में सक्रिय रहने के लिए प्रेरित करती है।"

सबसे बड़े रो ई मंडल का बड़ा लक्ष्य

आर सुब्रमणि कहते हैं कि सदस्यता में उनका मंडल दुनिया का सबसे बड़ा रो ई मंडल है। आठ राजस्व मंडल में बड़ी ग्रामीण आबादी को देखते हुए सेवा परियोजनाओं की योजना बनाना उनके लिए खास चुनौती है। ''सदस्य संख्या के लिहाज से हम दुनिया के सबसे बड़े रो ई मंडल हैं। हमारी चुनौती यह है कि सामुदायिक परियोजनाएं बनाते समय हमें अपने आठ राजस्व जिलों की विविध आबादी और बड़ी ग्रामीण जनसंख्या को ध्यान में रखना होगा,'' वह कहते हैं।

उनका लक्ष्य अगले जून तक 50 नए रोटरी क्लब बनाना और 2,500 नए सदस्य जोड़ना है। अगस्त में ही 41 नए क्लब बन चुके हैं और 1,500 नए सदस्य जुड़े हैं। मंडल की कुछ प्रमुख परियोजनाएं हैं - सभी प्रकार के स्कूलों में 50 जेंडर-सेपरेटेड शौचालय ब्लॉक (₹3.5 करोड़), ग्रामीण क्षेत्रों में 10 सामुदायिक शौचालय (₹1.5 करोड़) और दिव्यांग बच्चों के 100 विशेष स्कूलों में स्मार्ट क्लासरूम (₹1.6 करोड़)।

मेगा ग्रीनिंग अभियान के तहत 2.5 लाख से अधिक पौधे लगाकर 5-6 मियावाकी वन तैयार किए जाएंगे। 2.5 करोड़ रुपए की यह परियोजना CSR ग्रांट से पूरी होगी। 2011 में रोटरी से जुड़े सुब्रमणि का TRF के लिए 2 मिलियन डॉलर जुटाने का लक्ष्य है। वह रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट की कार्यकारी परिषद के सचिव भी हैं। सुब्रमणि कहते हैं, ''मैं प्रभावशाली सेवा परियोजनाओं के लिए पूरी मेहनत करता हूं। हर परियोजना की सफलता मुझे इससे भी बड़े प्रोजेक्ट करने के लिए प्रेरित करती है।''

आर सुब्रमणि
होटल व्यवसायी, रोटरी क्लब
तिरुचिरापल्ली डायमंड सिटी
रो ई मंडल 3000

अनु नारंग
रेस्तरां व्यवसायी
रोटरी क्लब ऑफ धनबाद
रो ई मंडल 3250

10 एकल विद्यालय गोद लेने की योजना

2002 में रोटरी से जुड़ीं अनु नारंग इसे अपना विस्तारित परिवार मानती हैं। उनके अनुसार, मंडल, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बने रोटेरियन मित्र ही उन्हें सेवा के लिए लगातार प्रेरित करते हैं।

1 जुलाई को 120 क्लबों और 4,500 सदस्यों के साथ शुरुआत करते हुए उनका लक्ष्य सदस्यता में 10 प्रतिशत शुद्ध वृद्धि और 10 नए रोटरी क्लब बनाना है। इसके अलावा 25 रोटरेक्ट क्लब और 100 इंटरेक्ट क्लब बनाने तथा करीब 650 नए रोटरेक्टर जोड़ने की योजना है।

पटना के एक चैरिटी अस्पताल में 45,000 डॉलर की ग्लोबल ग्रांट से ह्यूमन मिल्क बैंक बनाया जाएगा। चार अस्पतालों में 40,000 डॉलर प्रत्येक की लागत से डायलिसिस सेंटर स्थापित किए जाएंगे।

रेलवे स्टेशनों, बस टर्मिनलों और शॉपिंग मॉल में कम से कम 10 स्तनपान कक्ष भी बनाए जाएंगे। इसकी ₹5 लाख की लागत क्लब सदस्य वहन करेंगे।

करीब 100 सड़क किनारे विक्रेताओं को ₹20,000 की लागत वाले पुश कार्ट दिए जाएंगे, ताकि वे अपना कारोबार बढ़ा सकें।

सबसे खास पहल है 10 एकल विद्यालयों को गोद लेना। एक शिक्षक द्वारा संचालित इन ग्रामीण स्कूलों में जिला ग्रांट और क्लब के सहयोग से ₹3-4 लाख खर्च कर कक्षाओं में सुधार किया जाएगा।

अनु का TRF के लिए 1 मिलियन डॉलर जुटाने का लक्ष्य है। वह कहती हैं, देशभर के रोटेरियन दोस्तों से जुड़कर मुझे इन वर्षों में जरूरतमंदों तक पहुंचने और उनकी सेवा करने का अवसर मिला है। ■

पटना के एक चैरिटी अस्पताल में 45,000 डॉलर की ग्लोबल ग्रांट से ह्यूमन मिल्क बैंक बनाया जाएगा। साथ ही, विभिन्न राजस्व जिलों के सरकारी या चैरिटी अस्पतालों में 40,000 डॉलर की ग्लोबल ग्रांट से चार डायलिसिस सेंटर स्थापित किए जाएंगे।

डीजी अनु नारंग
रो ई मंडल 3250

दिव्यांगों के लिए उम्मीद की किरण

किरण ज़ेहरा

धनबाद की 20 वर्षीय छात्रा प्रीति कुमारी ने अगस्त 2026 के पहले सप्ताह में रोटरी गैरी पॉवेल लिम्ब सेंटर में कृत्रिम पैर लगवाए। इसके एक सप्ताह बाद वह फिर सेंटर पहुंची। जन्म से ही दोनों पैर न होने के बावजूद प्रीति को उम्मीद थी कि कृत्रिम पैर उन्हें आत्मविश्वास के साथ चलने में मदद करेंगे। सेंटर के तकनीशियनों ने उन्हें फिटिंग और पुनर्वास की प्रक्रिया समझाई। अब वह कहती हैं कि वह व्हीलचेयर के बजाय चलकर कॉलेज जा सकती हैं और अपनी मास्टर डिग्री पूरी कर सकती हैं।

रोटरी क्लब ऑफ धनबाद – रो ई मंडल 3250 2008 से धनबाद के जीवन ज्योति स्कूल में गैरी पॉवेल लिम्ब सेंटर चला रहा है। सेंटर में नियमित रूप से तीन दिवसीय कृत्रिम अंग शिविर लगाए जाते हैं। अब तक 5,000 से अधिक लोगों को कृत्रिम अंग दिए जा चुके हैं। शिविरों में पुराने अंगों की मरम्मत, बदलाव और फिटिंग भी की जाती है।

क्लब अध्यक्ष कनव बाली के अनुसार, पहले सेंटर में लाभार्थियों की जांच और नाप ली जाती है। कुछ दिनों बाद उन्हें कृत्रिम अंग दिया जाता है। क्षेत्र के पांच रोटरी क्लब सेंटर को सहयोग देते

ऊपर: रोटरी क्लब ऑफ विक्रमशिला पिंक के सदस्य अपने आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्रोजेक्ट के दौरान।

रोटरी क्लब धनबाद के एक सदस्य रोटरी गैरी पॉवेल लिम्ब सेंटर में एक दिव्यांग व्यक्ति से बातचीत करते हुए।

दाएं: रोटरी क्लब बोकारो स्टील सिटी के प्रोजेक्ट उजाला में ट्रक चालकों की आंखों की जांच की जा रही है।

नीचे: रोटरी क्लब गिरिडीह कपल के सदस्य पौधारोपण करते हुए।

डीजी अनु नारंग ने रेलवे स्टेशन पर रोटरी क्लब पटना मिलेनियम द्वारा स्थापित स्तनपान बूथ का उद्घाटन किया।

हैं। व्यक्तिगत रोटेरियन भी अंग प्रायोजित करते हैं, जिसकी लागत करीब ₹2,500 है।

शिविरों की जानकारी Google Forms, फ्लायर्स, WhatAspp स्टेटस, Instagram और स्थानीय नेटवर्क के जरिए पहुंचाई जाती है। गांवों और ग्रामीण इलाकों में चलने वाले ऑटो पर भी पोस्टर लगाए जाते हैं। इच्छुक लाभार्थी अपनी तस्वीरों के साथ ऑनलाइन फॉर्म भरते हैं। जिन लोगों की चोटें अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुई हैं, उन्हें बाद में आने के लिए कहा जाता है। बाकी जरूरतमंदों को, यदि वे चिकित्सकीय रूप से फिट हों, कृत्रिम अंग देने का प्रयास किया जाता है।

क्लब की नई पहल "उम्मीद की किरण – नि:शुल्क कृत्रिम अंग परियोजना" को ₹48.13 लाख के ग्लोबल ग्रांट का समर्थन मिला है। इसके तहत अब तक बिहार और झारखंड के दिव्यांगों को 213 कृत्रिम अंग दिए गए हैं। रोटरी क्लब रामगढ़ सिटी और रोटरी क्लब नवादा राजश्री ने स्थानीय स्तर पर सहयोग किया। रो ई मंडल 1180, 1210, 1110 और 1100, रोटरी जयपुर लिम्ब यूके तथा रोटरी क्लब वॉल्वरहैम्पटन और रोटरी क्लब वेलिंगटन इसके अंतरराष्ट्रीय साझेदार रहे।

पिछले साल क्लब ने स्टील अथॉरिटी इंडिया के साथ मिलकर ₹16 लाख के CSR सहयोग से कृत्रिम अंग शिविर लगाया था, जिससे 128 लोग लाभान्वित हुए।

रो ई मंडल 3250 से और खबरें

रोटरी क्लब बोकारो स्टील सिटी: प्रोजेक्ट उजाला के तहत SAIL स्टॉक यार्ड हाईवे पर 62 ट्रक चालकों की आंखों की जांच की गई। इनमें से 41 को चश्मे दिए जाएंगे।

रोटरी क्लब पटना मिलेनियम: प्रोजेक्ट ममता के तहत पटना रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म 1 पर स्तनपान बूथ बनाया गया, जहां महिलाओं को निजी और सम्मानजनक सुविधा मिलेगी।

रोटरी क्लब ऑफ विक्रमशिला पिंक: 100 लड़कियों के लिए मुका मार आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण उषा विश्वकर्मा और लखनऊ की रेड ब्रिगेड की सदस्यों ने दिया।

रोटरी क्लब गिरिडीह कपल: 2,000 वर्ग फुट में 880 पौधे लगाकर मियावाकी वन तैयार करने की शुरुआत की गई। इसका उद्देश्य शहर में घना देशी वन और हरित क्षेत्र विकसित करना है। ■

रो ई मंडल 2981

रोटरी क्लब नागपट्टिनम होलीटाउन

वडुगाचेर्री गांव में आग लगने से प्रभावित सात परिवारों को ₹1 लाख की राहत सहायता दी गई। इसमें बर्तन, कपड़े, कंबल, राशन, चटाई और तकिए शामिल थे।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3012

रोटरी क्लब गाज़ियाबाद वसुंधरा

स्ट्रीट वेंडर्स को तेज धूप और बारिश से बचाने के लिए बड़े छाते वितरित किए गए। प्रिंस और आयुषी अग्रवाल परियोजना चेयर थे।

रो ई मंडल 3020

रोटरी क्लब राजामुंदरी रिवर सिटी

राजामुंदरी के एसकेवीटी गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज में ₹2 लाख से अधिक की लागत वाला 500 लीटर क्षमता का ठंडा वाटर प्लांट लगाया गया। इससे करीब 1,000 छात्रों को लाभ मिलेगा।

रो ई मंडल 3030

रोटरी क्लब नासिक वेस्ट

नासिक एसोसिएशन ऑफ ब्लाइंड स्कूल के करीब 100 छात्रों के लिए दो दिवसीय मोबिलिटी वर्कशॉप आयोजित की गई। भारत के 'ब्रेल मैन' स्वागात थोरात ने इसे संचालित किया। डीजी राजेश ने इसका उद्घाटन किया। परियोजना पर ₹30,000 खर्च हुए।

रो ई मंडल 3000

रोटरी क्लब करूर यंग जेन

विश्व हेपेटाइटिस दिवस के अवसर पर आयोजित चिकित्सा शिविर में 50 लोगों ने हिस्सा लिया। डॉ एस सदाशिवम के नेतृत्व में टीम ने हेपेटाइटिस बी और सी वायरस की समय पर पहचान और लिवर को स्वस्थ रखने के महत्व पर जानकारी दी। करूर गैस्ट्रो फाउंडेशन सह-भागीदार था।

रो ई मंडल 3150

रोटरी क्लब गुंटूर आदर्श

15 जरूरतमंद कॉलेज छात्रों को कुल ₹1.5 लाख की छात्रवृत्ति दी गई। इसके लिए फंडरेजर आयोजित किया गया था।

रो ई मंडल 3070

रोटरी क्लब जम्मू सिटी

युवाओं और आम लोगों को नशे के प्रति जागरूक करने के लिए एक शॉपिंग सेंटर में नुक्कड़ नाटक और जानकारीपरक सत्र आयोजित किए गए।

आइए, CSR फंड का लाभ उठाएं

अशोक कांटूर

2021-22 में रोटरी CSR इंडिया ग्रांट मॉडल शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य कंपनियों के कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) फंड का इस्तेमाल सामुदायिक सेवा परियोजनाओं के लिए करना था।

अब तक के परिणाम उत्साहजनक रहे हैं। नकद योगदान सहित कुल CSR संग्रह में पांच गुना से अधिक की बढ़ोतरी हुई है - 2021-22 में 4.02 मिलियन डॉलर से बढ़कर 2025-26 में 20.92 मिलियन डॉलर हो गया। ज़ोन 4, 5, 6 और 7 में कुल TRF योगदान 45.39 मिलियन डॉलर रहा। इसके मुकाबले पिछले वर्ष का 20.92 मिलियन डॉलर का CSR योगदान कुल योगदान का 46 प्रतिशत था। इससे स्पष्ट है कि भारत में रोटरी परियोजनाओं के लिए CSR फंड एक बेहद महत्वपूर्ण वित्तीय स्रोत बन सकता है।

2026-27 के लिए हमें 42 मिलियन डॉलर से अधिक CSR फंड जुटाने का महत्वाकांक्षी लेकिन हासिल किया जा सकने वाला लक्ष्य रखना चाहिए। यह 2025-26 की तुलना में 100 प्रतिशत की वृद्धि होगी। इस रोटरी वर्ष में उपलब्ध अनुमानित CSR फंड ₹59,600 करोड़ है, जो करीब 5.21 बिलियन डॉलर के बराबर है। कॉरपोरेट फंडिंग के इस विशाल स्रोत की तुलना में रोटरी अभी इसका बहुत छोटा हिस्सा ही जुटा पा रही है।

चुनौती फंड की उपलब्धता नहीं, बल्कि रोटरी क्लबों में जागरूकता, तैयारी, क्षमता और पहुंच बढ़ाने की है। फिलहाल भारत में केवल कुछ रो ई मंडल ही CSR ग्रांट हासिल करने के लिए आक्रामक रूप से प्रयास कर रहे हैं। कुछ रो ई मंडलों ने प्रगति शुरू कर दी है, लेकिन ज्यादातर अभी एक सफल और निरंतर CSR कार्यक्रम विकसित नहीं कर पाए हैं।

आखिर कई मंडल और क्लब CSR फंड हासिल करने के लिए गंभीरता से प्रयास क्यों नहीं कर रहे हैं? इसके प्रमुख कारण हैं - रोटरी CSR इंडिया ग्रांट मॉडल के बारे में पर्याप्त जानकारी का अभाव; यह धारणा कि CSR ग्रांट हासिल करना जटिल और मुश्किल है; मंडल स्तर पर CSR को लेकर जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी; और कई क्लबों के पास ऐसी धर्मार्थ संस्था नहीं है, जो संबंधित कानूनों और कंपनी अधिनियम की धाराओं के तहत पंजीकृत हो और उनकी सेवा परियोजनाओं के लिए CSR फंड हासिल कर सके।

इसके अलावा, क्लबों को CSR प्रक्रिया में मार्गदर्शन देने के लिए समर्पित संसाधन व्यक्ति या टीम का भी अभाव है। कई क्लबों को देशभर में रोटरी द्वारा सफलतापूर्वक चलाई जा रही CSR परियोजनाओं की जानकारी भी कम है। कुछ रोटेरियन कॉरपोरेट्स से संपर्क करने और अपने क्लब की परियोजनाओं को पेशेवर तरीके से प्रस्तुत करने में भी आत्मविश्वास की कमी महसूस करते हैं। इन चुनौतियों का समाधान क्लब सदस्यों के लिए व्यवस्थित प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और सहयोग से किया जा सकता है।

प्रस्तावित रणनीति

इस वर्ष के CSR फंड जुटाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए CSR फंडरेजिंग को उतनी ही प्रमुखता और संगठनात्मक ध्यान मिलना चाहिए, जितना TRF के अन्य कार्यक्रमों - जैसे ग्लोबल और डिस्ट्रिक्ट ग्रांट - को मिलता है।

फिलहाल CSR फंडिंग को सीमित समय और ध्यान दिया जाता है। रोटरी के कई कार्यक्रमों, जैसे दिशा, में CSR परियोजनाओं के लिए केवल 15-30 मिनट दिए जाते हैं। इसे बदलने की जरूरत है। CSR फंडिंग को भारत में रोटरी के लिए एक प्रमुख रणनीतिक अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए।

इसके लिए दो स्तरों पर रणनीति अपनाई जा सकती है। पहला, मंडल स्तर पर CSR सेमिनार आयोजित कर व्यापक जागरूकता और क्षमता विकसित करना। दूसरा, मंडलों में एक समर्पित CSR रिसोर्स टीम बनाना, जो रोटरी क्लबों को लगातार सहयोग दे। इन दोनों पहलों के साथ RISAO-CSR टीम और रोटरी CSR नेशनल कमेटी का सहयोग मिलकर देशभर में CSR के लिए एक मजबूत रोटरी आंदोलन खड़ा कर सकता है।

> **CSR फंडरेजिंग को उतनी ही प्रमुखता और संगठनात्मक ध्यान मिलना चाहिए, जितना ग्लोबल और डिस्ट्रिक्ट ग्रांट को मिलता है।**

हर मंडल को एक CSR सेमिनार आयोजित करना चाहिए, जो एक व्यावहारिक वर्कशॉप के रूप में काम करे और रोटेरियनों को यह समझने में मदद करे कि CSR फंड वास्तव में कैसे हासिल किया जाए। RISAO टीम और CSR नेशनल कमेटी के रिसोर्स पर्सन्स को आमंत्रित कर मंडलों को मार्गदर्शन, प्रेरणा और सहयोग देना चाहिए। डिस्ट्रिक्ट रिसोर्स टीम का काम इस प्रक्रिया को सुगम बनाना और क्लबों की मदद करना होना चाहिए, न कि CSR फंडरेजिंग का स्वामित्व क्लबों से अपने हाथ में लेना।

हर क्लब को यह छह-चरणीय प्रक्रिया अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए:पहचानें → तैयारी करें → संपर्क करें → फॉलो-अप करें फफंड हासिल करें → परियोजना पूरी करें → रिपोर्ट दें। यह रोटरी क्लबों के लिए CSR की बुनियादी प्रक्रिया बननी चाहिए। इससे संगठन को अवसर मिलने पर CSR फंड जुटाने की मौजूदा व्यवस्था से आगे बढ़कर एक व्यवस्थित और मापने योग्य CSR फंडरेजिंग कार्यक्रम बनाने में मदद मिलेगी।

कॉरपोरेट्स से संपर्क करने के मामले में रोटरी के पास कई स्वाभाविक फायदे हैं और इन खूबियों को कॉरपोरेट क्षेत्र के सामने अधिक प्रभावी ढंग से रखने की जरूरत है। मुख्य लक्ष्य यह होना चाहिए कि CSR फंडरेजिंग को कुछ सफल मंडलों तक सीमित रखने के बजाय भारत के अधिक से अधिक मंडलों और क्लबों तक पहुंचाया जाए।

लेखक रो ई मंडल 3011 के पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर और रोटरी नेशनल CSR कमेटी के संयोजक हैं।

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

स्कूलों की विज्ञान प्रयोगशालाओं को उपकरण

रोटरी क्लब बीकानेर – रो ई मंडल 3053 ने बीकानेर के छह सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूलों को ₹9 लाख से अधिक मूल्य के विज्ञान प्रयोगशाला किट दिए। इससे छात्र भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के प्रैक्टिकल कर सकेंगे। यह पहल उन स्कूलों के लिए की गई, जहां विज्ञान के शिक्षक और प्रयोगशालाएं तो थीं, लेकिन जरूरी उपकरणों की कमी थी।

स्कूल की प्रयोगशाला में क्लब सदस्यों के साथ आईपीडीजी निशा शेखावत (बाएं से तीसरी)।

मासिक धर्म स्वच्छता को बढ़ावा

रोटरी क्लब इंदौर अपटाउन – रो ई मंडल 3040 ने अपने *स्वच्छता संकल्प* अभियान के तहत सरकारी कन्या स्कूलों की छात्राओं और सरकारी गर्ल्स हॉस्टल में रहने वाली छात्राओं को करीब एक लाख सैनिटरी नैपकिन वितरित किए। इस पहल का उद्देश्य मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना था।

क्लब सदस्य से सैनिटरी नैपकिन का पैकेट लेती छात्रा।

छात्रों को दंत स्वच्छता की जानकारी

रोटरी क्लब पय्यनूर – रो ई मंडल 3204 ने इंडियन डेंटल एसोसिएशन के सहयोग से सामूहिक ब्रशिंग अभियान आयोजित किया, जिसमें 650 छात्रों ने भाग लिया। दंत चिकित्सकों ने सही तरीके से ब्रश करने का तरीका समझाया। प्रतियोगिताओं और संवादात्मक सत्रों के जरिए छात्रों को जीवनभर दांतों की देखभाल के लिए प्रोत्साहित किया गया।

छात्रों को सही तरीके से ब्रश करने का तरीका बताती दंत चिकित्सक।

पौधरोपण अभियान

रोटरी क्लब संबलपुर – रो ई मंडल 3261 ने आईआईएम संबलपुर परिसर में पौधरोपण अभियान चलाया। मियावाकी पद्धति से 1,200 से अधिक फलदार और औषधीय पौधे लगाए गए।

आईआईएम संबलपुर परिसर में पौधा लगाते क्लब अध्यक्ष चिन्मय सतपथी।

Membership and TRF Summary 2026-27

Top 20 Districts worldwide in Rotaract membership

Rank	District	Zone	Country	Clubs	Members
1	3000	5	India	151	7,532
2	3233	5	India	70	5,800
3	3292	6	India	193	4,750
4	3220	5	India	95	3,708
5	9213	22	Uganda	148	3,369
6	3141	4	India	128	3,188
7	9214	22	Tanzania	120	2,679
8	3192	7	India	88	2,039
9	3206	5	India	106	2,038
10	3150	7	India	54	2,032
11	3080	4	India	86	2,016
12	9104	22	Ghana	68	1,951
13	3131	7	India	103	1,907
14	3234	5	India	73	1,906
15	3191	7	India	84	1,855
16	3170	7	India	138	1,738
17	9010	22	Algeria	134	1,679
18	3203	5	India	76	1,539
19	3300	10	Malaysia	38	1,503
20	9216	22	Eritrea	78	1,461

Zonewise Ranking - New member addition

Rank	Zone	Members
1	5	4,513
2	4	3,264
3	7	2,905
4	6	1,898
Total (net growth since July 1)		12,580
Rest of the world total (net growth since July 1)		20,412
World total (net growth since July 1)		32,992

Rotaract, Interact, RCC membership as on September 2026

Zone	Rotaract		Interact	RCCs
	Clubs	Rotaractors	Clubs	
4	666	12,210	2,125	2,093
5	921	26,724	2,160	1,751
6	595	9,848	2,383	2,519
7	700	12,662	2,386	1,595

Districtwise Ranking New member addition

Rank	District	Zone	Members
1	3000	5	1,357
2	2981	5	751
3	3011	4	571
4	3141	4	556
5	3080	4	506
6	3233	5	410
7	3131	7	408
8	3203	5	383
9	3170	7	381
10	3191	7	366
11	3250	6	348
12	3182	7	338
13	3020	7	317
14	3192	7	286
15	3142	4	285
16	3181	7	268
17	3150	7	265
18	3231	5	265
19	3120	6	261
20	3234	5	260
21	3132	7	250
22	3292	6	242
23	3030	6	241
24	3060	4	222
25	3212	5	215
26	3206	5	201
27	3012	4	190
28	3055	4	186
29	3291	6	184
30	3070	4	177
31	3240	6	169
32	3056	4	163
33	3053	4	163
34	2982	5	155
35	3110	6	146
36	3220	5	137
37	3204	5	136
38	3090	4	135
39	3211	5	132
40	3262	6	127
41	3205	5	111
42	3040	4	110
43	3261	6	101
44	3100	6	79
45	3160	7	26
Total			**12,580**

Top 10 Districts - TRF Giving

Annual Fund

Rank	Zone	District	Annual Fund ($)
1	7	3150	235,585
2	4	3141	156,662
3	7	3131	132,781
4	4	3142	111,046
5	4	3080	109,373
6	4	3060	93,391
7	6	3250	87,527
8	6	3120	85,642
9	6	3291	84,364
10	7	3132	81,121

PolioPlus Fund

Rank	Zone	District	PolioPlus Fund ($)
1	5	3234	8,584
2	7	3170	8,354
3	7	3150	7,449
4	7	3020	7,289
5	4	3141	6,889
6	6	3292	5,908
7	7	3181	4,317
8	4	3142	4,281
9	6	3240	4,117
10	6	3291	3,673

Endowment Fund

Rank	Zone	District	Endowment Fund ($)
1	6	3291	57,646
2	4	3080	52,083
3	4	3053	50,000
4	5	3233	40,373
5	7	3150	38,592
6	6	3120	34,425
7	5	3212	30,000
8	7	3131	26,471
9	4	3141	26,263
10	6	3250	21,798

Zone Ranking in Implementing 10:20:30 Formula for New Clubs

Rank	Zone	Rotary	Rotaract	Interact
1	5	41	24	165
2	4	33	24	65
3	6	18	39	87
4	7	8	45	86
Total		100	132	403
Target		500	1,000	1,500

Top 20 Giving Districts in India for 2026–27

Rank	District	Zone	Total Contributions ($)
1	4	3141	961,605
2	7	3150	352,997
3	7	3191	250,585
4	4	3080	216,060
5	7	3131	205,503
6	4	3142	186,680
7	6	3291	151,551
8	6	3250	138,842
9	7	3132	137,083
10	6	3120	122,119
11	4	3060	113,077
12	5	3203	111,211
13	5	3234	98,121
14	4	3011	96,201
15	7	3020	81,111
16	4	3053	79,713
17	5	3205	77,298
18	7	3170	71,012
19	7	3192	65,609
20	5	3233	59,411

Zonewise Ranking - CSR Credits

Rank	Zone	District	CSR ($)
1	4	3141	489,277.33
2	4	3142	69,791.67
3	7	3132	54,533.68
4	7	3150	53,694.17

Rotary PEOPLE OF ACTION

परिवर्तन की शक्ति

टीम रोटरी न्यूज़

तमिलनाडु के कुड्डालोर में गांव को गोद लेकर सेवा

रो ई मंडल 2981 के डीजी के वैथियानाथन ने कुड्डालोर मिड-टाउन के रोटरी क्लब द्वारा गांव को गोद लेने की परियोजना के तहत सांगीवीरायन कोइल में पूरी की गई ₹2.78 लाख की विभिन्न कल्याणकारी परियोजनाओं का उद्घाटन किया।

इनमें तालाब का जीर्णोद्धार, पौधरोपण, आजीविका सहायता और कल्याणकारी गतिविधियां शामिल थीं। ग्रामीणों को 300 चूजे, कृमिनाशक गोलियां और आयरन बॉक्स भी वितरित किए गए। इन परियोजनाओं से 500 से अधिक ग्रामीणों को लाभ मिलेगा। गांव में नेत्र जांच शिविर भी आयोजित किया गया और सरकारी स्कूल में CCTV कैमरा लगाया गया। क्लब अध्यक्ष टी रामलिंगम, चार्टर अध्यक्ष एवं पूर्व एजी पा राजेंद्रन, एजी टी रमेश सहित अन्य सदस्य मौजूद थे। ■

गांव को गोद लेकर की गई सेवा परियोजना में क्लब सदस्यों के साथ डीजी के वैथियानाथन (बाएं से छठे)।

दिल्ली के अस्पताल को ई-कार्ट दान

पूर्व केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने रोटरी क्लब दिल्ली साउथ ईस्ट - रो ई मंडल 3011 द्वारा वीएमसीसी और सफदरजंग अस्पताल को दान किए गए ई-कार्ट को सौंपा। इसका उद्देश्य अस्पताल परिसर में मरीजों को सुविधाजनक और परेशानी-मुक्त आवागमन की सुविधा देना है।

यह ई-कार्ट बुजुर्ग मरीजों और चलने-फिरने में दिक्कत वाले लोगों के लिए उपयोगी होगा, जिन्हें अस्पताल परिसर में लंबी दूरी तय करने में परेशानी होती है। क्लब अध्यक्ष संदीप चोपड़ा ने कहा, ''मरीजों के अनुकूल यह वाहन अस्पताल में मरीजों के इलाज और देखभाल के अनुभव को बेहतर बनाने की दिशा में क्लब का एक और प्रयास है।'' ■

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ ईस्ट के सदस्यों के साथ पूर्व केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी (बाएं से तीसरे)।

हिमालय तक रोटरी का संदेश

हिमालय में रोटरी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रो ई मंडल 3090 के पीडीजी बाग सिंह पन्नू और रोटेरियन एम एस भोलोवासिया ने जून 2026 में पंजाब के पटियाला सड़क से यात्रा शुरू की।

रोटरी जागरूकता यात्रा के दौरान दोनों ने 'जल बचाएं, पेड़ लगाएं और प्लास्टिक को ना कहें' संदेश वाला बैनर कई प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किया। इनमें भारत-तिब्बत सीमा पर लेपचा ला दर्रा, 14,567 फीट की ऊंचाई पर स्थित दुनिया का सबसे ऊंचा सक्रिय डाकघर हिक्किम पोस्ट ऑफिस और हिमाचल प्रदेश की स्पीति घाटी में 13,596 फीट की ऊंचाई पर स्थित एशिया का सबसे ऊंचा सस्पेंशन ब्रिज चिचम ब्रिज शामिल थे।

इस सड़क यात्रा की परिकल्पना रोटरी क्लब फरीदकोट के पूर्व अध्यक्ष एस पी एस सोढ़ी ने की थी। इसमें रो ई मंडल 3090 के अन्य रोटरी क्लबों का भी सहयोग रहा। ■

भारत-तिब्बत सीमा पर लेपचा ला दर्रे में रोटरी बैनर के साथ रो ई मंडल 3090 के पीडीजी बाग सिंह पन्नू (दाएं) और एम एस भोलोवासिया।

फ्रीज़र बॉक्स के लिए CSR ग्रांट

ओमसाईराम स्टील्स एंड अलॉयज़, जालना से मिले ₹20 लाख के CSR फंड से रो ई मंडल 3132 ने महाराष्ट्र के 11 राजस्व जिलों में 28 रोटरी क्लबों को एक-एक शव फ्रीज़र बॉक्स वितरित किए। इनका इस्तेमाल स्थानीय समुदायों की जरूरत में किया जा रहा है।

हर क्लब ने एक स्थानीय NGO के साथ समझौते के बाद फ्रीजर बॉक्स उसे सौंप दिया, ताकि जरूरत पड़ने पर यह सुविधा लाभार्थी परिवार को बिना किसी शुल्क के उपलब्ध कराई जा सके। पीडीजी सुरेश साबू ने बताया कि इससे जरूरतमंद परिवारों को काफी मदद मिल रही है।

औरंगाबाद की विक्रेता कंपनी मूडी कूल पैनल ने भी इन फ्रीजर बॉक्स के लिए आजीवन सहयोग देने की पेशकश की। आठ महीने तक फॉलो-अप के बाद पता चला कि रो ई मंडल 3132 के विभिन्न राजस्व जिलों में इन 28 फ्रीजर बॉक्स की मदद से कुल 481 शव सुरक्षित रखे गए। ■

शव फ्रीजर बॉक्स के साथ रोटेरियन।

ऑटोइम्यून बीमारी को समझना

गीता मथाई

हमारा शरीर बीमारियों से लड़ने के लिए बना है। वायरस या बैक्टीरिया के संक्रमण से लेकर किसी चोट के कारण ऊतकों को हुए नुकसान और रक्तस्राव तक, शरीर तुरंत अपनी रक्षा-व्यवस्था सक्रिय कर देता है। जैसे ही शरीर पर हमला होता है, श्वेत रक्त कोशिकाओं की सेना प्रभावित हिस्से की ओर दौड़ पड़ती है। कुछ श्वेत रक्त कोशिकाएं बाहरी जीवाणुओं और दूसरे हानिकारक तत्वों को घेरकर नष्ट करती हैं, जबकि कुछ ऐसी रसायन छोड़ती हैं जो वायरस और बैक्टीरिया को खत्म करने में मदद करते हैं। चोट लगने पर रक्तस्राव रोकने के लिए शरीर रक्त के थक्के जमाने की प्रक्रिया भी शुरू कर देता है।

लेकिन कभी-कभी शरीर की यही रक्षा-व्यवस्था अपने ही शरीर के खिलाफ हो जाती है। इसे ऐसे समझिए जैसे सैनिक अपने ही देश पर हमला करने लगें या फुटबॉल का गोलकीपर अपनी ही टीम के गोल में गेंद डाल दे। ऑटोइम्यून बीमारी में प्रतिरक्षा तंत्र अपने शरीर और बाहरी हमलावर के बीच सही अंतर नहीं कर पाता। नतीजतन, वह शरीर के अपने ही ऊतकों पर हमला करने लगता है। यह स्थिति बहुत दुर्लभ नहीं है। अलग-अलग ऑटोइम्यून बीमारियां मिलकर करीब 8 प्रतिशत आबादी को प्रभावित करती हैं और ये किसी भी उम्र में हो सकती हैं। अब तक 100 से अधिक ऑटोइम्यून बीमारियों की पहचान की जा चुकी है।

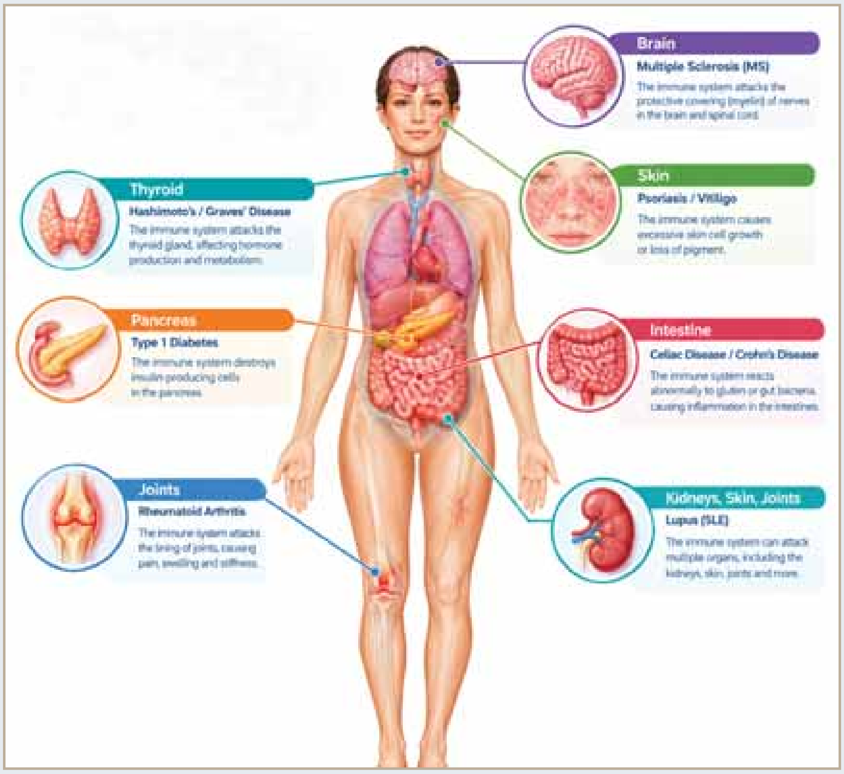

इन बीमारियों से प्रभावित करीब 70-80 प्रतिशत लोग महिलाएं हैं। इसके कारण जटिल हैं और इनमें आनुवंशिक, हार्मोनल तथा पर्यावरणीय कारकों की भूमिका हो सकती है। महिलाओं में दो X क्रोमेसोम होते हैं, जबकि पुरुषों में आमतौर पर एक X और एक Y क्रोमोसोम होता है। X क्रोमोसोम की गतिविधि में अंतर और एस्ट्रोजन जैसे हार्मोन का प्रभाव महिलाओं में ऑटोइम्यून बीमारी की अधिक संभावना को आंशिक रूप से समझा सकता है।

प्रतिरक्षा तंत्र शरीर के अपने ही कई हिस्सों को "बाहरी हमलावर" समझकर उन पर हमला कर सकता है - जैसे हड्डियां, नसें और मस्तिष्क, रक्त वाहिकाएं, हार्मोन बनाने वाली ग्रंथियां, पाचन तंत्र या त्वचा। आम ऑटोइम्यून बीमारियों में रूमेटॉइड आर्थराइटिस, सिस्टमिक ल्यूपस एरिथेमेटोसस, मायोसाइटिस, सोरायसिस, डर्माटोमायोसाइटिस, स्क्लेरोडर्मा, वैस्कुलाइटिस, अल्सरेटिव कोलाइटिस, एट्रोफिक गैस्ट्राइटिस, टाइप-1 डायबिटीज और हाशिमोटो थायरॉइडाइटिस शामिल हैं।

लक्षण इस बात पर निर्भर करते हैं कि प्रतिरक्षा तंत्र शरीर के किस हिस्से को निशाना बना रहा है। यदि जोड़ों पर हमला हो, तो दर्द, सूजन और अकड़न हो सकती है। अग्न्याशय की इंसुलिन बनाने वाली बीटा कोशिकाएं नष्ट होने पर टाइप-1 डायबिटीज हो सकती है। कई बार ये लक्षण अचानक बढ़ते हैं और फिर कुछ समय के लिए गायब हो जाते हैं। ऐसे उतार-चढ़ाव के कारण मरीज कभी-कभी लक्षणों के बढ़ने या कम होने को किसी भोजन, जड़ी-

ऑटोइम्यून बीमारियों से प्रभावित 70-80 प्रतिशत लोग महिलाएं हैं। इसके पीछे आनुवंशिक, हार्मोनल और पर्यावरणीय कारकों के साथ-साथ महिलाओं में मौजूद दो क्रोमोसोम भी एक कारण हो सकते हैं।

बूटी या सप्लीमेंट से जोड़ लेते हैं, जबकि इसका वास्तविक कारण बीमारी का स्वाभाविक उतार-चढ़ाव हो सकता है।

किसी व्यक्ति को बिना किसी स्पष्ट कारण के कमजोरी और लगातार थकान महसूस हो सकती है। शुरुआत में त्वचा में बदलाव, मांसपेशियों की कमजोरी, सूजन या दर्द जैसे स्पष्ट लक्षण भी नहीं होते। इससे बीमारी की पहचान मुश्किल हो सकती है और मरीज सही कारण जानने के लिए बार-बार अलग-अलग डॉक्टरों के पास जाता रहता है।

पर्यावरणीय कारक भी ऑटोइम्यून बीमारी के जोखिम को प्रभावित कर सकते हैं। लंबे समय तक वायु प्रदूषण, डीजल के धुएं या औद्योगिक प्रदूषकों के संपर्क में रहने से शरीर में लगातार बनी रहने वाली सूजन बढ़ सकती है। सिगरेट का धुआं विशेष रूप से नुकसानदायक है और परोक्ष धूम्रपान से भी इन हानिकारक तत्वों का संपर्क बढ़ सकता है।

ऑटोइम्यून बीमारियां आमतौर पर इस तरह विरासत में नहीं मिलतीं कि कोई एक जीन सीधे माता-पिता से बच्चे में चला जाए। इसके बजाय कई जीन मिलकर बीमारी की प्रवृत्ति पैदा कर सकते हैं, जैसा कि टाइप-2 डायबिटीज में देखा जाता है।

अगर परिवार में किसी भाई-बहन या करीबी रिश्तेदार को ऑटोइम्यून बीमारी है, तो इसका यह मतलब नहीं कि आपको भी यह बीमारी निश्चित रूप से होगी। यहां तक कि एक जैसे जुड़वां बच्चों में भी, यदि एक को ऑटोइम्यून बीमारी होती है तो जरूरी नहीं कि दूसरे को भी हो।आनुवंशिक रूप से संवेदनशील व्यक्ति में बीमारी शुरू होने के लिए किसी पर्यावरणीय या जैविक कारण की जरूरत पड़ सकती है। कुछ संक्रमण, खासकर कुछ वायरल संक्रमण, प्रतिरक्षा तंत्र में असामान्य प्रतिक्रिया को सक्रिय कर सकते हैं।

मोटापा भी एक कारण हो सकता है, क्योंकि शरीर में अतिरिक्त वसा लंबे समय तक हल्की सूजन को बढ़ावा दे सकती है। संतुलित आहार शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करता है। ताजे फल और सब्जियां, साबुत अनाज और पर्याप्त प्रोटीन लेना बेहतर है, जबकि अत्यधिक प्रोसेस्ड भोजन, ज्यादा चीनी और ट्रांस फैट से बचना चाहिए। हालांकि, कोई एक खाद्य पदार्थ या विशेष डाइट सभी ऑटोइम्यून बीमारियों को रोक या ठीक नहीं कर सकती।

ऑटोइम्यून बीमारी का निदान आसान नहीं होता, क्योंकि ऐसी कोई एक जांच नहीं है जो हर ऑटोइम्यून बीमारी की पहचान कर सके।ESR (Erythrocyte Sedimentation Rate) और CRP (C-Reactive Protein) जैसे रक्त परीक्षण शरीर में सूजन का पता लगाते हैं, लेकिन यह नहीं बताते कि सूजन का कारण क्या है। ANA (Antinuclear Antibody) टेस्ट यह पता लगाने में मदद करता है कि शरीर की अपनी कोशिकाओं के कुछ हिस्सों के खिलाफ एंटीबॉडी बन रही हैं या नहीं। लेकिन केवल ANA पॉजिटिव होने से ऑटोइम्यून बीमारी की पुष्टि नहीं होती, क्योंकि स्वस्थ लोगों में भी इसका परिणाम पॉजिटिव आ सकता है।

इसके अलावा अधिक विशिष्ट जांचों की जरूरत पड़ सकती है। रूमेटॉइड फैक्टर (RF) और anti-CCP एंटीबॉडी रूमेटॉइड आर्थराइटिस की पहचान में मदद कर सकते हैं। वहीं anti-dsDNA और ENA एंटीबॉडी ल्यूपस और उससे जुड़ी बीमारियों की पहचान में उपयोगी हो सकती हैं।जोड़ों और ऊतकों में हुए नुकसान को देखने के लिए X-ray, अल्ट्रासाउंड या MRI जैसी जांच की जा सकती हैं। कुछ मामलों में किसी विशेष अंग के प्रभावित होने की पुष्टि के लिए बायोप्सी भी करनी पड़ सकती है।

इलाज ऑटोइम्यून बीमारी के प्रकार और उसकी गंभीरता पर निर्भर करता है। दर्द और सूजन कम करने के लिए नॉन-स्टेरॉयडल एंटी-इंफ्लेमेटरी दवाएं (NSAIDs) दी जा सकती हैं। प्रेडनिसोन जैसी कॉर्टिकोस्टेरॉयड दवाएं तेज सूजन को जल्दी नियंत्रित कर सकती हैं और बीमारी के अचानक बढ़ जाने पर अक्सर इस्तेमाल की जाती हैं। मेथोट्रेक्सेट जैसी बीमारी को नियंत्रित करने वाली दवाएं प्रतिरक्षा तंत्र की असामान्य गतिविधि को कम करने और ऊतकों को लगातार होने वाले नुकसान से बचाने में मदद करती हैं।

नई पीढ़ी की दवाओं में लक्षित बायोलॉजिकल दवाएं और मोनोक्लोनल एंटीबॉडी शामिल हैं। ये पूरे प्रतिरक्षा तंत्र को दबाने के बजाय उसके खास हिस्सों पर काम करती हैं। ऐसी दवाओं ने कई ऑटोइम्यून बीमारियों के इलाज में महत्वपूर्ण बदलाव किया है।

यदि ऑटोइम्यून बीमारी के कारण शरीर किसी जरूरी हार्मोन का उत्पादन करने की क्षमता खो देता है, तो उस हार्मोन की पूर्ति करनी पड़ती है। टाइप-1 डायबिटीज वाले लोगों को इंसुलिन की जरूरत होती है, जबकि ऑटोइम्यून हाइपोथायरॉइडिज्म में थायरॉइड हार्मोन दिया जा सकता है। कुछ गंभीर ऑटोइम्यून बीमारियों में इंट्रावेनस इम्युनोग्लोबुलिन (IVIG) या प्लाज्मा एक्सचेंज जैसे उपचार भी किए जा सकते हैं। जब बीमारी का असर जोड़ों और मांसपेशियों पर पड़ता है, तो फिजियोथेरेपी महत्वपूर्ण हो जाती है। इससे शरीर की गतिशीलता, संतुलन, लचीलापन और मांसपेशियों की ताकत बनाए रखने में मदद मिलती है। फिजियोथेरेपिस्ट द्वारा बताए गए व्यायाम नियमित रूप से करते रहना चाहिए। पैदल चलना, योग, ताई ची और उचित स्ट्रेंथ ट्रेनिंग भी शारीरिक फिटनेस और स्वतंत्र रूप से रोजमर्रा के काम करने की क्षमता बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।

जब ऑटोइम्यून बीमारी का असर जोड़ों और मांसपेशियों पर पड़ता है, तब फिजियोथेरेपी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे शरीर की गतिशीलता, संतुलन और लचीलापन बनाए रखने के साथ-साथ मांसपेशियों की ताकत भी बरकरार रखने में मदद मिलती है।

फिलहाल कई ऑटोइम्यून बीमारियों का स्थायी इलाज संभव नहीं है, लेकिन उन्हें प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है। बीमारी के लक्षण कभी बढ़ सकते हैं और फिर लंबे समय के लिए शांत हो सकते हैं। यह स्थिति कई वर्षों तक भी बनी रह सकती है। समय पर बीमारी की पहचान, सही दवा, नियमित चिकित्सकीय निगरानी, संतुलित आहार, धूम्रपान से दूरी, पर्याप्त नींद और नियमित शारीरिक गतिविधि जटिलताओं से बचने और जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।

सकारात्मक सोच, इलाज का नियमित पालन और सक्रिय जीवनशैली ऑटोइम्यून बीमारी के साथ बेहतर जीवन जीने की अहम कुंजी हैं।

लेखिका बाल रोग विशेषज्ञ हैं और उन्होंने स्टेइंग हेल्दी इन मॉडर्न इंडिया *पुस्तक लिखी है*

रो ई मंडल 3160

रोटरी क्लब विजयनगर हेरिटेज

ग्रामीण परिवारों का आर्थिक बोझ कम करने के उद्देश्य से पापिनायकन हल्ली गांव में 150 छात्रों को स्कूल बैग वितरित किए गए।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3212

रोटरी मंडल

रो ई मंडल 3090 के पीडीजी बाग सिंह पन्नू ने आईपीडीजी दिनेश बाबू के निमंत्रण पर मंडल के 14 रोटरी क्लबों का दौरा किया और रो ई के संस्थापक पॉल हैरिस की प्रतिमाएं स्थापित कीं।

रो ई मंडल 3233

रोटरी क्लब मद्रास वेस्ट

डीजी श्रीराम दुव्वुरी ने चेन्नई के पास पोन्नेरी के पेरुम्बेडु गांव स्थित सरकारी हाई स्कूल में स्मार्ट टीवी से युक्त कंप्यूटर लैब का उद्घाटन किया। ₹22.5 लाख की यह परियोजना हुंडई ऑटोएवर इंडिया के CSR ग्रांट से पूरी हुई और इससे 330 छात्रों को लाभ मिलेगा।

रो ई मंडल 3240

रोटरी क्लब मणिपुर

रोटरी भवन और पोइरेई नवाकोल चिल्ड्रन्स होम में करीब 120 फलदार पौधे लगाए गए। परियोजना को चिरंजीव कौर ने प्रायोजित किया।

रो ई मंडल 3170

रोटरी क्लब बेलगाम साउथ

बेहरे फाउंडेशन के सहयोग से हलासी गांव के सरकारी हाई स्कूल के छात्रों को स्पोर्ट्स शूज़ वितरित किए गए।

रो ई मंडल 3250

रोटरी क्लब पटना सिटी सम्राट

दो लोगों को स्वरोजगार के लिए ई-रिक्शा दिए गए। साथ ही पांच जरूरतमंद छात्रों को साइकिलें वितरित की गईं।

रो ई मंडल 3291

रोटरी क्लब बालीगंज

सुख संस्थान वृद्धाश्रम में बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया, ताकि उन्हें समय पर चिकित्सा सहायता मिल सके।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

Go Green

भोजन की चिंता पर्यावरण की भी फिक्र

प्रीति मेहरा

शहरों के साथ ग्रामीण इलाकों में भी स्वच्छ ईंधन और बेहतर कुकिंग समाधान उपलब्ध कराना जरूरी है

इज़राइल-अमेरिका-ईरान युद्ध शुरू होने के बाद से देश के कई परिवारों में LPG या रसोई गैस की संभावित कमी और सिलेंडर की डिलीवरी धीमी होने की चिंता है। कुछ परिवारों ने एहतियातन LPG चूल्हे के साथ इंडक्शन स्टोव खरीद लिया है, तो कुछ ने एयर फ्रायर। ये दोनों बिजली से चलते हैं और इनके इस्तेमाल से सीधे तौर पर कोई उत्सर्जन नहीं होता। हालांकि, यह अलग बात है कि भारत में पैदा होने वाली बिजली का बड़ा हिस्सा अब भी कोयले से आता है, जो प्रदूषण फैलाने वाला ईंधन है। अक्षय ऊर्जा से पैदा होने वाली बिजली निस्संदेह सबसे स्वच्छ विकल्प है।

लेकिन यहां एक विडंबना है। जब हम ग्लोबल वार्मिंग या अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने की बात करते हैं, तो हमारा ध्यान मुख्यतः शहरी भारत पर रहता है। और जब इससे निपटने के उपायों की बात आती है, तो खाना पकाने के लिए स्वच्छ ईंधन के तौर पर LPG की सफलता का उदाहरण दिया जाता है।

वास्तव में, शहरों में रसोई के लिए स्वच्छ ईंधन के कई विकल्प मौजूद हैं। कुछ शहरों में पाइप से गैस पहुंचती है, जबकि बिजली से चलने वाले हॉट प्लेट, एयर फ्रायर और कुकिंग रेंज भी उपलब्ध हैं। शहरी गरीबों के बीच भी LPG तेजी से लोकप्रिय हुआ है और उसने काफी हद तक लकड़ी, कोयले और अन्य ठोस ईंधनों की जगह ली है। LPG की पहुंच ग्रामीण इलाकों तक भी बढ़ी है। लेकिन Council on Energy, Environment and Water (CEEW) द्वारा हाल में जारी तीन अध्ययनों से पता चलता है कि LPG तक औपचारिक पहुंच उस बढ़ते अनौपचारिक बाजार के साथ कदम नहीं मिला पा रही है, जो फिलहाल लोगों की जरूरत पूरी कर रहा है।

औपचारिक पहुंच का मतलब है अधिकृत गैस कनेक्शन, जिसके जरिए सरकारी मान्यता प्राप्त वितरक से खाली सिलेंडर समय पर दोबारा भरवाया जा सके। लेकिन जिन लोगों के पास गैस कनेक्शन नहीं है, उनके लिए सिलेंडरों का एक बड़ा अनौपचारिक बाजार भी चल रहा है। इन अध्ययनों में छह राज्यों के 2,200 से अधिक ग्रामीण परिवारों, अनौपचारिक बस्तियों के 1,100 से अधिक परिवारों और 10 शहरों में रहने वाले 1,000 से अधिक प्रवासी कामगारों से मिले आंकड़ों को शामिल किया गया है।

CEEW के अध्ययन के अनुसार, ग्रामीण भारत में लोग अक्सर किराना दुकानों, सड़क किनारे के विक्रेताओं या अनधिकृत वितरकों से ऊंची कीमत पर गैस सिलेंडर खरीदते हैं। इस तरह की अनियमित आपूर्ति में सिलेंडर फटने और आग लगने का खतरा भी रहता है। अध्ययन इस बात की ओर इशारा करता है कि स्वच्छ LPG से खाना पकाने की ऐसी नीति जरूरी है जो केवल कनेक्शन देने तक सीमित न हो, बल्कि नियमित इस्तेमाल, वहनीयता, औपचारिक पहुंच और अंतिम छोर तक डिलीवरी सुनिश्चित करे। शहर और गांव की तस्वीर अलगशहरी अनौपचारिक बस्तियों में LPG का इस्तेमाल काफी अधिक है। करीब 70 प्रतिशत परिवार केवल LPG का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन

जिन परिवारों के पास औपचारिक कनेक्शन नहीं था, उनमें 31 प्रतिशत को पते के प्रमाण जैसे दस्तावेज न होने के कारण कनेक्शन नहीं मिल सका। नतीजतन, सर्वेक्षण में शामिल 11 प्रतिशत परिवार अनौपचारिक बाजार से सिलेंडर खरीदते हैं। अध्ययन के समय वे ₹803 के खुदरा मूल्य के मुकाबले करीब ₹1,040 चुका रहे थे।

ग्रामीण इलाकों की तस्वीर अलग है। रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 90 दिनों में 73 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों ने LPG का इस्तेमाल किया, लेकिन केवल 23 प्रतिशत परिवार खाना पकाने के लिए पूरी तरह LPG पर निर्भर थे। करीब आधे परिवार अब भी मुख्य LPG के रूप में लकड़ी का इस्तेमाल करते हैं और केवल 47 प्रतिशत LPG उपयोगकर्ताओं को घर तक सिलेंडर की डिलीवरी मिलती है। यानी रिफिल की कीमत और आखिरी छोर तक डिलीवरी सबसे बड़ी बाधाएं हैं।

इसका सीधा अर्थ है कि खाना पकाने के दौरान होने वाला प्रदूषण काफी अधिक है, क्योंकि बड़ी संख्या में परिवार अब भी लकड़ी जला रहे हैं। दुर्भाग्य से, ग्रामीण भारत में स्वच्छ कुकिंग स्टोव या सोलर कुकर उपलब्ध कराने की पहल अभी कुछ ही इलाकों तक सीमित है और LPG को ही मुख्य समाधान माना जा रहा है। लेकिन LPG वितरण व्यवस्था को देशभर में जिस तरह व्यवस्थित और सुगम बनाने की जरूरत है, वह अभी पूरी तरह नहीं हो पाई है। जब तक ईंधन लोगों की पहुंच और आर्थिक क्षमता के भीतर नहीं होगा, तब तक स्वच्छ खाना पकाने का लक्ष्य पूरा करना मुश्किल रहेगा।

तो स्वच्छ हवा और खाना पकाने के तरीके का क्या संबंध है? यदि खाना पकाने के लिए लकड़ी, बायोमास और दूसरे ठोस ईंधनों का इस्तेमाल किया जाता है, तो हवा में प्रदूषक अधिक मात्रा में पहुंचते हैं। लंबे समय तक इनके संपर्क में रहने से सांस संबंधी बीमारियों, कैंसर, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और हृदय संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। दिए गए आंकड़ों के अनुसार, भारत की करीब 70 प्रतिशत आबादी अब भी खाना पकाने के लिए ठोस ईंधनों पर निर्भर है। पिछले कुछ वर्षों के अध्ययनों से यह भी संकेत मिला है कि खाना पकाने के लिए बायोमास जलाना भारत के वायु प्रदूषण में 40 प्रतिशत तक योगदान दे सकता है और हर साल करीब आठ लाख असामयिक मौतों से जुड़ा हो सकता है।

CEEW के इन तीन अध्ययनों पर टिप्पणी करते हुए संस्था के दो फेलो ने भी नीति-निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण बातें कही हैं।

प्रार्थना बोरा कहती हैं, स्वच्छ हवा इस बात से अलग नहीं की जा सकती कि लोग कैसे खाना पकाते हैं, काम करते हैं और रहते हैं। LPG कनेक्शन देना केवल पहला कदम है। यदि परिवार नियमित रिफिल का खर्च नहीं उठा सकते, प्रवासी कामगार PMUY के तहत औपचारिक कनेक्शन के बारे में नहीं जानते या ग्रामीण घरों तक सिलेंडर भरोसेमंद तरीके से नहीं पहुंचते, तो वे प्रदूषण फैलाने वाले LPG के संपर्क में बने रहेंगे।

अधिकांश प्रवासी LPG उपयोगकर्ता अनौपचारिक बाज़ार से सिलेंडर खरीदते हैं और सामान्य उपभोक्ताओं की तुलना में प्रति किलो 20 प्रतिशत से अधिक अतिरिक्त कीमत चुकाते हैं।

अब स्वच्छ हवा की नीति में केवल कनेक्शन की संख्या नहीं, बल्कि यह भी देखा जाना चाहिए कि लोग स्वच्छ LPG का लगातार इस्तेमाल कर पा रहे हैं या नहीं। अभिषेक कर के अनुसार, ग्रामीण परिवारों के लिए रिफिल की कीमत और घर तक डिलीवरी सबसे महत्वपूर्ण हैं। शहरी गरीबों के लिए दस्तावेजी प्रक्रिया को आसान बनाने और छोटे-छोटे भुगतान जैसे विकल्पों की जरूरत है। प्रवासी कामगारों के लिए अतिरिक्त सब्सिडी और जागरूकता जरूरी है। उनके मुताबिक, अधिकांश प्रवासी LPG उपयोगकर्ता अनौपचारिक बाजार से सिलेंडर खरीदते हैं और ऐसे सामान्य उपभोक्ताओं की तुलना में प्रति किलो 20 प्रतिशत से अधिक अतिरिक्त कीमत चुकाते हैं, जो पूरा औपचारिक सिलेंडर खरीद सकते हैं।

तीनों अध्ययनों में एक बात समान रूप से सामने आई। ग्रामीण परिवारों, शहरी अनौपचारिक बस्तियों में रहने वाले परिवारों और प्रवासी कामगारों में से कम से कम 80 प्रतिशत ने कहा कि यदि 14.2 किलो के LPG सिलेंडर का रिफिल ₹400 में मिल सके, तो वे पूरी तरह LPG पर स्विच करने को तैयार होंगे।

तीनों समूहों में औसत स्वीकार्य कीमत ₹500 रही। हालांकि, सर्वेक्षण में बताई गई दोनों कीमतें उस समय PMUY के तहत मिलने वाले ₹642 के प्रभावी सब्सिडी वाले सिलेंडर मूल्य से भी कम थीं। अब यह कीमत और अधिक है। खाना पकाने का ईंधन भी वायु प्रदूषण का एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, लेकिन अक्सर इसे नजरअंदाज कर दिया जाता है। तेजी से बढ़ते शहरीकरण, बढ़ते औद्योगिक प्रदूषण और गांवों तथा छोटे शहरों में हो रहे अभूतपूर्व विकास के बीच हर वर्ग के नागरिक के लिए स्वच्छ, सस्ता और भरोसेमंद खाना पकाने का ईंधन उपलब्ध कराना अब प्राथमिकता बनना चाहिए।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

चलो, रात की ट्रेन पकड़ते हैं

मोनिशा राजेश दुनिया भर में स्लीपर ट्रेनों से सफर करने के सुख और अनोखी खोजों को साझा करती हैं

संध्या राव

अगर आपको घूमना पसंद है, तो मोनिशा राजेश की नई किताब आपके लिए है। और अगर आपको ट्रेनें पसंद हैं – खासकर तब, जब सफर थोड़ा धीमा हो, खिड़की के बाहर बदलते नज़ारों को देखते हुए हो और रास्ते में अजनबियों से ऐसी बातचीत करने में आपको कोई झिझक न हो, जिसमें कभी-कभी दिल की बातें भी बाहर आ जाएं – तो उनकी पहली दो किताबें Around India in 80 Trains और Around the World in 80 Trains भी आपको खूब पसंद आएंगी।

लेकिन अगर आपको ट्रेन से सफर करना सिर्फ पसंद नहीं, बेहद पसंद है, तो उनकी नई किताब Moonlight Express: Around the World by Night Train आपके लिए इससे बेहतर पढ़ाई शायद ही हो।

मिसाल के तौर पर, "hemmablind" शब्द ही ले लीजिए। मोनिशा डोवरे रेलवे की 300 मील लंबी लाइन पर रात बिताती हैं, जो ओस्लो से ट्रॉनहाइम तक जाती है। वहां से वह नॉरलैंड रेलवे पकड़ती हैं और 500 मील की यात्रा कर बोदो पहुंचती हैं – जिसे ले-वशी कहा जाता है – आर्कटिक सर्कल के ठीक उत्तर में। नॉरलैंड लाइन पर सफर करते हुए मोनिशा 293 पुल पार करती हैं। नींद और जागने के बीच की इसी यात्रा में उनकी मुलाकात स्वीडन के पोनीटेल वाले लुडविग से होती है, जो अब नॉर्वे में रहते हैं।

लुडविग बताते हैं, सर्दियां लंबी होती हैं और अंधेरा रहता है। लेकिन हर दिन हमारे पास चार घंटे की बहुत खूबसूरत सांझ होती है – बैंगनी और नारंगी रंग की – और ऊपर उत्तरी रोशनी भी होती है।

बस, इतना सुनते ही मोनिशा सीधी बैठ जाती हैं। वह तो ऑरोरा बोरेलिस की तलाश में हैं! हर समय रोशनी रहती है? ज्यादातर समय, लुडविग कहते हैं।

फिर कुछ सोचते हुए वह कहते हैं, हमारे यहां एक शब्द है – hemmablind। यह स्वीडिश शब्द है, कुछ-कुछ "घर के प्रति अंधापन" जैसा। अंग्रेजी में ऐसा कोई शब्द नहीं है? इसका मतलब है, जिस जगह आप रहते हैं, उसकी खूबसूरती को देखते-देखते एक समय बाद उसे देखना बंद कर देना। मोनिशा, जो ब्रिटिश हैं, लिखती हैं, मैं सोच भी नहीं सकती थी कि ब्रिटेन में ऐसी कौन-सी प्राकृतिक खूबसूरती है, जिसकी मैं इतनी आदी हो चुकी हूं कि अब उसे देखती ही नहीं। लेकिन शायद यही लुडविग की बात का मतलब था। बिल्कुल।

एक मामूली-सी ट्रेन यात्रा में हुई बातचीत से निकली कितनी गहरी बात! मेरे दिमाग में पहुंची यह एक छोटी-सी रोशनी थी। Moonlight Express ने मेरे मन और दिल को ऐसी अनगिनत महीन रोशनियों से भर दिया – कभी-कभी ऐसी बातें दोहराकर, जिन्हें हम जानते तो हैं, लेकिन शायद उतनी गंभीरता से स्वीकार नहीं करते।

नॉर्वे की यात्रा के दो महीने बाद मोनिशा और फोटोग्राफर मार्क सेठी असाइनमेंट पर शालीमार एक्सप्रेस में सफर कर रहे होते हैं। मार्क की इकलौती पतलून फट जाती है। साथी यात्री मोहन अपनी एक पतलून उन्हें दे देते हैं। मार्क मोनिशा से कहते हैं कि वह कल्पना भी नहीं कर सकते कि लंदन में कोई अजनबी उन्हें अपनी पतलून पहनने के लिए दे देगा। कपड़े बदलने जाते हुए मोनिशा सोचती हैं: एक पल के लिए मुझे लगा कि शायद हमारे विदेशी

होने की वजह से मोहन हमारी मदद करने के लिए ज्यादा तैयार हुए हों। लेकिन कुल मिलाकर मार्क की बात सही थी। भारतीय ट्रेन यात्रियों में उदारता की एक अनोखी भावना होती है। खाना बांटने से लेकर किसी के लिए जगह बनाने और बिना मांगे सलाह देने तक - भारतीय रेल अक्सर इंसानी स्वभाव का सबसे अच्छा रूप सामने ले आती है।

जो लोग ट्रेन से सफर करते रहे हैं, वे जानते हैं कि यह बात कितनी सच है। हममें से कई लोगों ने ट्रेन यात्राओं में मिले अजनबियों से दोस्ती भी की है। और पुराने दिनों के अनारक्षित डिब्बों में तो जरा एडजस्ट कर लीजिए की कोई सीमा ही नहीं थी - एक और इंसान के बैठने की जगह हमेशा निकल ही आती थी! कितना ही दिलचस्प है कि यह किताब दुनिया की शायद सबसे मशहूर ट्रेन - ओरिएंट एक्सप्रेस - से शुरू होती है, जो अपनी 140वीं वर्षगांठ मना रही थी। हमें पता चलता है कि पेरिस से इस्तांबुल - जिसे तब कॉन्स्टेंटिनोपल कहा जाता था - की यात्रा शुरू में ट्रेन और फेरी के कई पड़ावों का मेल थी। और यहां rolling stock का मतलब था ट्रेन के डिब्बों को अलग करके फेरी पर चढ़ाना और दूसरी तरफ पहुंचने पर फिर उन्हें जोड़ देना! मूल सेवा और बाद में तय की गई इसकी नई समय-सारिणी वाली सेवा, दोनों 2009 में बंद हो गईं। लेकिन निजी कंपनियों द्वारा संचालित लक्जरी सेवाएं, जैसे Venice Simplon-Orient-Express और Orient Express La Dolce Vita, साल के कुछ खास समय पर अब भी उपलब्ध हैं।

रात भर की ट्रेन यात्रा का एक फायदा यह भी है कि रास्ते में रुककर किसी शहर को देखने-घूमने का अनुभव कहीं ज्यादा आरामदायक हो जाता है।

Dacia ट्रेन मोनिशा को वियना से रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट ले जाती है, जहां वह कुछ समय रुकती हैं। इसी अध्याय - Bucharest to Sofia - के दूसरे पैराग्राफ में आया शब्द "bulldozing" मेरी नज़र में अटक जाता है।

1977 में आए एक शक्तिशाली भूकंप ने बुखारेस्ट को तबाह कर दिया था। इसके बाद तत्कालीन राष्ट्रपति चाउशेस्कु ने शहर की खूबसूरती को बुलडोजर से मलबे में बदलने का अभियान शुरू कर दिया। पूरे मोहल्ले, स्कूल और सिनेगॉग ढहा दिए गए और उनकी जगह सोवियत शैली की बेरौनक इमारतें खड़ी कर दी गईं।

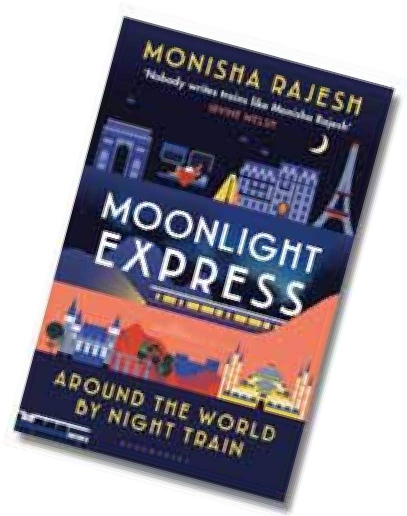

Caledonian Sleeper, Royal Scotsman, Good Night Train, Silver Meteor, ndean Explorer और Santa Claus Express जैसे दिलचस्प और जिज्ञासा जगाने वाले नामों वाली ये ट्रेनें हमें इतिहास, भूगोल, राजनीति, समाज, खान-पान, फैशन और लोगों की सोच - सबके बीच से गुजारती हैं। कहीं सफर बेहद आरामदेह है, कहीं थोड़ा अजीब - जैसे वियना से हैम्बर्ग जाने वाली हाई-फाई Nightjet में, जहां यात्रियों को सचमुच छोटे-छोटे कैप्सूल या खांचों में समा जाना पड़ता है। कहीं ट्रेन शोर से भरी है, कहीं रहस्यमय खामोशी से।

लेकिन इन यात्राओं में अच्छी संगत मिल जाए तो दो दिनों में आप किसी इंसान के बारे में उतना जान लेते हैं, जितना शायद वर्षों में भी न जान पाएं।

Moonlight Express आसानी से मेरी पसंदीदा तीन यात्रा-पुस्तकों में जगह बना लेती है। बाकी दो हैं अलेक्जेंडर फ्रेटर की Chasing the Monsoon और एंटोनिया बोलिंगब्रोक-केंट की Land of the Dawnlit Mountains। मोनिशा की भाषा जीवंत, सहज और बारीकियों से भरी है। उनकी लेखनी इस किताब को सिर्फ लोगों और जगहों की यात्रा से कहीं आगे ले जाती है। उसमें खुलापन है, बेबाकी है, उदारता है और भावनाएं भी।

जब मोनिशा तुर्किये की राजधानी अंकारा में होती हैं, वह Ankara Express से पहुंची हैं और आगे Dogu Express से कार्स जाने वाली हैं। तभी तुर्किये में हाल के वर्षों के दो सबसे विनाशकारी भूकंप आते हैं।

वह लिखती हैं कि यह इलाका पहले से ही उत्तर-पश्चिमी सीरिया के शरणार्थियों का घर था, जिनमें से कई लोग अस्थायी ठिकानों में रह रहे थे। कड़ाके की ठंड ने उन कठिन परिस्थितियों को और भयावह बना दिया था, जिनमें बचाव दल मलबे से लोगों को जिंदा निकालने की कोशिश कर रहे थे। मैं अपने दुख की गहराई को समझ नहीं पा रही थी। इस इलाके में मेरा न कोई परिवार था, न कोई दोस्त। लेकिन अपने बच्चों के लिए चीखते माता-पिता की आवाजें सुनना और दर्द से विकृत उनके चेहरे देखना मुझे भीतर से तोड़ रहा था। कुछ अनुभव जादुई हैं, कुछ आंखें खोल देने वाले। सिसिली में उनके पति को The Godfather वाले डॉन कोरलियोने की कुर्सी पर श्रद्धा से बैठने का मौका मिलता है। उनकी दो छोटी बेटियां Parco della Salute के एक असाधारण खेल क्षेत्र में खेलती हैं।

यही आखिरी टिप्पणी मुझे एहसास कराती है कि यह किताब आखिर हर किसी के लिए क्यों है। क्योंकि इसमें सिर्फ ट्रेनें और यात्राएं नहीं हैं। इसमें हमारी इंद्रियां हैं, प्रकृति है, दुनिया के तत्व हैं - और सबसे बढ़कर, जिंदगी है।

तो इसी भावना के साथ एक छोटी-सी क्विज।

नीचे दिए गए नामों को देखिए। इनमें ज्यादातर नदियां हैं और कुछ झीलें। अब इन्हें दुनिया के नक्शे पर खोजिए और पता लगाइए कि मोनिशा राजेश की ट्रेन यात्राएं किन-किन जगहों से होकर गुजरीं:

Olt. Prahova. Yantra. Danube. Iskar. Km°km°ekmece. Kizilirmak. µZalti Suyu. Karasu. Tornetrsk. Exe. Teign. lmond. Firth of Forth. Tay. Spey. Urie. Messina Strait. Spree. Vorma. Mjsa. Lmogen. Gaula. Nid. Ranfjorden. Saltfjorden. St Mary's. Potomac. Van Sciver. Kachimayu. Urubamba. Titicaca.

अब अपनी कल्पना का तीसरा नेत्र खोलिए।

शायद अगली बार जब कोई रात की ट्रेन आपकी खिड़की के बाहर से गुजरे, तो आप उसे सिर्फ एक ट्रेन न समझें।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

LBW

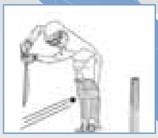

ज्ञान कम राय ज्यादा

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

क्या आपने कभी सोचा है कि पढ़े-लिखे भारतीय उन विषयों पर भी पूरे अधिकार के साथ बोलना क्यों पसंद करते हैं, जिनके बारे में उन्हें कुछ भी पता नहीं होता? जब ऐसा कोई मुद्दा सामने आता है - और ऐसा अक्सर होता है - तो वे बस यह क्यों नहीं कह देते, माफ कीजिए, यह तकनीकी विषय है और मुझे इसके बारे में कुछ पता नहीं है, इसलिए मैं चुप रहूंगा? क्या इंटरनेट के आने के बाद यह प्रवृत्ति और बढ़ गई है? और अब, एआई और सोशल मीडिया के दौर में, क्या यह समस्या और गंभीर हो गई है? शायद ही कोई इस बात से असहमत होगा कि आज पहले से कहीं ज्यादा लोग पहले से कहीं ज्यादा बकवास करते हैं।

अक्सर ऐसे लोग दिखाई देते हैं जो उन तमाम मुद्दों पर अपनी राय देते रहते हैं, जिनके लिए काफी विशेषज्ञता की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए, संविधान। लोग उसके बारे में बिना उसकी बुनियादी बातें जाने घंटों बोलते रहते हैं। एनजीओ से जुड़े कार्यकर्ता तो इसमें खासे माहिर हैं।

स्वास्थ्य और चिकित्सा भी इसका एक उदाहरण हैं। मेरी 82 वर्षीय बहन का इरादा बिल्कुल नेक है, लेकिन उन्हें चिकित्सा या मानव शरीर की बनावट की जरा भी जानकारी नहीं है। फिर भी वह नियमित रूप से मुझे मेरी सेहत पर लंबे-लंबे व्याख्यान देती हैं और दवाइयां तक सुझाती हैं। अच्छी बात यह है कि ये दवाइयां ज्यादातर होम्योपैथिक होती हैं।

जब भी मैंने उन्हें होम्योपैथी और शेयर बाजार में यह प्रयोग बंद करने को कहा, वे मुझे ही मूर्ख बताती थीं। खैर, अब उन्होंने शेयर बाजार में हाथ आजमाना बंद कर दिया है।

मैं ऐसे और लोगों को भी जानता हूं जो सांख्यिकी और इकोनोमेट्रिक्स जैसे विषयों पर बड़े आत्मविश्वास से बोलते हैं, जबकि इन क्षेत्रों में उनकी विशेषज्ञता शून्य है। बिल्कुल शून्य।

एक बार किसी औपचारिक डिनर के दौरान मैंने एक महिला को बताया कि मैं पत्रकार हूं। इसके बाद उन्होंने मुझे काफी देर तक, कुछ खीझ भरी आवाज में, यह समझाया कि पत्रकारों को अपना काम कैसे करना चाहिए। मैंने उनसे पूछा कि वह क्या करती हैं। उनका जवाब था, ''कुछ नहीं। मैं एक राजनयिक की पत्नी हूं।'' मुझे पूरा यकीन है कि वह अपने पति को भी उनका काम कैसे करना है, यह बताती होंगी। उनके पति एक बेहद वरिष्ठ पद से सेवानिवृत्त हुए थे।

खेलों में भी यही होता है, खासकर क्रिकेट में। पुरुष, महिलाएं और यहां तक कि बच्चे भी खुद को क्रिकेट का पूरा विशेषज्ञ समझने लगे हैं, जबकि उन्होंने टेनिस बॉल और वॉशिंग बोर्ड से गली में क्रिकेट खेलने के अलावा शायद ही कभी यह खेल खेला हो। सुनील गावस्कर ने कई साल पहले एक बेहद परेशान करने वाले पत्रकार से पूछकर इस बात को बहुत अच्छी तरह समझाया था, आपने कितने शतक बनाए हैं? गावस्कर ने खुद 29 शतक बनाए हैं।

दिलचस्प बात यह है कि जब भारत जीतता है तो कोई खास टिप्पणी नहीं होती। लेकिन जैसे ही भारत हारता है, इन विशेषज्ञों की पूरी धारा बहने लगती है। और जब विरोधी टीम जीतती है, तब उसके प्रदर्शन पर भी कोई खास चर्चा नहीं होती। किसी को उससे मतलब नहीं होता।

एक विश्वप्रसिद्ध अर्थशास्त्री ने भी एक बार अपनी झुंझलाहट जाहिर करते हुए पूछा था, ऐसा क्यों है कि हर कोई आर्थिक नीतियों पर टिप्पणी करने के लिए खुद को स्वतंत्र समझता है, लेकिन कोई विमान की डिजाइन पर टिप्पणी नहीं करता? और यही इस पूरे मामले की असली बात है। अर्थशास्त्र एक बेहद विशेषज्ञता वाला विषय है, जिसमें काफी तकनीकी ज्ञान की जरूरत होती है। फिर भी इस पर बोलने के लिए जैसे किसी को किसी योग्यता की जरूरत नहीं है - हर कोई अपनी राय देने के लिए स्वतंत्र है।

दिवंगत इतालवी उपन्यासकार अम्बर्टो इको ने एक बार सोशल मीडिया के बारे में कहा था:

सोशल मीडिया ने लाखों मूर्खों को बोलने का अधिकार दे दिया है। पहले वे एक गिलास शराब पीने के बाद सिर्फ बार में अपनी बातें कहते थे और इससे समाज को कोई नुकसान नहीं होता था... लेकिन अब उन्हें नोबेल पुरस्कार विजेता जितना ही बोलने का अधिकार मिल गया है। यह मूर्खों का आक्रमण है। ■

Rotary
Zones 4,5,6 & 7
AIM HIGH
Sri Lanka
ROTARY INSTITUTE 2026
AIM HIGH
Sri Lanka
ROTARY INSTITUTE 2026
18-20 DECEMBER
CITY OF DREAMS, COLOMBO
Yinka Babalola
Rotary International President
2026-2027
Muruganandam M. (MMM)
RI Vice President & Convenor
K.P. Nagesh (KPN)
RI Director & Co-Convenor
Gowri Rajan
Institute Chair
A.S. Venkatesh
TRF Trustee
www.rotaryinstitute2026srilanka.com

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹50
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26